भूमिका

इस पुस्तक के लेखक अल्डुअस हक्सले पश्चिम के उन मेधावियों में से हैं जो अपने देश-काल की मति-गति के अंग होकर भी उसके प्रति निसंग होकर विचार कर सकते हैं। उस विचार ने उन्हें पश्चिम की वर्तमान सभ्यता से घोर असहमत बना दिया है। असहमति वह विद्रोह तक आ पहुँची है। अगर उसी राह चलते चला गया तो जो परिणाम अवश्यंभावी है, उसकी कल्पना की विभीषिका उन्हें मथे डाल रही है। उसी मन्थन का फल यह पुस्तक है।

पुस्तक भयंकर है, और ऐसा जान-बूझ कर है। मूल पुस्तक की पूरी भयंकरता हिन्दी में उतर कर पाठक तक नहीं पहुंच सकती। किसी अनुवादक के लिए यह सम्भव नहीं है। प्रस्तुत अनुवाद लगभग उतना अच्छा हुआ है, जितना हो सकता है। अनुवादक का हिन्दी पर अच्छा अधिकार है, उतना ही शायद अंग्रेज़ी पर। वे कालिज में अंग्रेज़ी के अध्यापक हैं। पुस्तक के मूलभाव को पकड़ने और पाठक तक पहुँचाने में उन्होंने सावधानी बरती है। लेकिन जो भीषण व्यंग मूल पुस्तक मे यहां से वहां तक व्याप्त है वह पश्चिम के साम्प्रतिक जीवनवर्तन और ज्ञान-विज्ञान के विधि-विधान के साथ इतना अधिक घनिष्ट है कि माध्यम बदलने पर उसका प्रत्यक्षी-करण असंभवप्राय ही हो जाता है।

वर्तमान की आलोचना की सुविधा के लिए लेखक ने अब से कोई डेढ़ सौ वर्ष आगे की कल्पना पर पुस्तक को बांधा है। सभ्यता तब तक एटमबम के तीसरे महायुद्ध के संहार से तहस-नहस हो चुकी है। उसकी जड़ों के अवशिष्ट से एक उन्मत्त बर्बरता उग बैठी है।

उस बर्बर राज्य का एक धर्माधिकारी कहता है :—We have good reasons for believing as we do. Ours, my dear sir, is a rational and realistic faith. प्रचलित बुद्धिवाद और यथार्थवाद के प्रति यह कितना तीखा व्यंग है। आगे वही व्यक्ति कहता है: "इतिहास का सार जो मैं समझता हूं, यह है—आदमी प्रकृति के विरोध में खड़ा हुआ। अहंता से जगत मर्यादा को उसने चुनौती दी। असत् ने सत् को ललकारा। लाखों बरस तक युद्ध मे किसी की जीत न दीखी, कि एकाएक तीन सदी पहले पासा एक तरफ झुका और तरक्की उसी तरफ होती गई।" संकेत स्पष्ट है कि लेखक आज के युग को असत् की—शैतानियत की—प्रगति का युग मानता है। और आगे वही धर्माधिकारी कहता है कि, "उस दूरदर्शी (शैतान) ने औद्योगिक क्रान्ति के आरम्भ में ही यह देख लिया था कि आदमी मशीन की उन्नति से इतना दम्भी हो जायगा कि यथार्थ के धरातल पर उसके पांव भी नहीं पड़ेंगे। ठीक यही हुआ। मशीन के गुलाम ने अपने को बधाई दी कि उसने प्रकृति को जीत लिया......मूर्खता और दुष्टता के साथ इस क्रीड़ा को उसने नाम दिया उन्नति......अकेले आदमी के दिमाग़ का काम यह नहीं हो सकता था, शैतान का इसमें सहयोग था... दो बडे ख़्याल उस हमारे भगवान (शैतान) ने आदमी के दिमाग़ में डाल दिये—एक उन्नति, दूसरा राष्ट्रवाद। उन्नति, कि कैसे तुम बिना दिये पा सकते हो; और राष्ट्रवाद, कि तुम अपने देवता, राष्ट्र, के नीचे इकट्ठे होकर जो सितम ढाओ सब धर्म है.. ...साफ है कि इनमें हरेक सिद्धान्त घातक है, फिर भी समूची सभ्य मानवता ने उन्हें अपनाया। क्यों? किसके इशारे से? किसके बहकाने से? उत्तर एक ही है, हमारे भगवान शैतान के।"

वर्तमान पाश्चात्य सभ्यता के प्रति यह आक्रोश पुस्तक की जान है। मैंने पहले जब पुस्तक पढ़ी थी तो विशेष रुचिकर नहीं

हुई थी। पश्चिम की सभ्यता में क्षुब्ध होने का कारण मेरे पास नहीं है। उस सम्बन्ध में हक्सले महोदय से मतभेद की मेरे लिये आवश्यकता नहीं है। लेकिन शायद उसकी भर्त्सना मे इतना कठोर होने का अधिकार हक्सले महोदय इस कारण अपना मान सकते हैं कि वह सभ्यता उनके लिए आत्मीय है। उस भर्त्सना में अनुकम्पा का स्वर नही है। वह प्रसाद भी इस पुस्तक की शैली में नहीं है जो श्रद्धा और निष्ठा में से प्राप्त हो सके। जान पडता है कि पश्चिम की ओर से घोर निराशा ने जब कि उन्हें अवसन्न कर दिया है तब अभी तक प्रसन्न करने के लिए कोई नई श्रद्धा उन्हे नहीं प्राप्त हो सकी है।

डा० पूल पुस्तक के अन्त मे इस नास्तिक विभीषिका से बच कर एक मुक्त आभामय और आशाप्रद भविष्य की ओर चलते दिखाये गये हैं। क्या कोई सकर्मक श्रद्धा भी डा० पूल के पास है? पुस्तक में इसका कोई आभास नहीं है। इसके अभाव में, सन्देह हो सकता है, कि वह निरा एक पलायन ही है, समाधान नहीं है।

लेखक को आशा की किरण यदि प्राप्त होती है तो किस ओर से, यह इस तथ्य से प्रकट हो सकता है कि पुस्तक गांधी के नाम और स्मरण से आरम्भ होती है। जान पडता है गांधी की मृत्यु ने ही पुस्तक को जन्म दिया है।

पुस्तक उतने चाव से तो शायद न पढी जा सके लेकिन निश्चय ही उन सब के लिए यह अतीव उपयोगी होगी जो धैर्य और मनोयोगपूर्वक उसे पढने का कष्ट उठायेंगे।

७/३६, दरियागंज
दिल्ली।

जैनेन्द्र कुमार

१-७-५०

आमुख

प्रस्तुत उपन्यास अँग्रेजी के प्रसिद्ध लेखक हक्सले की नवीन कृति Ape and Essence का अनुवाद है। हक्सले के पास एक विचारक की अनुभूति, एक उपन्यासकार की मेधा और एक जागरूक व्यक्ति की प्रतिभा है। आधुनिक जीवन के छल और विक्षोभ को उन्होंने अपनी रचनाओं में तीक्ष्ण अभिव्यक्ति दी है। उनके उपन्यास घटनाओं के वर्णन या पात्रों के विश्लेषण नहीं, मूलतः वे विचारों के मंथन हैं। आधुनिक सभ्यता के प्रति लेखक के व्यंग्य का सबसे उग्र रूप इस उपन्यास में मिलता है। सैक्स, धर्म, शासन, विज्ञान, कला, संस्कृति—जीवन का प्रत्येक रूप और स्तर—विकृति से घुन रहा है। मनुष्य के अन्दर का बर्बर पशु उसके सत्व को, उसकी मानवता को खाए जा रहा है और उससे त्राण की कोई आशा नहीं। ऐसा लगता है मानो जीवन एक छल है और सभ्यता मनुष्य के विनाश की विभीषिका। एक भीषण अनास्था उपन्यास के प्रत्येक स्वर से बोल रही है।

पश्चिम के बौद्धिक जीवन के उतार-चढाव की लगभग आधी सदी हक्सले (जन्म १८९४) के जीवन से सम्बद्ध है। आरम्भ से ही उनकी रचनाओं में नए युग की सामाजिक मर्यादाओं और नीति-मूल्यों के प्रति विफल असंतोष मिलता है। आगे चल कर यह असंतोष और भी घना हो गया है—कहीं-कहीं तो वह घोर अनास्था के रूप में फूट पड़ा है। लेखक यह अनुभव करता है कि मनुष्यता तेज़ी के साथ विनाश की ओर बढ़ रही है, अगर यही अवस्था रही तो कल क्या होगा, इसकी चिन्ता उसे अभिभूत कर रही है—इसी ओर इस उपन्यास में उन्होंने संकेत किया है।

हिन्दी साहित्य में जीवन के प्रति व्यंग्य की इतनी कटुता नहीं मिलती, कारण उसका सम्बन्ध जिस सभ्यता और संस्कृति से रहा,

है, वह मूलतः आस्तिक है और उसमें इतना कोलाहल नहीं। इस लिए अँग्रेजी उपन्यास में जो भीषण व्यंग्य है, उसे हिन्दी में नहीं उतारा जा सकता। फिर भी उसके स्वरूप से मैंने हिन्दी जनता को परिचित कराने का प्रयत्न किया है। वास्तव में यह पुस्तक एक विशेष बौद्धिक स्तर के पाठकों के लिए है जो इसकी व्यंजना को समझ सकें।

इस पुस्तक के अनुवाद की प्रेरणा मुझे रामजस कॉलेज के प्रिंसिपल श्री बंगालीभूषण गुप्ता से मिली। उन्होंने बड़े ध्यान और धैर्य से अनुवाद के अंशों को सुना है। उनके गम्भीर अध्ययन से मैंने पूरा लाभ उठाया है। उपन्यास के कई स्थलों और प्रसंगों को समझने में मुझे मेरे अध्यापक प्रो० जे० दोराव से भी बहुत सहायता मिली है। बाबू गुलाबराय और डा० सत्येन्द्र ने भी अनुवाद के कुछ अंश सुन कर मुझे प्रोत्साहन दिया है। मुझे हिन्दी सिखाने का श्रेय इन्हें है। जैनेन्द्रजी से मेरा कोई व्यक्तिगत परिचय नहीं था, पर बड़ी आत्मीयता के साथ उन्होंने इस पुस्तक की भूमिका लिखने का भार अपने ऊपर ले लिया। हिन्दी के उपन्यासकारों और गंभीर विचारकों में उनका विशिष्ट स्थान है। उनके पास जहाँ पात्रों के अन्तर में पैठ कर विचारों के संघर्ष और आत्मा के प्रपीड़न को व्यक्त करने की शक्ति है, वहाँ जीवन के अवरोध, विक्षोभ और नीति-मूल्यों के विश्लेषण करने की मेधा भी। अतः मेरी इच्छा थी कि हिन्दी का यह प्रमुख चिन्तनशील उपन्यासकार अंग्रेजी के इस प्रतिष्ठित लेखक पर अपने विचार प्रकट करे। इन सब व्यक्तियों के प्रति कृतज्ञता का प्रदर्शन वाचालता होगी, कारण, मेरा विश्वास है इनसे मुझे सदा साहित्यिक गति मिलती रहेगी।

रामजस कॉलेज
दिल्ली। } मोहनलाल

टैलिस

गाँधी-हत्याकाँड का दिन था। केलवरी[1] पर आमोद-प्रमोद के लिए निकले व्यक्तियों की रुचि पिकनिक की टोकरियों में अधिक थी। उन्हें इतना अवकाश कहाँ था कि ऐसी आए दिन की घटना के विशेष अर्थ को सोचते। ज्योतिष के आचार्य कुछ भी क्यों न कहें, टॉलेमी[2] का कथन ही पूर्ण सत्य था कि विश्व का केन्द्र यहाँ है, वहाँ नहीं। गाँधी मर गया तो क्या हुआ; स्टूडियो कॅमिशरी में अपने ऑफिस के

१—केलवरी अमेरिका के एक गाँव विशेष का नाम है। पर यह शब्द गूढ़ व्यञ्जनात्मक है—इससे उस स्थान का बोध होता है जहाँ क्राइस्ट को सूली पर लटकाया गया था।

२—टॉलेमी (Ptolemy) अलेग्ज़ेंड्रिया का एक विख्यात ज्योतिष-शास्त्र का आचार्य, जो ईसा की दूसरी शताब्दी में पैदा हुआ था। उसके अनुसार पृथ्वी स्थिर है, और अन्य ग्रह इसके चारो ओर परिक्रमा देते हैं। व्यञ्जना यह है कि मनुष्य एक स्वार्थी प्राणी है जिसकी दृष्टि केवल स्वयं पर केन्द्रित रहती है।

डेस्क पर झुका हुआ बॉब ब्रिग्स अपने ही विषय में बात करने में तल्लीन है।

"तुम तो मेरे सच्चे सहायक रहे हो," बॉब ने मुझे विश्वास दिलाया, और अपने जीवन-वृत्त के नवीन प्रकरण को सुनाने की तैयारी करने लगा।

मैं अच्छी तरह जानता था कि बॉब को मेरी सहायता वाँछित नहीं थी, और मुझ से भी अच्छी तरह वह स्वयं इसे जानता था। उसे अपने असंयमित जीवन से लगाव हो गया था, और बड़ी रुचि के साथ वह उसका बखान करता था। अपने जीवन की गन्दगी को उसने नाटकीय रूप दे रखा था, और स्वच्छन्दतावादी कवियों की कोटि में अपनी गणना करता था। बेडोज़ का आत्मघात, बॉयरन का विलासपूर्ण जीवन, कीट्स का फेनी ब्रॉन के प्रति आकर्षण, हेरियेट का शैली के लिए बलिदान—आख़िर यह सब क्या था? सारी घटनाएँ प्रेम-लोक की ओर ही तो प्रधावित हो रही थीं। बॉब अपने आपको किसी रोमैंटिक कवि से कम नहीं मानता था, यद्यपि उनके जीवन की व्यथा के दो मूल कारणों की ओर भूल कर भी उसका ध्यान नहीं गया। न तो उसके पास उन कवियों की सी मेधा थी, और न उतनी प्रबल यौन-क्षमता ही।

"प्रेम के उस छोर तक हम पहुँच चुके थे"—वह कह रहा था। उसके शब्दों में टीस थी। मुझे ऐसा अनुभव हुआ

कि चल-चित्र के लिए नाटक लिखने की अपेक्षा वह अभिनय अधिक सफलता के साथ कर सकता है।.. तो वह बता रहा था कि प्रेम के उस छोर तक पहुँचने पर उन्हें मार्टिन लूथर[1] की तरह अनुभूति होने लगी।

यह सब मेरी समझ से परे था। "मार्टिन लूथर की तरह ?"—मैंने साश्चर्य पूछा।

"तुम जानते ही हो, हम और आगे नहीं बढ़ सके। विवशता थी, हमें एकेपलको[2] जाना पड़ा।"

मैं सोचने लगा, गाँधी भी विवश था। उसने दमन का सामना अहिंसा से किया, जेल गया और गोली का शिकार हुआ।

"हम विमान में बैठे और एकेपलको पहुँचे"—बॉब अपने में व्यस्त था।

१—मार्टिन लूथर (१४८३-१५४६)—रोमन कैथलिक सम्प्रदाय के विरुद्ध इसने बगावत का झंडा खड़ा किया था। उस समय रोमन कैथलिक धर्म नाना प्रकार की रूढ़ियों से जर्जर हो रहा था और उनके मठ तपस्या और साधना के स्थान पर स्वार्थ और विलासता के केन्द्र हो चले थे। इस सम्प्रदाय के विरुद्ध आवाज़ उठाने के कारण लूथर के अनुयायी प्रोटेस्टेंट (विरोधी) कहलाने लगे।

२—एकेपलको (Acapulco)—प्रशान्त महासागर के तट पर मैक्सिको का बन्दरगाह।

"आखिर यही हुआ ?"—मैंने कहा।

"आखिर, आखिर से तुम्हारा क्या प्रयोजन है ?"—कुछ झुँझला कर वह बोला।

"आखिर एक लम्बे अर्से से तुम जानते थे कि इस लीला का क्या परिणाम होगा।" मैंने कहा।

बॉब कुछ परेशान था। मुझे वे सारे अवसर याद थे जब बॉब ने इस समस्या पर मेरे साथ बातें की थीं। उसके सामने एक ही प्रश्न रहा है—एलेन को जीवन-संगिनी के रूप में स्वीकार करना चाहिए या नहीं; दूसरे शब्दों में मरियम को तलाक़ दिया जाय अथवा नहीं ?

सच पूछा जाय तो मरियम दीर्घ काल से उसकी प्रेमिका रही है, पर यथार्थ यह भी है कि एलेन के प्रति उसका जो आकर्षण था वह परिणय-सूत्र के सहारे और भी तीव्र हो सकता था। यही वह निश्चय नहीं कर पाता था। दो वर्ष तक वह इसी द्विविधा में पड़ा रहा, और अगर उसकी चलती तो शायद कई वर्ष इसी तरह बीत जाते। प्रणय की मादक रङ्गीनियाँ उसे प्रिय थीं, विवाह के धरातल पर उतर कर अपने पौरुष की परीक्षा वह नहीं करना चाहता था। पर उस आदर्शवादी प्रेम के वायवी रूप से और बॉब की वाक्-पटुता से एलेन ऊब उठी।

बॉब कठिन परिस्थिति में था। प्रेम की विडम्बना से उसका अविच्छिन्न सम्बन्ध था, उसी तरह अटूट जैसे गाँधी का अहिंसा, जेल और अपनी मृत्यु से। पर बॉब के सारे सम्बन्ध सन्देह-जनक थे। इस घटना ने उसके सम्बन्ध-जाल को उधेड़ कर रख दिया। बॉब ने यद्यपि मुझे यह नहीं बताया कि एकेपलको पर उसके साथ क्या बीती, पर बात तो छिपी रहती नहीं। यह तो वह कहता था कि इधर कुछ दिनों से एलेन की भाव-भंगियों में बल पड़ गया है, उसके रङ्ग-ढङ्ग निराले हो गए हैं, और कई बार वह उस नए रईस के साथ घूमती हुई भी मिली है। सौभाग्यवश उस रईस का नाम इस समय मैं भूल रहा हूँ। जो भी हो, इन सब बातों से बॉब की दयनीय कहानी पर काफ़ी प्रकाश पड़ जाता है। इधर मरियम ने तलाक के प्रस्ताव को अस्वीकार ही नहीं किया, पर उसकी अनुपस्थिति का पूरा लाभ उठाते हुए उसकी सम्पत्ति के विपुल भाग को अपने नाम करवा लिया। एक रैंच[1], दो मोटरें, चार मकान और सारी सिक्योरिटी की वह अब अधिकारिणी थी। मुसीबत यह कि बॉब को इनकम-टैक्स के ३३ हज़ार डालर की लम्बी रक़म अदा करनी बाकी थी। जब उसने अपने स्टूडियो के मालिक से २५० डालर के साप्ताहिक भत्ते के सम्बन्ध में बात की, जिसका उसे आश्वासन दिलाया गया था, तो वहाँ

१—रैंच (Ranch)—विशाल चरागाह।

एक गहरी साँस खींच ली गई—अत्यन्त दीर्घ, अत्यन्त अर्थपूर्ण।

"क्या कहते हो लु?"—बॉब ने अपना प्रश्न दुहराया।

शब्दों को गम्भीरता के साथ तौल कर लु लुबलिन[1] ने उत्तर दिया—

"बॉब, इस समय तो इस स्टूडियो में क्राइस्ट को भी भत्ता नहीं मिल सकता!"

उसका स्वर मैत्रीपूर्ण था, पर बॉब जब गर्म होने लगा, तो डेस्क पर जोर से हाथ पटक कर लु को कहना ही पड़ा कि बॉब का आचरण अमेरिकन शिष्टता का अतिक्रमण कर रहा है। प्रसंग यहीं रुक गया।

यह सब बॉब ने ही बताया। मैं सोचने लगा, इस प्रसंग में एक मार्मिक चित्र अंकित करने के लिए पर्याप्त सामग्री है। लबलिन के सामने क्राइस्ट खड़ा है—प्रति सप्ताह २५० डालर के लिए वह अनुनय-विनय कर रहा है और उसकी कोई नहीं सुनता। प्रसिद्ध चित्रकार रेम्ब्राँ[2] की तूलिका के योग्य प्रसंग था—एक ओर आय-कर के गहन अन्धकार में सिमटता हुआ क्राइस्ट, और दूसरी ओर सुनहले प्रकाश में, हीरे-मोती की

१—लु लबलिन (Lou Lublin)—अमेरिका का प्रसिद्ध फिल्म-उत्पादक।

२—रेम्ब्राँ (Rembrandt)—(१६०६-६६) हॉलैंड का विश्व-विख्यात चित्रकार।

आभा से युक्त मुस्कराता हुआ लबलिन, अपनी विजय-गरिमा से प्रसन्न।

इसी प्रसंग का फिर मैंने 'भूगोल' की दृष्टि से रूपान्तर किया। एक स्टूडियो का विशद चित्र है, दिग्दर्शन की सारी कलाओं से सम्पन्न तीस लाख डालर की लागत का प्रदर्शन। अपनी वैयक्तिक विशेषताओं को लिए हुए चित्र-पट पर घूमती हुई लगभग दो-तीन हजार आकृतियाँ हैं, और नीचे तल में दाहिने हाथ की ओर एक शलभ के आकार का लबलिन अपने से भी क्षुद्र क्राइस्ट का तिरस्कार कर रहा है।

"मेरे मस्तिष्क में एक नितांत मौलिक और अनोखा विचार घूम रहा है"—बॉब ने उस स्मित उत्साह के साथ कहा जो निराश व्यक्ति के पास आत्म-घात के अतिरिक्त एक-मात्र आधार रह जाता है। "मेरा एजेन्ट तो इस सूझ के पीछे पागल है। वह समझता है, पचास-साठ हजार तो इस सूझ के आसानी से उठ जावेंगे।"

वह अपनी कहता गया।

मेरे सामने क्राइस्ट और लबलिन घूम रहे थे। मैंने उस चित्र की कल्पना की जिसे पियरो[1] अङ्कित करता। स्पष्ट, शुभ्र, ज्योतिर्मय चित्र; आकार-प्रकार में औचित्य, रङ्गों में संतुलन; स्तब्ध, शान्त आकृतियाँ। मिश्र देश के राजाओं की तरह शीर्ष-

१—पियरो (Piero)—प्रसिद्ध चित्रकार।

वस्त्र धारण किए हुए लबलिन और उसके सहायक प्रदर्शक। वे उन्नत, सूच्याकार शीर्ष-वस्त्र जो पियरो के युग में मनुष्य के शरीर की टेढ़ी-मेढ़ी, घन-रेखागणित की लकीरों सी, रचना पर प्रकाश डालते हों, और साथ ही पूर्व की विलक्षणता की ओर संकेत। सुकुमार रेशमी-परिधान-रत्न-जटित. और तह में से झाँकते हुए गदबदे अङ्ग-प्रत्यङ्ग। मानों सारे चित्र में व्याप रही हो वह महान् सत्ता, प्लेटो[1] के ईश्वर की तरह, अनन्त कोलाहल और अन्धकार को कला के सौन्दर्य में सिमटने का प्रयास करती हुई सी।

टीमियस (Timaeus) का विराट् तर्क उस अत्याचार की ओर अग्रसर होता है जिसे रिपब्लिक (Republic) में शासन के आदर्श रूप में प्रस्तुत किया गया है। राजनीति के क्षेत्र में अनुमेय और प्रमेय का पर्यायवाची शब्द एक सुगठित अनुशासित सेना है—कविता और चित्र के एक डिक्टेटर का सैनिक शासन। एक मॉक्र्सवादी भी अपने को वैज्ञानिक मानता है। एक फॉसिस्ट उसकी मान्यता में योग देता है, वह

१—प्लेटो (Plato) (४२६-३४७ ई० पू०)—प्रसिद्ध ग्रीक दार्शनिक और तत्त्ववेत्ता आचार्य। सुकरात का शिष्य व अरस्तू का गुरु। अपनी पुस्तको डायलॉग्स (Dialogues) और रिपब्लिक (Republic) के कारण प्रसिद्ध। टीमियस (Timaeus) में उसके वे सम्वाद संकलित हैं जिनकी पृष्ठ-भूमि एथेंस का विख्यात पार्थेनान मन्दिर है।

अपने को नवीन पुराणों का वैज्ञानिक कवि समझता है। दोनों को अधिकार है कि अपनी धारणाओं को मानें, चूँकि मनुष्य की स्थिति-परिस्थिति का वे नए मूल्यों में अध्ययन करना चाहते हैं। अपने प्रयोजन के लिए जो कुछ वे असंगत, अनर्गल और अवांछित समझते हैं, काट-छाँट कर अलग कर देते हैं। जो कुछ उनके मूल्यों की कसौटी पर खरा नहीं उतरता, वह हेय और वर्जित है, रद्दी की टोकरी में फेंक दिए जाने योग्य। इस नाप-जोख में वे सफल कलाकार, गम्भीर विचारक और कुशल वैज्ञानिक की तरह अपनी बुद्धि का प्रदर्शन करते हैं। उस प्रद-र्शन का परिणाम होता है जेलों का भरना, राजनीतिक नास्तिकों का मौत के मुँह में ढकेला जाना, व्यक्ति की इच्छाओं व अधिकारों का कुचला जाना, और गाँधियों की हत्या। हज़ारों शिक्षक और असंख्य ब्रॉडकास्टर उनकी सत्ता की अक्षु-ण्णता के गीत गाते हैं—इसीलिए वे हैं।

बॉब कह रहा था—"कोई कारण नहीं कि मूवी एक कला न बन सके। यह तो इस व्यावसायिक नीति······"

उसकी वाणी में विक्षोभ उमड़ पड़ा—उस सामान्य कला-कार का सा जिसे नाचना कम आता है, पर जिसे आँगन की टेढ़ाई खल उठती है। तीव्र भर्त्सना के साथ उसने व्यावसा-यिक नीति पर चोट की।

"क्या तुम सोचते हो गाँधी को कला में दिलचस्पी थी ?" मैंने बॉब को कुरेदा।

"गाँधी को ? नहीं तो।"

"शायद तुम ठीक कहते हो।" मैंने स्वीकृति दी—"गाँधी को न कला में दिलचस्पी थी, न विज्ञान में और इसीलिये हमने उसे मार डाला।"

"हमने ?"

"हाँ, हमने, जो प्रखर और प्रवीण बनते हैं, जो प्रगतिशील हैं और विकास में विश्वास करते हैं। और गाँधी—वह तो प्रतिक्रियाशील था, केवल मनुष्य में विश्वास करता था, उन घिनौने, गन्दे व्यक्तियों में जो गाँव-गाँव में बिखरे पड़े हैं, जो अपनी ही करते हैं, ब्रह्म में विश्वास रखते हैं, आत्मा को पूजते हैं। यही सब तो हमें असह्य था। कोई आश्चर्य नहीं जो हमने उसे उस पार पहुँचा दिया।"

कहने को तो यह सब मैं कह गया, पर ऐसा लग रहा था कि सब सत्य नहीं। गाँधी के जीवन में विरोध था, असंगति थी, समर्पण था। इस व्यक्ति की मनुष्य में आस्था थी, पर राष्ट्रीयता की उन्मत्त सामूहिक धारा के साथ वह हो लिया। राष्ट्र-निर्माण के परा-मानवी स्वप्न थे उसके, पर क्षुद्र संस्थाओं की दलदल में वह फँस-सा गया। उसने सोचा, वह लोगों का पागलपन दूर कर सकेगा, प्रयत्न करेगा, राष्ट्र की आसुरी वृत्ति

को मानवी बनावेगा। पर राजनीतिक और राष्ट्रीय मदान्धता को दूर करना उसके बूते से बाहर थे। संस्था के अन्दर से, उसके केन्द्र से, रग-रग में घुसे इस ज़हर को दूर करना मुश्किल है, बाहर रह कर नश्तर लगाया जा सकता है। एक मशीन है जो रात-दिन पागलपन का ढेर लगा रही है। अगर एक आदमी इस मशीन का पुर्जा बनता है, तो दो में से एक होकर रहेगा—या तो उस व्यक्ति का जीवन मशीन की रट में पड़ जायगा, उसकी सत्ता नष्ट। अथवा अगर उसने अपनी इकाई को बचाना चाहा तो जब तक मशीन उससे काम ले सकती है लेगी और फिर उसको दुत्कार देगी या कुचल देगी।

"हाँ, तो मैं उसी घृणित व्यावसायिक नीति के बारे में कह रहा था। एक उदाहरण दूँ......।" बॉब तन्मय था।

मैं खिन्न था; सोच रहा था, व्यवस्था के स्वप्न अत्याचार को जन्म देते हैं, सौन्दर्य के स्वप्न क्रूरता और पाशविकता को। अथेना[1] कला की देवी है और वही विकराल भवानी भी, देव-सेना की रण-चण्डी। हमने गाँधी को मार डाला चूँकि कुछ समय तो उसने राजनीति के साथ क्रीड़ा की और फिर हमारी दृष्टि से राष्ट्रीय व्यवस्था के स्वप्न देखने उसने अस्वीकार कर दिए। समाज और अर्थ-विधान की जो सीमाएँ हम स्थिर करना चाहते थे वे उसे मंजूर नहीं थीं। हमने उसे मार डाला

---

१. अथेना (Athena) ग्रीक देवी, कला की अधिष्ठात्री।

चूँकि वह चाहता था कि हम अपना हृदय टटोलें और जनता की वास्तविक स्थिति को समझें।

आज सुबह अखबारों के मोटे-मोटे अक्षरों में जो कुछ मैंने पढ़ा, मेरे लिये वह सत्य था। जो घटना उनमें संचित थी वह भविष्य के लिये सन्देश थी। शान्ति की आवाज़ लगाकर शान्ति की आवाज़ को कुचल दिया गया था। एक चेतावनी थी कि हम किस ओर बढ़ रहे हैं। एक ही मार्ग है हमारे लिए, अन्य चेष्टायें युद्ध की बर्बरता के क्रूर साधन।

हार कर बॉब बोला—"अच्छा, कॉफी पी चुके तो अब चला जाय।"

सूर्य की रोशनी में हम बाहर निकल आए। बॉब ने धीरे से मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर उसे दबा दिया।

"तुम तो मेरे सच्चे सहायक रहे हो।" उसने मुझे फिर विश्वास दिलाया।

"काश, मैं इसमें विश्वास कर पाता।"

"किन्तु मैं तो सच कह रहा हूं।"

शायद यह सच भी हो, कारण एक सहृदय को अपने सामने देखकर बॉब का रोमैंटिक हृदय हल्का हो जाता है, उन्मुक्त, तरङ्गित।

कुछ दूर तक इसी नीरवता में हम आगे बढ़ते गए। कई बंगले पार हो गए। सामने देखा, एक बंगले पर काँसे के प्लेक

पर लिखा था—"लबलिन कला-मन्दिर।"

सहसा ठिठके।

"तुम्हारे वेतन की तरक्की का क्या हुआ? अन्दर चलकर एक बार फिर क्यों न कोशिश कर ली जाय?" मैंने कहा।

बॉब के होठ हिले, जैसे एक क्षीण मुस्कराहट कॉप गई हो। जब मुँह खुला, गला भारी था।

"गॉधी के साथ बहुत बुरा हुआ। मैं समझता हूँ उसकी महानता का रहस्य अपने लिये कुछ भी नहीं चाहना था।"

"हाँ, यह भी एक कारण है।"

"मैं चाहता हूँ मेरी इच्छाएँ भी कम हो सकें।"

"ठीक।"

"वांछित वस्तु के न मिलने पर ऐसा लगता है जैसे सब कुछ अप्रत्याशित हो।"

बॉब ने एक सॉस ली और सन्नाटे में खो गया। सचमुच वह एकेपलको के विषय में निमग्न था, उस भयावहता का बोध कर रहा था जब कि एक दीर्घ रोग सहसा मर्मान्तक हो उठता है, जब कि अंगूरी कल्पना के लिये मॉसल रूप धारण करना अनिवार्य हो जाता है।

सड़क पर बंगलों की पांति-सी बिछी थी। घूमते हुए पार्क तक पहुँचे और उसको पार कर दूसरी ओर। पास से एक ट्रैक्टर निकल गया, ट्रेलर को खींचता हुआ जिस पर

तेरहवीं शताब्दी के किसी इटालियन गिर्जे के पश्चिमी द्वार का निचला भाग पड़ा हुआ था।

"यह 'सिएना की केथेरिन' के लिए है।" बॉब बोला।

"यह क्या हुआ ?"

"हेडा बॉडी[1] का नया पिक्चर। दो वर्ष तक उस पुस्तक के साथ मैंने सर खपाया था। फिर स्ट्रीखर[2] ने उसे देखा और बाद में ओ'तूल-मेनेंदेज-बोगुस्लावस्की की पार्टी ने। किसी मतलब की प्रति नहीं।"

एक दूसरा ट्रेलर भी तेजी से निकल गया। इस पर उस गिर्जे के दरवाजे का ऊपरी हिस्सा रखा हुआ था। निकोलो पिसानो[3] द्वारा निर्मित धर्म-मञ्च भी वहाँ था।

---

१. हेडा बाडी (Hedda Boddy)—वास्तविक नाम है हेडी लेमार (Heddy Lemar) यह अमेरिका की प्रसिद्ध अभिनेत्री है, मादक अभिनय-कला में अत्यन्त कुशल।

२. स्ट्रीखर (Streicher)—जर्मन नाम।
ओ' तूल-मेनेदेज-बोगुस्लावस्की (O' Toole-Menendez-Boguslavsky)—तीन नामों का समास—प्रथम आयरिश, दूसरा स्पेनिश, तीसरा रशियन। ये नाम किसी व्यक्ति-विशेष से अपना सम्बन्ध नहीं रखते। व्यञ्जना यह है कि अमेरिका का फिल्म-व्यापार विदेशियों के हाथ मे जाने लगा है।

३. निकोलो पिसानो (Niccolo Pisano)—रेनेसाँस (Renaissance) युग का रोमन कलाकार, मूर्तिकला का मर्मज्ञ और स्वयं एक संगतराश।

"जब हम ज़रा भी विचार करते हैं तो ऐसा लगता है मानो गाँधी में और उसमें काफी समानता थी।" मैंने कहा।

"किसमें, गाँधी और हेडा में ?"

"नहीं, मैं केथेरीन की कह रहा हूँ।"

"अच्छा, मैंने तो सोचा था तुम लंगोटी की बात कर रहे हो।"

"मैं तो राजनीति के सन्तों की कह रहा हूँ। वह मनुष्य की बर्बरता से इसीलिए बच गई चूँकि थोड़ी अवस्था में ही उसने मृत्यु के साथ समझौता कर लिया। इतना समय ही नहीं मिला कि उसकी राजनीति अपनी चाल दिखलाती।... तो क्या तुम लोग सारी प्रति को देखते हो ?"

बॉब ने सिर हिला दिया।

वह बोला—"दुख तो इस बात का है कि एक ओर जनता अपने स्टार को सफल देखना चाहती है, दूसरी ओर वह उसे ऐसी परिस्थिति में भी नहीं डालना चाहती जहाँ विवाद हो। गिर्जे के कुचक्र और उसकी गुटबन्दी पर तुम कुछ सुनना नहीं चाहते। वह अनुदार होगा, वहाँ धार्मिक सहिष्णुता नहीं होगी। हम तो अपने विवाद से बचाए रखना चाहते हैं। इसी पिक्चर में देखो न, नायिका लड़के से अपने पत्र लिखवाती है। लड़का उसके पीछे पागल है और उसके प्रेम को संज्ञा दी जाती है अपार्थिव और आध्यात्मिक प्रेम की।

उसकी मृत्यु के बाद लड़का मठ में जाता है और उसकी तसवीर को पूजता है, और फिर वहीं एक अन्य पात्र है जो उससे प्रेम करता है। उसके पत्रों से वह प्रकट है। यही सब अभिनय किया जाता है चूँकि हम इसे चाहते हैं। "हम्फ्रे[1] से उन्हें अब भी आशा है।"

एक कर्कश आवाज़ ने हमें चौंका दिया।

बॉब ने मेरा हाथ पकड़ कर अपनी ओर खींच लिया। आँगन की ओर से एक भीमकाय ट्रक चला आ रहा था।

"जिधर जाना है उधर आप लोग क्यों नहीं देखते?" ड्राइवर चिल्ला रहा था।

"तमीज़ नहीं", बॉब को क्रोध आ रहा था। मेरी ओर मुड़कर बोला, "जानते हो क्या लाद रखा है? अभिनय के लिए आई हुई हस्तलिखित प्रतिलिपियाँ हैं। इनका अग्नि-संस्कार होने वाला है। दाह-कुण्ड ही इनकी जगह है—एक मिलियन डालर का साहित्य अभी स्वाहा हो जायगा।"

उसने ज़ोर से कहकहा लगाया। अति-नाटकीय व्यंग्य के साथ उसका अट्टहास फूट पड़ा।

---

१. हम्फ्रे (Humphrey)—पूरा नाम हम्फ्रे बोगार्ट। अमेरिका का प्रसिद्ध अभिनेता—जवानी और जोश, प्रणय और रंगीनियों का अभिनय करने में कुशल।

सड़क पर कुछ दूर, करीब बीस गज़ आगे, ट्रूक झटके से दाईं ओर मुड़ा। चाल तेज़ थी। प्रायः आध दर्जन प्रतियाँ, जो ऊपर ही पड़ी थीं, खिसक कर सड़क पर बिखर पड़ीं। साक्षात् विनाश के मुख से मानों उनका उद्धार हो गया, मानों इंक्विज़िशन[1] के वन्दियों का त्राण हो गया।

"इस गधे को ट्रूक चलाने की भी तमीज़ नहीं। किसी दिन किसी के प्राण लेकर मानेगा।" बॉब का रोष अभी मिटा नहीं था।

"लेकिन देखे तो सही इनमें क्या लिखा हुआ है।" पास ही पड़ी एक प्रति को मैंने उठा लिया।

'A Miss is as good as a Male' अलबर्टाइन क्रेन्स द्वारा रचित चल-चित्र के लिये एक नाटक था। बॉब इसके बारे में जानता था—दूषित नाटक, गन्दा।

"अच्छा 'अमन्दा' के बारे में क्या कहते हो?" मैंने पन्ने पलटते हुए कहा—"इसे तो संगीतात्मक होना चाहिये। सुनो—

---

१. इंक्विज़िशन (Inquisition)—रोमन कैथलिकों का धार्मिक न्यायालय। पोप की अध्यक्षता मे तेरहवीं शताब्दी में इसकी शक्ति बहुत बढ़ गई थी। जो लोग ईश्वर की सत्ता का विरोध करते थे और अधार्मिक थे, उनके साथ बड़ी निर्ममता के साथ यह न्यायालय पेश आता था।

भूखी है अमिलिया, उसे भोजन चाहिये,

भूखी है अमन्दा, उसे पुरुष चाहिये।

वॉव ने आगे पढ़ने नहीं दिया।

"जाने भी दो। युद्ध में इसने साढ़े चार मिलियन कमाए थे।"

मैंने उसे नीचे डाल दिया। सड़क पर बिखरी दूसरी प्रति को, पंख फैलाए पत्ती की तरह जो पड़ी हुई थी, मैंने उठा लिया। इसकी जिल्द हरी थी, स्टूडियो की प्रचलित गुलाबी नहीं।

क़ब्र पर किसी ने अपने हाथों से सुन्दर अक्षर जड़ दिये थे—"पशु और मानव।"

"पशु और मानव"—वॉव ने साश्चर्य मेरी ओर देखा।

मुख-पृष्ठ पर लिखा था—"पशु और मानव"

(एक मौलिक कृति)

रचियता— विलियम टैलिस,

कॉटनवुड रैंच, मर्सिया (कैलिफोर्निया)

और नीचे किसी ने पैंसिल से लिखा था—"अस्वीकृति की सूचना ११-६-४७ को भेजी गई। प्रेषक की ओर से पता लिखा लिफाफा नहीं मिला। दाह-कुण्ड के लिये— ।" इस सूचना के नीचे दो मोटी रेखाएँ अङ्कित हो रही थीं।

"उनके पास ऐसी हज़ारों प्रतियाँ आती हैं।" वॉव ने कहा।

मैंने उसे इधर-उधर से पढ़ना शुरू कर दिया। "यह तो कवित्वमय है।"

वॉव ने नाक-भौंह सिकोड़ ली।

"यह सर्वथा स्पष्ट है", मैंने पढ़ना शुरू किया।

यह सर्वथा स्पष्ट है—
बच्चा-बच्चा इससे विज्ञ—
साधन मानवी, लक्ष्य पशु निर्दिष्ट है।
विलास में मनुष्य की प्रवृत्ति है।
पोप की संतुष्टि, प्रजा की रुचि—
वासना की तृप्ति यही इष्ट है।
बुद्धि की गरिमा का यही व्यापार,
दर्शन शास्त्र की यही आकांक्षा,
हेगेल[1] के तत्त्वों का यही सार,
चिकित्सा-शास्त्र का यही ध्येय,
कामोद्दीपन उसे साध्य है।
काव्य के मद में यही ऊष्मा।
यंत्रों से चालित, समुद्र के उस पार
अनाथालय पर यान की दृष्टि है—
नारी मनुज की प्राप्ति का केन्द्र है।

---

१. हेगेल (१७७०–१८३१)–प्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक जिसके अनुसार जो यथार्थ है वही बुद्धि-संगत और जो बुद्धि-संगत है वही यथार्थ।

हम दोनों चुप थे, प्रश्नसूचक दृष्टि से एक-दूसरे की ओर देखा।

"क्या सोचा इसके बारे में?" बॉब ने पूछा।

मैंने अपना सिर हिला दिया। सचमुच, मैं कहता क्या?

"सारी पुस्तक एक बार मैं देख लेना चाहता हूँ। इसे फैंको मत।"

हम लोग बातें करते हुए आगे बढ़े, आखिरी मोड़ पर मुड़े। खजूर के पेड़ों के झुरमुट में वहाँ एक फ्रांससिसिकन कॉन्वेंट है—लेखकों का अड्डा।

हम लोग अन्दर पहुँचे। बॉब अपने आप कह रहा था—टैलिस · विलियम टैलिस का नाम तो कभी सुना नहीं। कौन हो सकता है यह · और यह मर्सिया कहाँ है?"

अगले रविवार को इन प्रश्नों का उत्तर मिल गया। सिद्धान्त की दृष्टि से नहीं, यथार्थ रूप से। हम स्वयं वहाँ गये। ८० मील की रफ्तार से बॉब की मोटर—सच पूछो तो मरियम की मोटर—उड़ी जा रही थी। मोजाव बंजर[1] की दक्खिन-पश्चिमी सीमा पर मर्सिया एक छोटी सी जगह है। वहाँ गेसोलिन के दो पम्प हैं और खुदरे सामान का एक छोटा सा स्टोर।

---

१ मोजाव बंजर (Mojave desert) कैलिफोर्निया का एक मरु भाग।

दो दिन पहले सूखा पड़ा हुआ था। वर्षा हो गई थी और आकाश अभी भी बादलों से साफ नहीं था। पश्चिम से ठंडी हवा दृढ़ संकल्प के साथ बह रही थी। ऊपर स्लेटी बादलों का वितान तना था, नीचे प्रेत की तरह सन् गेब्राइल पर्वत बर्फ की सफेदी ओढ़े खड़ा था। उत्तर की ओर सुदूर मरु में सूर्य की सुनहली किरणें चमक रही थीं। हमारे चारों ओर मरु का वैभव बिखरा हुआ था—झाड़-झंखाड़, पेड़-पौधे। निकट ही खुरदरी छाल का एक काँटेदार जोशुआ वृक्ष था जो अपनी भुजाओं को फैलाए चुप खड़ा था।

एक वृद्ध वहाँ बैठा था। ऊँचा सुनता था, ऊँचे स्वर से चिल्लाकर पूछने पर हमारी बात उसकी समझ में आई। कॉटनवुड रैंच के बारे में वह जानता था। कच्ची सड़क की ओर उसने संकेत करके बताया कि एक मील दक्खिन की तरफ चलकर पश्चिम की ओर मुड़ना होगा, फिर नहर के साथ-साथ तीन-चौथाई मील तक जाने पर हम वहाँ पहुँच सकेंगे। उस जगह के बारे में वह और भी बताना चाहता था, पर बॉब अधीर था, अधिक सुनने के लिए उसके पास अवकाश नहीं था। उसने गेअर बदलकर गाड़ी आगे बढ़ाई।

उस नहर के किनारे कॉटनवुड और विलो मरु के लिए अजनबी थे—आलिंगन-पाश में बद्ध प्रेमपूर्वक खड़े थे। चारों ओर अन्य वीतराग वृक्ष थे, जिनकी पत्तियाँ झड़ चुकी थीं,

मानों पेड़ों के कंकाल खड़े हों—वे ही पेड़ जो तीन महीने पहले सूर्य की तीव्र स्फटिक किरणों में कोमल पत्तियों से लहलहा रहे होंगे।

मोटर भीषण गति से आगे बढ़ी जा रही थी, अचानक एक गड्ढे में धँसकर उछली।

"पता नही एक दुरुस्त दिमाग़ का आदमी ऐसी सड़क के छोर पर रहना क्यों पसंद करता है?"

"शायद वह इतनी तेज़ गाड़ी नहीं चलाता।" मैंने आहिस्ता से जवाब दिया।

बॉब ने मेरी ओर ऑख उठाकर भी नहीं देखा। मोटर अपनी पूर्व गति से चल रही थी। सामने के दृश्य पर मैंने अपने विचारों को केन्द्रित करने की कोशिश की।

मरु के ऑगन में चुपचाप कायापलट हो चुकी थी। बादल हट गए थे। वृक्षों के झुरमुटों पर सूर्य की रोशनी पड़ रही थी। एक क्षण पूर्व उन पर स्यापा छाया हुआ था, अकस्मात् मानों किसी अज्ञात शक्ति ने उनमें प्राण फूँक दिये हों। धूमिल श्यामल वातावरण में मानों किसी अन्तर्निहित ज्योति से वे दीप्त हो उठे हों।

बॉब का हाथ छूकर मैंने इस ओर संकेत किया। "इधर-देखो, कुछ समझ में आया बॉब, टैलिस क्यों ऐसी सड़क के छोर पर रहना पसन्द करता है?"

उसने तेज़ी से घूम कर देखा। रास्ते में गिरे हुए एक जोशुआ वृत्त से मोटर की टक्कर बचा, पल भर के लिए फिर मुड़कर दृष्टि डाली और फिर सड़क की ओर देखने लगा।

"यह दृश्य मुझे गोया[1] की बनाई हुई मूर्ति की याद दिलाता है—वही धातु की मूर्ति। एक अश्वारोहिणी नारी है। प्रमत्त अश्व सिर झुकाकर इसके वस्त्रों को दांतों से चीर रहा है, प्रयत्न कर रहा है कि वह नीचे गिर पड़े। उन्माद के आवेश में स्त्री हँस रही है। समतल मैदान है, पेड़ों के झुरमुट खड़े हैं—इसी प्रकार का प्राकृतिक दृश्य है। हाँ, यदि ध्यानपूर्वक गोया के चित्रित झुरमुटों की ओर देखा जाय तो अन्तर स्पष्ट हो जायगा—वे झुरमुट आधी छिपकली और आधे चूहों के आकार के बृहद् समूह हैं। एलेन के लिये वैसी ही एक मूर्ति मैंने खरीदी थी।" बॉब ने कहा और फिर निस्तब्धता छा गई।

इस शॉति में मैंने सोचा कि एलेन मूर्ति के संकेत को ग्रहण नहीं कर सकी। उसने प्रमत्त अश्व को ज़मीन तक उसे खींचने दिया; वहाँ वह पड़ी रही और हँसती रही। संयम वह खो चुकी थी। उन बड़े-बड़े दाँतों ने उसके बॉडिस को फाड़ डाला और स्कर्ट के टुकड़े कर दिये। उसके अङ्ग छिल गये और

१. गोया (Goya)—सत्रहवीं शताब्दी का स्पेनिश चित्रकार और संगतराश

कष्ट से वह स्वयं सिहर उठी और तब एकेरलको पर वे विशाल चूहे और छिपकली के आकार के जन्तु अपनी जड़ निद्रा से जाग उठे और अकस्मात् बॉब ने अपने आप को घिरा पाया—सौंदर्य की प्रेम-विभोर प्रतिमाओं अथवा मदिर उल्लास में विहँसते कामदेवों द्वारा नहीं, वरन् राक्षसों और पिशाचों द्वारा।

हम अपने गंतव्य स्थान तक पहुँच गए थे। नहर के किनारे पेड़ों के बीच में एक छोटा सा धवल भवन खड़ा था। मकान के एक ओर एक पवन-चक्की थी—दूसरी ओर एक खलिहान। दरवाजा बन्द था। बॉब ने मोटर खड़ी की और हम लोग नीचे उतरे।

"हम लोग ठीक ही स्थान पर पहुँच गए हैं"—मैंने कहा।

बॉब ने सिर हिलाकर स्वीकार किया। दरवाजा खोलकर हम अन्दर गए। बड़ा सा आँगन था। जमीन कड़ी थी। हम लोग आगे बढ़े। मकान के दरवाजे को खटखटाते ही एक मजबूत वृद्धा बाहर निकली। आँखों पर चश्मा था, फूलदार नीले वस्त्र थे, एक पुरानी लाल जैकेट वह पहने थी। एक हल्की सी मुस्कराहट के साथ उसने हमारा स्वागत किया।

"मोटर तो नहीं टूटी ?" उसने पूछा।

हम क्या कहते, केवल धीरे से सिर हिला दिया। बॉब ने उसे बताया कि हम लोग मिस्टर टैलिस से मिलने आए हैं।

"मि० टैलिस से ?"

उसका स्मित हास्य लुप्त हो गया। गंभीर होकर उसने हमारी ओर देखा और बोली—"आपको शायद मालूम नहीं, छः सप्ताह हुए मि० टैलिस तो चल बसे।"

"क्या, उनका देहान्त हो गया!"

"हाँ, चल बसे!" और उसने सारी कहानी शुरू कर दी। एक वर्ष के लिये मि० टैलिस ने यह मकान किराए पर लिया था। अपने पति के साथ वह खलिहान के पीछे वाले पुराने घर में रहने लगी थी। उस पुराने घर में नहाने-धोने का तो उन्हें आराम नहीं था, कारण सब कुछ खुले में ही करना पड़ता था। लेकिन उन्हें अभ्यास हो चला था और सौभाग्य से उस साल जाड़ा भी अधिक नहीं पड़ा। सब से बड़ी बात तो यह थी कि उनकी आर्थिक स्थिति तंग थी और मकान से आय का एक साधन हो गया था। मि० टैलिस जैसे एकान्त-प्रिय व्यक्ति के लिए तो इससे अधिक आराम और क्या हो सकता था।

"दरवाजे पर साइन-बोर्ड शायद उनका ही लगाया हुआ है?"

वृद्धा ने बताया कि यह उनकी स्मृति थी और वह नहीं चाहती कि उसे हटा दिया जाय।

"क्या वे काफ़ी दिनों से बीमार थे?" मैंने पूछा।

"बीमारी तो कुछ नहीं", वह बोली, "हाँ, यह वे अवश्य कहते थे कि उन्हें हृदय-रोग है।"

यही रोग उन्हें ले बैठा। एक दिन सुबह जब वह उनके लिये दूध और अँडे लेकर आई तो क्या देखती है कि वे स्नान-गृह में पड़े हैं। बर्फ की तरह ठंढे। सारी रात शायद वे वहाँ पड़े रहे थे। ऐसा सदमा बुढ़िया को अपने जीवन में कभी नहीं पहुँचा था। बड़ी परेशानी थी, उनके किसी भी आत्मीय के बारे में यहाँ कोई नहीं जानता था। डाक्टर को बुलाया गया। शेरिफ भी आया। दफनाने के पहले बेचारे की मिट्टी-सी पलीद की गई, क़ानूनी कार्यवाही क्या हुई। फिर उनकी किताबों, कागज़ों और कपड़ों को बक्सों में बन्द किया गया, उन पर मुहर लगी और वह सारा सामान लॉस एन्जेलिज़[१] में रख दिया गया, इस आशा में कि उनका कोई उत्तराधिकारी ही मिल जाय। ख़ैर, अब वह अपने पति के साथ इस घर में चली आई है। उसका हृदय यहाँ रो पड़ता है। अभी तो मि० टैलिस का चार महीने का किराया भी उस में बाक़ी है। उसने सब कुछ एक साथ ही दे दिया था। लेकिन एक तरह से वह उनकी बड़ी ही कृतज्ञ थी, कारण ओले पड़ने लगे थे और नहाना-धोना ऐसी हालत में बाहर हो नहीं सकता था।

---

१. लॉस एन्जेलिज (Loss Angeles) कैलिफोर्निया का प्रसिद्ध शहर।

साँस लेने के लिये वह रुकी और मैंने बॉब की ओर देखा।

"मैं समझता हूँ, हम लोगों को वापस चलना ही चाहिये।" मैंने कहा।

वह कब मानने वाली थी। अन्दर चलने के लिये उस ने आग्रह किया।

एक क्षण हम रुके। फिर उसका निमन्त्रण स्वीकार कर उसके पीछे-पीछे चलने लगे। दालान में होते हुए एक कमरे में पहुँचे। एक ओर कोने में मिट्टी के तैल का स्टोव जल रहा था। कमरे में ऊमस थी और भोजन की गन्ध वहाँ व्याप रही थी। एक छोटे कद का बुजुर्ग व्यक्ति खिड़की के पास आराम-कुर्सी पर बैठा हुआ झूल रहा था। Sunday Comics में उस की आँखें गड़ी हुई थीं। उसके पास ही अपने में व्यस्त एक सत्रह वर्ष की पीली-सी म्लान युवती एक हाथ में अपने बच्चे को पकड़े हुए थी और दूसरे हाथ से गुलाबी ब्लाउज़ के बटन बंद कर रही थी। बच्चे ने खाया-पीया निगल दिया था, दूध के बुलबुले उसके होठों पर लगे हुए थे। माँ ने आख़िरी बटन यों ही खुला छोड़ उसके होठों को स्निग्धता-पूर्वक पोंछ दिया। पास के कमरे में ऊँचे स्वर से कोई लड़की सितार के साथ अलाप रही थी—"Now is the Hour।"

वृद्धा ने अपने पति के साथ हम लोगों का परिचय कराया। "आप हैं मेरे पति मिस्टर कोल्टन।"

"आप से मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई।" अखबार से सिर उठाए बिना ही मि० कोल्टन ने कहा।

"और यह है मेरी पौत्री केटी, पिछले वर्ष ही इसका विवाह हुआ है।"

"अच्छा", बॉब ने कोमल स्वर में कहा। जरा सा झुक कर वह लड़की की तरफ मुस्कराया। अपनी रसिकता के लिये वह प्रसिद्ध था।

केटी ने उसकी ओर इस तरह देखा जैसे वह लकड़ी का खिलौना हो। अपने ब्लाउज़ का आखिरी बटन उसने बंद किया और बिना कुछ कहे-सुने अपर फ्लोर की सीढ़ियों पर चढ़ गई।

मिसेज़ कोल्टन ने बॉब का और मेरा परिचय देते हुए कहा कि हम लोग मि० टैलिस के मित्र हैं।

हमने बताया, कुछ स्पष्ट करते हुए, कि हम लोग सही माने में मि० टैलिस के मित्र नहीं हैं। मि० टैलिस की एक पुस्तक हमने देखी थी और उनके बारे में बस हम इतना ही जानते थे। पुस्तक हमें अच्छी लगी थी और उन से जान-पहचान करने के लिये ही हम लोग यहाँ तक आए थे। यहाँ उनकी मृत्यु का दुखद समाचार सुनना पड़ा।

मि० कोल्टन ने अखबार से सिर उठाया।

"छासठ वर्ष, यही तो उनकी अवस्था थी। मुझे ही देखो बहत्तर का हूँ। पिछले अक्टूबर में ७२ पूरा हो गया।"

विजय की गरिमा से मि० कोल्टन का मुँह खिल गया, मानों मौत पर ही उन्होंने विजय पा ली हो।

"मुझे उस प्रति को देखने का सौभाग्य मिला था जिसे मि० टैलिस ने हमारे स्टुडिओ के लिए भेजा था।" बॉब बोला।

उस वृद्ध ने फिर हमारी ओर नज़र उठाई।

"तो आप लोग मूवी में हैं?" उसने पूछा।

"बॉब ने बताया कि केवल वही मूवी में है।

बगल के कमरे में संगीत की ध्वनि सहसा बीच ही में रुक गई।

"तो आप एक बड़े शाट् (shot) हैं?" मि० कोल्टन ने जिज्ञासा की।

बड़े ही विनत भाव से, कृत्रिमता के साथ मुस्कराकर बॉब ने बताया कि वह तो सिर्फ एक लेखक मात्र है जो यदा-कदा प्रदर्शन में योग दे देता है।

वृद्ध ने धीरे से सिर हिलाया।

सरसता से उसकी आँखें चमक उठीं। एक बार फिर विजय की स्मित रेखा उसके मुँह पर दौड़ गई। सहसा इस संसार की निर्मम यथार्थता के प्रति अरुचि दिखा, वह अपने किस्से पढ़ने लगा।

लवलिन के सामने क्राइस्ट। इस कष्टप्रद विषय को बदलने

के लिये मैंने मिसेज़ कोल्टन से पूछा कि मि० टैलिस को मूवी में कितनी दिलचस्पी थी। मैंने अपनी बात खतम की ही थी कि उसका ध्यान अंदर के कमरे से आती हुई किसी पद-ध्वनि की ओर चला गया।

मैंने मुड़कर देखा, दरवाजे पर काला स्वेटर और चारखाने का ऊनी स्कर्ट पहने एक लड़की खड़ी है। कौन हो सकती थी वह? ऐसा लगा मानों साक्षात् लेडी हेमिल्टन[1] अपने सोलहवें वर्ष में हो, कॉलिनी[3] की प्रेयसी निनन ड लेंक्ला[2] हो, अथवा स्कूल जाने की अवस्था में एना केरेनिना[4] हो!

"रोजी है" गर्व के साथ मिसेज़ कोल्टन बोली "मेरी दूसरी पौत्री।" विश्वस्त स्वर में उसने फिर हमें बताया कि वह मूवी में जाना चाहती है। आजकल संगीत का अध्ययन कर रही है।

"यह तो बहुत ही अच्छी बात है" उत्साह से बॉब का

---

१. लेडी हैमिल्टन (Lady Hamilton) नेल्सन की प्रेयसी।

२. निनन ड लेंक्ला (Ninon de Lenclos) १६१६-१७०५ फ्रेंच सुन्दरी, सौन्दर्य और तीव्र बुद्धि के लिए प्रसिद्ध, फैशन की देवी, अनेक प्रेमिकों के लिए ईर्ष्या की वस्तु।

३. कोलिनी (Coligny) फ्रेंच क्रांतिकारी।

४. एना केरेनिना—टॉल्सटाय के प्रसिद्ध उपन्यास की प्रमुख पात्री।

चहरा चमक उठा। प्रेमपूर्वक उसने भावी लेडी हेमिल्टन से हाथ मिलाये।

"शायद आप उसे कोई सम्मति दे सकें।" वृद्धा ने कहा।

"मुझे खुशी होगी यदि मैं आप के कुछ भी काम आ सकूँ।"

"रोजी, बेटी, दूसरी कुर्सी तो उठा लाना।"

लड़की ने आँखें उठाई। क्षण भर के लिये आँख गड़ा कर उसने बॉब की ओर देखा, और बोली, "रसोई-गृह में तो चलने में आपको कोई आपत्ति नहीं होगी।"

"नहीं, कोई बात नहीं।"

अंदर के कमरे में वे दोनों चले गये। खिड़की के बाहर मैंने देखा, पेड़ों के झुरमुट फिर अँधकार में सिमटे जा रहे हैं। छिपकली और चूहे आँखें मूँद कर मृत होने का बहाना कर रहे हैं अपने शिकार को वे झूठी सुरक्षा का प्रलोभन दे रहे हैं।

"भाग्य ही है", मिसेज़ कोल्टन कह रही थीं, "दैव-योग नहीं तो और क्या कहा जा सकता है? मूवी का एक कुशल कलाकार नहीं तो यहाँ क्यों आता और ऐसे समय जब रोजी को उसकी सहायता वाँछित हो।"

"हाँ, ऐसे समय जब मूवी गाने-बजाने की नौटंकी हो

रही हो", कागज से बिना आँख उठाये ही वृद्ध ने कुछ कह दिया।

"ऐसी बात कैसे तुम्हारी जबान से निकली है जी?"

"मैं नहीं कहता, गोलविन गाइ[1] के शब्द कह रहा था।"

रसोई-गृह में बच्चों जैसा मधुर हास्य फूट रहा था। अत्यंत निपुणता के साथ बॉब अपने मार्ग पर बढ़ रहा था। मुझे एकेपलको की दूसरी यात्रा के लक्षण दिखाई पड़े, और इसका परिणाम पहली यात्रा से कहीं अधिक भयंकर होगा, यह भी मैंने सोच लिया।

सरल, निर्दोष ढँग से मिसेज़ कोल्टन मुस्करा रही थी। बोली, "तुम्हारे मित्र से मैं स्नेह करने लगी हूँ। बच्चों में वे कितनी सरलता से मिल जाते हैं, कोई अभिमान नहीं, कोई गर्व नहीं।"

उसके अन्तर्निहित व्यंग्य को समझ कर भी मैं चुप ही रहा। उस पर बहस करने से लाभ ही क्या था? मैंने फिर उससे यही पूछा कि मि० टैलिस को मूवी में दिलचस्पी थी या नहीं।

वह कहानी-सी कहने लगी। मि० टैलिस ने उसे एक

---

१. गोलविन गाइ (Goldwyn Guy) फिल्म उत्पादक। अमेरिका की सम्मिलित फिल्म कम्पनी मिट्रो-गोलविन-मायर (Metro Goldwyn-Mayer) का एक प्रमुख हिस्सेदार।

बार बताया था कि वह स्टूडियो में कुछ भेज रहा है। उसे पैसों की जरूरत थी, अपने लिये नहीं,—कारण बहुत कुछ गँवाने पर भी उसके लायक उसके पास काफ़ी था। उसे तो कुछ धन यूरोप भेजना था। प्रथम विश्व-युद्ध के पहले एक जर्मन लड़की के साथ उसकी शादी हुई थी। सम्बन्ध-विच्छेद भी आगे जाकर हो गया। अपनी छोटी पौत्री के साथ वह भी वहीं रह गई। उस लड़की का अब कोई देख-भाल करने वाला नहीं रह गया था। मि० टैलिस की इच्छा थी कि उसे यहीं ले आया जाय, पर वाशिंगटन वाले ऐसा क्यों चाहने लगे। इसलिये एक ही रास्ता रह गया था कि उसे कोई आर्थिक कष्ट न हो, इतनी सहायता उसे मिलती रहे कि खाने-पीने की तंगी न हो और शिक्षा की व्यवस्था ठीक बनी रहे। यही वजह थी कि मूवी के लिये उन्होंने कुछ लिखा-लिखाया था।

इस विवरण से मुझे मि० टेलिस की उस पुस्तक के कई करुण प्रसंग याद हो आए। उसने एक ऐसा दृश्य भी खड़ा किया था जहाँ युद्धोत्तर यूरोप में बच्चे-बच्चियाँ चॉकलेट के टुकड़ों के लिये मचल रहे हैं और अपने आप को बर्बाद कर रहे हैं। ऐसा लगता था मानों उसकी बच्ची भी उन में ही एक हो। कोई कह रह था—"मैं तुम्हें चॉकलेट देता हूँ और तुम भी मुझे कुछ देना।" उसकी समझ में यह सब आ रहा था।

"उसकी स्त्री का क्या हुआ, और उस बच्ची के माँ-बाप का ?" मैंने मिसेज़ कोल्टन से पूछा।

"क्या करेंगे जानकर ? मैं समझती हूँ वे यहूदी या ऐसे ही और कुछ रहे होंगे, काम आए।" मिस्टर कोल्टन ने उत्तर दिया।

और फिर तुरन्त ही उन्होंने कहना शुरू किया—"हाँ, मुझे यहूदियों से कोई शिकायत नहीं है, लेकिन फिर भी... हिटलर गूँगा तो था नहीं। उसे जवाब देना आता था।"

इस बार मैं समझा, उसका लक्ष्य केज़ेनजेमर किड्स (Katzenjammer Kids) की ओर था।

रसोई-घर में हँसी का एक और क़हक़हा उठा—सरल बालोचित हँसी। षोडशी हेमिल्टन मानों ग्यारह वर्ष की बालिका हो। उसकी उस दृष्टि में कितनी प्रौढ़ व्यंजना थी जिसके साथ उसने बॉब का स्वागत किया था। यथार्थ में रोज़ी के सम्बन्ध में व्यग्रता पैदा करने वाली बात तो यह थी कि वह जितनी सरल थी उतनी ही पटु भी। एक साथ ही वह एक सरल अबोध बालिका और एक चतुर 'सुबोध' महिला थी।

वृद्धा पर इस अट्टहास का कोई भी प्रभाव दिखाई नहीं पड़ा। वह अपनी बात में संलग्न थी—"उसने फिर दूसरा विवाह किया, किसी अभिनेत्री के साथ। उसने नाम भी तो बताया था, इस समय भूल रही हूँ। ख़ैर, पर यह प्रणय-बन्धन

अधिक दिनों तक स्थिर न रह सका। किसी के साथ वह चली गई। शायद ठीक ही हुआ। भला बताओ, जब एक स्त्री जर्मनी में बैठी है तो दूसरी शादी का क्या अर्थ हुआ? तलाक-लीला और किसी दूसरे के पति के साथ परिणय-सूत्र मुझे तो ठीक नहीं जचता।"

कुछ देर के लिये निस्तब्धता छा गई। इस आदमी को मैंने पहले कभी नहीं देखा था। पर उसकी सारी जीवनी मेरी आँखों के सामने थी। किसी अच्छे घराने का वह युवक था। तत्परता से उसने अध्ययन किया था। अभिमान छू नहीं गया था। प्रतिभा का धनी था, पर आराम की जिंदगी छोड़ लेखन व्यवसाय को अपनाकर मुसीबत में साँस लेना उसके बूते से बाहर था। यूरोप की उसने यात्रा की थी, शान से रहा था, अच्छे लोगो से परिचय बढ़ाया था और म्यूनिक में, मैंने अनुमान लगाया, उसने प्रेम करना शुरू किया। एक जर्मन लड़की की तस्वीर मेरी आँखों के आगे घूम गई। वह किसी सफल कलाकार या कला को प्रोत्साहन देने वाली की लड़की थी। धनी-मानी, शिष्ट वातावरण में यह पैदा हुई; वह धुँधले कुहरे सी और शुभ्र आकाश सी, आकर्षण की पहेली और आदर्श की उद्भ्रान्ति की तरह थी। टैलिस ने उससे प्रेम किया, विवाह किया, अपनी पत्नी के अनमनेपन के विपरीत भी एक सन्तान का पिता बना और अन्त में पारिवारिक जीवन

की विषएणता से ऊब गया। यह देखते हुए पेरिस का वातावरण कितना उन्मुक्त और स्नेह-सिक्त था और कितना सरस था उस अभिनेत्री के साथ जो वहाँ अपनी छुट्टियाँ मना रही थी। वह प्रेम की प्रतिमा थी, सदा मुस्कराती और थिरकती रहती थी। अपनी कला का उसे दंभ नहीं था। उसके प्रेम में गहराई नहीं थी, वह आत्मा की वस्तु नहीं थी, पर उस में सरलता थी, उन्माद था, मस्ती थी। अभाग्यवश उस में पशु की उद्दाम वासना भी थी।

मेरी कल्पना के सामने १६४७ के टॅलिस का चित्र प्रस्तुत था। वासना के उन्माद और विषय की उत्तेजना में उसने एक स्त्री और एक बच्ची को मौत के लिये—पागलपन के शिकार के लिए—छोड़ दिया। एक पौत्री को उसने किसी भी सैनिक या मनचले व्यक्ति के लिये छोड़ दिया जो उसे मिठाई के टुकड़े या भर-पेट अच्छा भोजन दे सके।

कल्पना के रंग-बिरंगे चित्र! मैं मिसेज़ कोल्टन की ओर मुड़ा।

"काश, मैं उन से मिल पाता।" मैंने कहा।

"आपको उन से मिलकर प्रसन्नता होती।" उसने मुझे विश्वास दिलाते हुए कहा—"हम सब को उन से अत्यन्त स्नेह हो गया था। मैं आप से क्या कहूँ, जब-जब स्त्रियों के ब्रिज-क्लब के लिए मैं लंकास्टर जाती हूँ, तो एक बार सिमेटरी

(Cametory) में अवश्य हो आती हूँ। उनकी समाधि का दर्शन ही हो जाता है।

"और उसे इससे घृणा है।" वृद्ध ने कहा।

"देखो, एल्मर—" अपना विरोध प्रकट करते हुए मिसेज़ कोल्टन ने कहा।

"लेकिन मैंने तो उसे खुद यह कहते हुए सुना है।" मि० कोल्टन अपनी बात पर जमे रहे—"कई बार उसने कहा है कि मेरी समाधि मरु के किसी निर्जन स्थान में होनी चाहिये।"

"इतना तो उन्होंने अपनी उस पुस्तक में भी लिखा है जो स्टुडियो के लिये उन्होंने भेजी थी।" मैंने कहा।

"क्या सचमुच?" मिसेज़ कोल्टन को विश्वास नहीं हो रहा था।

"हाँ, उन्होंने तो अपनी इस क़ब्र का भी ज़िक्र किया है जहाँ उन्हें सदैव चिर-शाँति ग्रहण करनी थी। वे चाहते थे कि वह ऐसे स्थान में हो जहाँ गहरा सूनापन हो, हो सके तो किसी जोशुआ वृक्ष के नीचे ही।"

"मैं तो उसे यही कहता कि कानूनन यह ठीक नहीं।" वृद्ध ने अपनी बात पर ज़ोर देते हुए कहा—"आप को मालूम नहीं कानून का आश्रय लेकर लोग उनको क़ब्र से खोद निकालते। ऐसा हो चुका है। एक ऐसा दृष्टाँत मेरे पास

है जब मुर्दे को बीस साल बाद उसकी क़ब्र से खोद निकाला गया—झुरमुटों के पीछे बेजगह वह गड़ा पड़ा था।" उन्हीं झुरमुटों की ओर उसने संकेत भी किया जो मानों के चित्रित चूहे-छिपकिली के आकार के जन्तु थे—"और इसी झंझट में उसका भतीजा पहले ही तीन सौ डालर खर्च कर चुका था।"

अपनी इस स्मृति पर उसे ज़रा हँसी भी आ गई।

"मैं तो किसी एकाँत मरु में दफनाया जाना पसंद नहीं करूँगी।" उसकी स्त्री ने ज़ोर देकर कहा।

"क्यों ?"

"इतना सन्नाटा ! मुझे तो घृणा होने लगेगी।"

मैं सोच रहा था कि आगे क्या कहा जाय। इतने में ही वह नवयुवती, जिसका मातृत्व फूट पड़ा था, टॉवेल के कुछ टुकड़े लिये ज़ीने से उतरी। एक क्षण के लिये रसोई-घर में कुछ देखने के लिये वह रुकी।

"रोज़ी, सुनती भी हो", उसने धीरे से, कुछ गुस्से में कहा—"बहुत गा चुकी, अब कुछ काम भी देखना चाहिये।"

तब वह मुड़ी, दरवाज़े से बाहर निकल कर गुसलखाने में घुस गई। अपनी दादी के पास से निकलते समय उसने कुछ कटुता के साथ इतना ही कहा—"इसे तो फिर दस्त लगने शुरू हो गए हैं।

शर्मायी हुई सी, आँखों में अनुराग की लाली लिये भावी लेडी हेमिल्टन रसोई-घर से बाहर आई। उसके पीछे, दरवाज़े के बीच में भावी हेमिल्टन खड़ा था—लॉर्ड नेल्सन बनने की उधेड़-बुन में व्यस्त।

"बड़ी माँ," रोज़ी ने आते ही कहा—"मि० ब्रिग्स कह रहे हैं कि वे मेरे लिये स्क्रीन टेस्ट का आयोजन कर सकते हैं।"

बॉब की चाल पर मुझे क्रोध आ रहा था। मैं उठ पड़ा।

"हमें अब चलना ही चाहिये, बॉब! काफी समय हो गया है।"

गुसलखाने के अधखुले दरवाज़े से ऐसी आवाज़ आ रही थी मानों टॉवेल के टुकड़े निचोड़े जा रहे हों।

"कुछ सुन रहे हो?" मैंने बॉब के कान में फुसफुसाया।

"क्या चीज़?" उसने पूछा।

मैंने अपनी नाक-भौं सिकोड़ी। कान होते हुए भी इन लोगों को कुछ सुनाई नहीं पड़ता।

तो, टैलिस के बारे में हम लोग इतना ही जान सके। उसकी विचार-धारा का परिचय लोगों को उसकी इस पुस्तक से मिल जायगा। बिना किसी परिवर्तन के, बिना किसी टीका के, 'पशु और मानव' की जैसी भी प्रति मुझे मिली थी, यहाँ प्रकाशित कर रहा हूँ।

: २ :

टैलिस की पुस्तक

चित्रपट पर प्रकाश होता है। चित्र का नाम, कलाकारों के नाम, पात्रों के नाम, देव-प्रतिमाओं की मधुर स्वर-लहरी के साथ पट पर अँकित होते जा रहे हैं, पश्चात् प्रदर्शक का नाम।

संगीत के स्वर-ताल में परिवर्तन होता है। अगर डेबूसी[1] जीवित होते तो वे इसे अधिक कमनीय रूप में उपस्थित करते, इसी में सुकुमारता और ऐश्वर्य-सम्पन्नता आ जाती, वेगनर की उच्छृङ्खल रसिकता एवं स्ट्रास की अश्लीलता दूर रहती। अस्तु, सूर्योदय से पूर्व की घड़ी है। अन्धकार के गहन आवरण में रात अब भी लिपटी रहना चाहती है, पर सुदूर क्षितिज की नीलिमा में सुनहली रश्मियाँ फूट पड़ती हैं। पूर्व में प्रभात की तारिका अब भी जगमगा रही है।

निर्देशक

अनन्त विपुल सौन्दर्य, अखिल शांति—
बुद्धि की सीमा के पार,
अग्राह्य।

---

१ डेबूसी, वेगनर, स्ट्रास—संगीत के स्वर-ताल का संपादन करने वाले अमेरिकन चल-चित्र के प्रमुख व्यक्ति।

प्रकृति के वैभव का रूप सघन, विशाल—
चित्रपट पर वह विकृति का जाल
घृण्य।
निःसीम विराटता, शुभ्रता, सौम्यता—
कला की परिणति में पतित,
उपहास्य।
जनता के मनोरंजन, विनोद के अर्थ
कलुष का आकार
क्षम्य (?)।
मानव की रुचि को यथार्थ के बोध में
आकर्षित करने का प्रयत्न
श्लाघ्य !

निर्देशक के गीत की समाप्ति के साथ-साथ क्षितिज की शुभ्र ज्योत्सना, जिसने अनन्त की चेतना को सहेज रखा है, परिवर्तित हो जाती है। चित्र-भवन दर्शकों से भरा हुआ है—तिल रखने की भी जगह नहीं। प्रकाश कुछ धुँधला होता है और दर्शकों की वंदराकार आकृतियाँ दिखाई देती हैं। स्त्री-पुरुष, बच्चे-बूढ़े सभी लंगूरों की शकल के हैं।

निर्देशक

क्षुद्र मारहीन अधिकार-मद में गर्वित
निज मानव की शुभ्रता से अनभिज्ञ,

आँत,

धारण कर पशु की प्रवृत्ति का रोष—

मानव

भरता है रूप अनेक, देख जिन्हें देव भी

व्यथित, विकल, अश्रुपूर्ण ।[1]

चित्र-पट पर प्रकाश । लंगूर ध्यानपूर्वक चित्र को देख रहे हैं । चित्र के वातावरण की कल्पना सेमीरामीज[2] या मेट्रो-गोलविन-मेयर[3] ही कर सकते हैं । बंदर की आकृति की एक स्त्री चित्र-पट पर आती है—माँसल शरीर, तन पर धूमिल गुलाबी गाउन, मुख पर सुर्ख़ पाउडर, आँखें लालिमा-रंजित । अपने पिछले दोनों पाँवों पर खड़ी होकर वासना से छलकती हुई उद्दाम दृष्टि वह चारों ओर डालती है और रात्रि-समारोह के जगमगाते हुए रंग-मंच की ओर बढ़ती है । दो तीन सौ व्यक्तियों के करतल-नाद में वह लूई माइक्रोफोन के पास आती है । उसके पीछे-पीछे चारों पाँवों को टेकता हुआ माइकेल फेराडे आता है ।

निर्देशक

"जो सब से अधिक सुनिश्चित है, वह उसी के सम्बन्ध

---

१. शेक्सपियर की प्रसिद्ध पंक्तियों का अनुवाद

२. सेमीरामीज (Semiramis) फिल्म व्यवसायी

३. मेट्रो-गोलविन-मेयर (Metro-Goldwyn-Mayer) अमेरिका की एक संयुक्त फिल्म-व्यवसायी कंपनी ।

में सब से अधिक अनभिज्ञ है…… ··।" और मुझे अधिक कहने की कोई आवश्यकता नहीं; जिसे हम ज्ञान कहते हैं वह वस्तुतः अज्ञान का ही एक प्रकार है—पर अत्यन्त व्यवस्थित, अत्यन्त वैज्ञानिक, और इसी कारण लुब्ध-क्रुद्ध लँगूरों का प्रबल उत्पादक। जब अज्ञान अनभिज्ञता मात्र था, हम लोग बन्दरों के समान-धर्मी थे, पर उस महान् अज्ञान के हम चिर कृतज्ञ हैं जिसकी कृपा से आज मनुष्य का इतना विकास हो सका है कि हम में निम्न से निम्न भी बंदर है और समाज-सुधारक तो सच्चा गुरिल्ला है।

इस समय तक वह लड़की माइक्रोफोन के पास पहुँच जाती है। सिर घुमाते ही उसकी दृष्टि फेराडे पर पड़ती है जो इस समय अपनी थकी हुई रीढ़ और दुखती हुई पीठ को सीधी करने के लिये घुटनों का सहारा लिये हुये है।

"नीचे बैठ जाओ, महोदय, नीचे।"

लड़की की आवाज में दृढ़ता है, और हाथ में एक छड़ी है जिस के सिरे पर मूँगा जड़ा हुआ है। खींच कर एक प्रहार वह फेराडे पर करती है। चीखता हुआ वह आज्ञा-पालन करता है। दर्शकों की भीड़ में लंगूर विनोद से हँसने लगते हैं। वह उनकी ओर प्यार से सीटी बजाती है। माइक्रोफोन को अपनी ओर बढा कर वह एक गाना सुनाती है। मुँह खोलते ही

भयंकर दाँत बाहर निकल पड़ते हैं। एक बाज़ारू गाना वह अलापने लगती है—

प्रेम का दान दो !
प्रेम ही सत्व है
प्रत्येक विचार का, प्रत्येक कार्य का।
दान दो, दान दो
अर्पित करो महान् सत्व—
प्रेम का दान दो।
प्रेम का दान दो।

फेराडे के मुँह पर गहन प्रकाश। आश्चर्य, क्षोभ, घृणा के भाव वहाँ व्यक्त होते हैं। और फिर शर्म तथा पीड़ा से आँसू फूट पड़ते हैं।

उन स्थानों पर प्रकाश जहाँ लोग रेडियो सुन रहे हैं।

एक प्रौढ़ लंगूर स्त्री मसाला लगाया हुआ माँस पका रही है। रेडियो की ध्वनि उसकी दमित इच्छाओं की काल्पनिक पूर्ति कर रही है, पर उसका मर्म टीस की वास्तविकता से तड़प उठता है।

खाट पर खड़ा हो एक लंगूर बालक रेडियो तक पहुँच उसके डायल से खेलने लगता है जहाँ से संगीत की ध्वनि निकलती हुई मालूम पड़ती है।

एक अधेड़ व्यवसायी स्टाक-मार्केट के समाचारों से सिर

उठाते हुये आँखें बन्द कर, प्रसन्न-चित्त गीत सुन रहा है—"दान दो, दान दो, प्रेम महान् सत्व है।"

किशोर अवस्था के दो लंगूर तरुण-तरुणी एक मोटर के पास खड़े हो गुनगुनाने लगते हैं—"दान दो, दान दो—अर्पित करो महान् सत्व।" मुँह और पंजों पर प्रकाश।

फेराडे के आँसुओं पर प्रकाश। गीत समाप्त कर स्त्री उसके भयभीत मुँह पर दृष्टि डालती है। क्रोध से तिलमिला कर वह उसे पीटने लगती है। प्रहार पर प्रहार। दर्शक हर्ष से पागल हो रहे हैं। रात्रि-समारोह का दृश्य ओझल होता है और एक क्षण के लिए प्रभात की पृष्ठ-भूमि में लंगूर के छाया-चित्र पर प्रकाश पड़ता है। धीरे-धीरे फिर निर्मल क्षितिज की ज्योत्सना पृथ्वी पर बिखर जाती है।

निर्देशक

असीम समुद्र, ज्योतिर्मय नक्षत्र, आकाश की निस्सीम शुभ्रता—आप को सब का स्मरण होगा। अथवा क्या यह संभव है कि आप सब कुछ विस्मृत कर चुके और आपने कभी भी नहीं सोचा कि बुद्धि की प्रदर्शिनी और अंतर की उद्भ्रांति तथा कल्पना की रंगभूमि के परे किसी वस्तु की स्थिति है जहाँ आपके अस्तित्व का प्रकाश है?

आकाश की ओर प्रकाश। एक द्वीप की नुकीली, टूटी,

आरी की तरह दाँतेदार चट्टानें दूर तक फैली हुई हैं। चार मस्तूलों का एक विशाल जहाज द्वीप के समुद्री किनारों से शनैः शनैः समुद्र के अँचल में दूर बढ़ता जा रहा है। जहाज पर न्यूजीलैंड का झंडा फहरा रहा है और उसका नाम कैंटरबरी है। कप्तान और उसके कुछ साथी जहाज की रेलिंग के पास खड़े हो पूर्व की ओर दूरबीनों से देख रहे हैं। दूरबीन से देखने पर वीरान समुद्र-तट का दृश्य दिखाई दे रहा है। तब सहसा पौ फट जाती है और सुदूर पर्वत की चोटियों पर सूर्य चमकने लगता है।

निर्देशक

बीस फरवरी २१८८ का उज्ज्वल प्रभात है। ये स्त्री-पुरुष न्यूजीलैंड की 'अमेरिका-पुनर्आविष्कार-अभियान' संस्था के सदस्य हैं। तृतीय विश्व-युद्ध की विध्वंस-लीला से ये किसी तरह बच गए हैं। मानवता के नाम पर इनकी रक्षा नहीं हुई लेकिन अफ्रीका के अंधकारपूर्ण अँतःप्रदेश की तरह न्यूजीलैंड भी संहार-कार्य से दूर पड़ गया था। इस एकाँत पृथकता में यह देश जीवित रह सका। जब सारा संसार रेडियम-सञ्चालित पैशाचिक काँड से ध्वस्त था, इस देश ने लगभग एक शताब्दी तक अपनी इकाई को अलग ही रखा। भय अब दूर हो चुका था, अतः यहाँ के कुछ साहसिक अमेरिका का पुनर्आविष्कार करने के लिए निकल पड़े हैं। जब ये लोग इधर आये हैं, पृथ्वी

के दूसरे भाग में कुछ काले व्यक्ति नील नदी के किनारे-किनारे चलते हुए भूमध्यसागर को पार कर यूरोप में प्रवेश कर रहे हैं। उन विशाल भवनों में जहाँ पहले पार्लामेंट की बैठकें होती थीं अब चमगीदड़ों ने अपना निवास बना रखा है। ये लोग अपने जातीय नृत्य-महोत्सव वहीं मना रहे हैं। वेटिकन-प्रासाद[1] इनके राग-रंग का केन्द्र बन रहा है—कितना उपयुक्त भवन ! जो चाहते हैं हमें वह मिल ही जाता है।

दृश्य में परिवर्तन होता है। चित्रपट पर धुँधलापन, बन्दूक छूटने की आवाज़ होती है। प्रकाश होते ही डा० अलबर्ट आइंस्टीन[2] बन्दी-रूप में दिखाई पड़ते हैं—लँगूरों की आकृति के कुछ लोग वर्दी पहने उनके सामने खड़े हैं।

कैमरा दूसरी ओर घूमता है—ईंट-पत्थर के टुकड़े, टूटे हुए वृक्ष और शव इधर-उधर पड़े हैं। प्रकाश इसी तरह के लंगूरों के दूसरे दल पर आकर स्थिर हो जाता है। इन लोगों की वर्दी दूसरे ढंग की है। एक भिन्न प्रकार के झंडे के नीचे ये एकत्र हैं, पर इनके साथ भी डा० अलबर्ट आइंस्टीन की शकल का एक व्यक्ति है, चमड़े के बेल्ट से बँधा हुआ। पलथी मारे वह चुपचाप बैठा है। बाल बिखरे हुए हैं। दीप्त प्रकाश में सुन्दर

---

१ वेटिकन प्रासाद—रोम में पोप का महल

२ डा० अलबर्ट आइंस्टीन—प्रसि वैज्ञानिक। जन्म १८७९ ई०। सापेक्ष-सिद्धात (Theory of Relativity) के लिये विख्यात।

निर्दोष मुख पर कष्ट की छाप दिखाई पड़ती है। प्रकाश का पुँज एक आइंस्टीन से दूसरे आइंस्टीन पर पड़ता है। एक रूप की मानों वे दो आकृतियाँ हों—एक दूसरे पर वे दृष्टि गड़ा रहे हैं।

स्वर-पथ पर संगीत की ध्वनि धीरे-धीरे फैल रही है—प्रेम महान् सत्य है।

"क्या तुम हो, अलबर्ट ?"—एक आइंस्टीन ने हिच-किचाते हुए दूसरे से प्रश्न किया।

दूसरा धीरे से सिर हिला कर उत्तर देता है—"अलबर्ट शायद मैं ही हूँ।"

हवा का एक झोंका आता है और विरोधी दलों के झंडे लहराने लगते हैं। वे खुलते हैं, लिपटते हैं और उनके विशेष चिह्न सिहर-सिहर कर सिमट जाते हैं।

निर्देशक

इन पताकाओं पर टेढ़ी-मेढ़ी, खड़ी-पड़ी रेखाएँ, शून्य, क्रॉस, गरुड़, हथौड़े आदि मनमाने चिह्न अङ्कित हैं। जिसके पास जो पताका है वही उसके लिए मान्य है। गोस्वामी और अली शातिपूर्वक रहा करते थे, लेकिन जिस प्रकार अन्य लोगों को अपने-अपने झण्डे मिले, इन्हें भी दो तरह के झण्डे मिले। अब गोस्वामी और अली के पास अपने झण्डे हैं और उनके लिये हठात् यह आवश्यक हो गया कि अपने झण्डों की

आन-बान पर कुर्बान हो जावें। जिसका सुन्नत हो चुका था, उसके लिये यह कर्तव्य हो गया कि वह अपने विपक्षी की अँतड़ियों को चीर दे, उसकी स्त्री की इज्ज़त को लूट ले और उसके बच्चों को आग में झुलस दे।

उड़ती हुई पताकाओं के ऊपर सुदूर बादलों के विशाल टुकड़े हवा में तैर रहे हैं। बादलों से परे नीलवर्ण शून्य है जो शुभ्र मानवता का प्रतीक-चिह्न है। झण्डे के नीचे ज्वार, बाजरा, धान, गेहूँ के खेत फैले हुए हैं। शरीर और आत्मा को उनसे रोटी मिलती है। पर हमें तो रोटी और झण्डे में से एक को ही चुनना है। और, कहना व्यर्थ है, एक स्वर से हमने झण्डे को चुन लिया।

प्रकाश-पुञ्ज पताकाओं से हट कर दोनों आइंस्टीनों पर गिरता है और फिर वर्दी में सुसज्जित साधारण स्टाफ पर। एकाएक दोनों ओर के सेना-नायक एक साथ आदेश देते हैं। दोनों ओर के टेकनिशियन अपने पूर्ण साज-सामान के साथ सामने आते हैं। एक ओर की सेना के प्रेशर-टैंक पर लिखा हुआ है 'सुपर-टुलारेमिया'[1] और दूसरे दल के प्रेशर-टैंक पर

---

१ सुपर टुलारेमिया (Super Tularemia)—धातुओं का मिश्रण।
ग्लैंडर्स (Glanders)—विषैले कीटाणुओं का प्रयोग
[आधुनिक विज्ञान ने युद्ध के बर्बर साधनों मे इन वस्तुओं की देन दी है]

'विकसित ग्सैंडर्स', गारंटी ६६.४४% शुद्ध। दोनों ओर के टेकनिशियनों के साथ लौह-शृङ्खला में बद्ध एक-एक लूई पास्चर[1] है। स्वर-पथ पर लड़की क गीत की ध्वनि आ रही है—

'दान दो, दान दो—अर्पित करो महान् सत्व।' फिर ये मादक स्वर 'यश और आशा की भूमि' में बदल जाते हैं जिन्हें पीतल के बैंडों पर चौदह हजार व्यक्तियों के स्वर के साथ गाया जा रहा है।

निर्देशक

पूछते हो कौन सी भूमि ?
कोई प्राचीन देश, जहाँ तेरी दृष्टि का विस्तार हो।
स्मरण रख, कीर्ति है उस प्रभु की—मनुष्य के पशु की—
और आशा व्यर्थ है।
भाग्यशाली मान, आशा की रश्मियाँ तेरे अँधकार में
विलीन हैं और नित्य-प्रति पतन के गर्त में
तेरी गति सजग है।
विनाश का मार्ग प्रशस्त है।
तिल-तिल कर तेरे सत्व का ह्रास

---

१ लूई पास्चर (Louis Pasteur)—(१८२२-९५) फ्रांस का विख्यात वैज्ञानिक। रसायन-शास्त्र का विद्वान्। हाइड्रोफोबिया, बैक्टिरियोलॉजी, हैजा के कीटाणु आदि के सम्बन्ध मे इनकी खोज महत्वपूर्ण है।

निश्चित है।

लंगूरों के पंजों पर गहरा प्रकाश। फिर कैमरा दूर हट जाता है। प्रेशर-टैंकों से धुंधले कुहरे के सघन पुञ्ज निकल कर दो नदियों की तरह एक दूसरे की ओर धीरे-धीरे बढ़कर आपस में मिल जाते हैं।

निर्देशक

घोड़ों का रोग (Glanders) आदमियों को होने लगा है। छूत की बीमारी है। लेकिन डरने की कोई बात नहीं, यदि आप रोग के शिकार हैं तो औरों का भी नम्बर आ जायगा। विज्ञान सरलता से इसे विश्व-व्यापी बना देगा। इस रोग के ये चिह्न हैं—गाँठ-गाँठ में भीषण दर्द, सारे शरीर पर दानों का फूटना, जगह-जगह भयानक सूजन और फिर नासूर में परिवर्तन। नाक के रंध्र सड़ जाते हैं, दुर्गन्धयुक्त मवाद बहने लगती है, फिर वहाँ व्रण फूट पड़ते हैं और नासिका की पतली हड्डी सड़ जाती है। धीरे-धीरे आँख, कान, मुँह, गला सभी से बदबू निकलने लगती है। तीन सप्ताह में बहुत से रोगी तो शरीर से छुटकारा पा जाते हैं, बचे-खुचे रोगियों को कैसे छुट्टी मिले, इसलिये सरकार ने कुछ मेधावी युवकों की नियुक्ति की है। कई D. Sc. वैज्ञानिक इस काम में तत्पर हैं। एक ही देश में नहीं, अन्य राष्ट्रों की सरकारें भी इधर ध्यान दे रही हैं। औषधि-विज्ञान के विशेषज्ञ, जीव-विज्ञान के मर्मज्ञ, शरीर-धर्म

के ज्ञाता, दिन भर लैब० में काम कर थके-माँदे घर लौटते हैं। स्त्री से प्यार किया, बच्चों को चूमा, मित्रों के साथ पार्टी उड़ाई और फिर या तो नाच-गान में दिलचस्पी ली अथवा राजनीति या दर्शन पर कुछ चर्चा की। ग्यारह बजे, सोने चले गए और दाम्पत्य-जीवन की रंगीनियों के मजे लिए। सुबह उठे, नाश्ता किया, पेय चढ़ाया और आविष्कार-कार्य पर जुट गये। किस तरह लोगों के परिवार भयंकर से भयंकर कीटाणुओं के शिकार हों, यही चिन्ता उन्हें सता रही है।

सेना-नायकों का आदेश फिर कड़क उठता है। आइस्टीनों को प्रहरी ढकेलते हुए ला रहे हैं। वैज्ञानिकों पर वे किसी प्रकार की दया नहीं दिखलाते; उनके कोड़े उनके हाथों में उछल-उछल कर बल खा रहे हैं।

दोनों आइंस्टीनों पर प्रकाश पड़ता है। वे विरोध करने का प्रयत्न करते हैं।

'नहीं, नहीं, मैं नहीं कर सकता।'

'कहता हूँ, मैं असमर्थ हूँ।'

'द्रोही!'

'ग़द्दार!'

'कम्यूनिस्ट कीड़े!'

'घिनौने बुर्जुआ-फासिस्ट!'

'कट्टर साम्राज्यवादी!'

'पूँजीवादी लुटेरे !'

'पकड़ो !'

'पकड़ो !'

ठोकर मारकर, गला दबाकर, चाबुक का प्रहार कर वे आइंस्टीनों को एक प्रकार के कटघरे में, जहाँ संतरी खड़ा होता है, ले जाते हैं। इन कटघरों में डायल, नॉब, स्विच आदि के साथ-साथ अनेक प्रकार के औजार भी पड़े हैं।

निर्देशक

यह सर्वथा स्पष्ट है—
बच्चा-बच्चा इससे विज्ञ—
साधन मानवी, लक्ष्य पशु-निर्दिष्ट है।
विलास में मनुष्य की प्रवृत्ति है।
पोप की सन्तुष्टि, प्रजा की रुचि—
वासना की तृप्ति यही इष्ट है।
बुद्धि की गरिमा का यही व्यापार,
दर्शन-शास्त्र की यही आकांक्षा,
हेगेल[1] के तत्वों का यही सार,
चिकित्सा-शास्त्र का यही ध्येय—

---

१ हेगेल (१७७०-१८३१)—प्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक जिसके मतानुसार जो बुद्धि-संगत है वही यथार्थ है और जो यथार्थ है वही बुद्धि-संगत।

कामोद्दीपन उसे साध्य है।

काव्य के मद में यही उष्मा।

यंत्रों से चालित, समुद्र के उस पार

अनाथालय पर, यान की दृष्टि है।

नारी मनुज की प्राप्ति का केन्द्र है।

"यश और आशा की भूमि"[१] का, "आगे बढ़े जा, ओ क्रिश्चियन सैनिक"[२], में पीतल के बैंडों के ताल के साथ परिवर्तन। महामान्य डीन (Dean) के साथ पूज्यवर विशप (Bishop) धर्म-दण्ड हाथ में लिए दोनों सेना-नायकों और उनके देश-भक्त साथियों को आशीर्वाद देने के लिए गंभीरता-पूर्वक चले आ रहे हैं।

निर्देशक

धर्म और स्टेट

लोभ-घृणायुक्त है,

मनुष्य नहीं पशु—

निम्न विकार-युक्त है।

जनता

तथास्तु!

---

१. २. Land of Hope and Glory और Onward Christian soldier ईसाइयों के गान।

विशप

पशु के नाम में......

स्वर-पथ पर आदमियों की आवाज़ और देव गान-मंडली की ध्वनि गूँज उठती है—

"ईसू के क्रास के साथ......"

आंइस्टीनों के पैरों को लोगों के भयानक पंजे जकड़ लेते हैं। हाथों में कड़ियाँ कस जाती हैं, पाँवों में बँधन पड़ जाते हैं। बाँधने की आवाज़ होती है, फिर गहरी निस्तब्धता। सन्नाटे को चीरती हुई निर्देशक की आवाज़ फैल जाती है।

निर्देशक

भीषण गति होने पर भी छूटे हुए शस्त्रों को गंतव्य स्थान तक पहुँचने में समय लगेगा ही। उस समय की प्रतीक्षा करते हुए हम प्राणधारियों के लिए क्या आज्ञा है?

बंदराकार व्यक्ति अपने थैलों से रोटी, गाजर और चीनी के दो-तीन ढेले निकाल आंइस्टीनों की ओर फेंकते हैं और शराब तथा चटपटे मांस पर अपने आप जुट जाते हैं।

दृश्याँतर। जहाज़ के डेक पर प्रकाश, जहाँ 'अमेरिका-पुनर्आविष्कार-अभियान-संस्था' के सदस्य नाश्ता कर रहे हैं।

निर्देशक

उस 'विध्वंस' से बचे हुए लोग हैं ये। कितने भले व्यक्ति

और कितनी भली वह सभ्यता जिसका ये प्रतिनिधित्व करते हैं। उत्तेजक या दर्शनीय तो इनमें कोई वस्तु नहीं है—पार्थेनॉन[1], सिस्टीन चेपल[2], न्यूटन[3], मोज़ार्ट[4], शेक्सपियर वहाँ नहीं है; पर नेपोलियन, हिटलर, जे गोल्ड[5], इंक्विजिशन[6], एन० के० वी० डी०[7], पर्ज[8], पॉगरोम[9], लिंचिंग[10] भी नहीं।

---

१ पार्थेनॉन (Parthenon)—अथेंस मे ज्ञान की देवी पैलस का भव्य मंदिर। ई० पू० ४४२ में इसका निर्माण हुआ था।

२ सिस्टीन चेपल (Sistine chapel)—रेनेसॉस-युग के रोमन गिर्जे।

३ न्यूटन (१६४२-१७२७)—पृथ्वी की आकर्षण-शक्ति का सिद्धांत स्थापित करने के लिए प्रसिद्ध।

४ मोज़ार्ट (१७३६-६१)—आस्ट्रिया का म्यूज़िक-कम्पोज़र। आठ वर्ष की अवस्था से ही संगीत-कला मे दक्ष।

५ जे गोल्ड (१८३६-६२)—प्रसिद्ध अमेरिकन रेलवे-पदाधिकारी और पूँजीपति। सट्टेबाजी मे अत्यन्त प्रवीण।

६ इंक्विजिशन (Inquisition)—रोमन कैथलिको का धार्मिक न्यायालय।

७ एन० के० वी० डी० (N. K. V. D.)—रूस का गुप्तचर-विभाग।

८ पर्ज (Purge)—रूसी कृषको पर त्रास।

९ पॉगरोम (Pogrom)—ज्यू जाति पर अत्याचार।

१० लिंचिंग (Lynching)—आधुनिक काल मे अमेरिका की निग्रो जाति पर अनाचार।

पतन या प्रगति का उन्हें ज्ञान नहीं, पर बच्चों का लालन-पालन कर सकते हैं, मामूली तौर पर कुछ बुद्धि-ज्ञान भी है और चलते ढंग से अपनी संकुचित सीमा में सब कुछ ठीक है।

इनका एक आदमी दूरबीन उठाकर समुद्र-तट की ओर देखता है जो अब केवल एक-दो मील दूर ही रह गया है। अचानक विस्मय-विमुग्ध हो वह हर्ष-ध्वनि करता है।

"इधर देखना, पहाड़ की चोटी पर।" दूर-दर्शक यन्त्र वह अपने एक साथी की ओर बढ़ा देता है।

दूसरा व्यक्ति आँखे गड़ा कर इधर ध्यान देता है।

छोटी पहाड़ियों का टेलिस्कोपिक चित्र सामने है। पहाड़ी की सब से ऊँची चोटी पर तैल ढोने की तीन विशाल मशीनें आकाश से सटी-सी दिखाई पड़ती हैं।

"तैल!" दर्शक चकित होकर उत्साह के साथ चिल्ला पड़ता है, "और मशीनें अब भी पड़ी हैं।"

"मशीने?"

सब आश्चर्यित हो एक-दूसरे की ओर देखने लगते हैं।

"इसका तो यह अर्थ हुआ"—भू-गर्भ-शास्त्र-वेत्ता (Geologist) प्रोफेसर फ्रैंगी कहने लगे—'कि इधर कोई विस्फोट नहीं हुआ।"

"विस्फोट की आवश्यकता ही क्या है", उनके साथी जो बीज पदार्थ-विज्ञान (Nuclear Physics) विभाग में

प्रोफेसर थे, बोले—"रेडियम-संचालित गैस से यह काम बड़ी सफलता के साथ और काफी बड़े पैमाने पर किया जा सकता है।"

"आप जल, वायु आदि के सूक्ष्म कीटाणुओं (Bacteria) और विषैले तत्वों (Viruses) को भूल रहे हैं"—बीच ही में जीव-विज्ञान-वेत्ता (Biologist) प्रो० ग्रेम्पीयन बोल उठे। उनकी आवाज़ उस व्यक्ति की सी थी जिसकी मानों उपेक्षा की गई हो।

उनकी युवा पत्नी मानव शरीर-रचना के शास्त्र में विशेषज्ञ (Anthropologist) थी। बहस में योग देने योग्य तो उसके पास कोई युक्ति थी नहीं, अतः आग्नेय दृष्टि से पदार्थ विज्ञान-वेत्ता की ओर देखकर ही उसने संतोष कर लिया।

वनस्पति-विज्ञान (Botany) विभाग की मिस एथेल हुक से भी चुप नहीं रहा गया। उसके स्वस्थ शरीर पर ट्वीड के वस्त्र थे, चश्मे के अन्दर प्रतिभा से आंखें चमक रही थीं। उसने पौधों की बीमारी और उसके संक्रामक रूप की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित किया। अपनी बात की पुष्टि के लिए वह अपने साथी डा० पूल की ओर देखने लगी। डा० ने सिर हिलाकर उसका समर्थन किया।

गम्भीरतापूर्वक प्रोफेसर के लहजे से डा० पूल बोले—"पौधों की बीमारी का परिणाम अन्त में बहुत ही घातक सिद्ध

होता है। जिन वस्तुओं से विश्वव्यापी रोगों को प्रश्रय मिलता है, उनसे कम घातक नहीं। और यह बीमारी अत्यन्त संक्रामक होती है। उदाहरण के लिए आप आलू ही लीजिये......"

'लेकिन इस वस्तु के लिए उदाहरण देने की क्या आवश्यकता है?"—बात काटते हुए उनके साथी इंजीनियर डा० कडवर्थ ने कहा—"पौधों को पानी देना बन्द कर दीजिये, एक सप्ताह में बात खत्म होती है। न रहेगा बॉस न बजेगी बॉसुरी।" अपने परिहास से प्रसन्न हो वे ठहाका मार कर हँस पड़े।

इस समय तक मनोविज्ञान के आचार्य डा० स्नीगलॉक उपेक्षा भाव से सब कुछ सुनते हुए मुस्करा रहे थे। वे बोले—

"आप सिंचाई की भी चिन्ता क्यों करते है? अपने पड़ोसी को विनाशकारी विध्वंस के हथियारों का नाम लेकर डरा दीजिए। शेष कार्य भय की वृत्ति स्वयं कर देगी। मनोविज्ञान से क्या नहीं हो सकता? उदाहरण के लिये न्यूयार्क वाली घटना ही लीजिये। रेडियो से खतरे की खबर मिली, अखबारों में धूम हुई और आठ मिलियन लोगों में भगदड़ मच गई। एक-दूसरे पर गिरते-पड़ते लोग भाग रहे हैं। कुछ गॉवों की ओर दौड़ रहे हैं—टिड्डियों की तरह या प्लेग के चूहों की तरह। इन्होंने पानी गंदा कर दिया, मियादी बुखार, डिपथेरिया और यौन-रोगों का प्रचार किया। लूटना, काटना,

मारना, अत्याचार-व्यभिचार—यही इनकी चर्या हो गई। कुछ नहीं मिला तो मरे हुए कुत्तों और बच्चों के शव से पेट भर लिया। किसान उन पर गोली चलाता है, पुलिस उन पर लाठी का प्रहार करती है, मशीन-गन से फौज उन्हें भूनना चाहती है। ऐसी घटनाएँ यहीं नहीं हो रही हैं—शिकागो, डेट्राइट, फिलाडेल्फिया, वाशिंगटन, लंदन, पेरिस बम्बई, शंघाई, टोकियो, मास्को, कीव, स्टालिनग्राड,—प्रत्येक राजधानी, प्रत्येक व्यापार का केन्द्र, प्रत्येक बन्दरगाह, प्रत्येक रेलवे जंक्शन—संसार में सभी जगह यही हो रहा है। तो आप देखते हैं न, एक गोली चली नहीं और सभ्यता का विनाश होने लगा। सैनिकों को बम फेंकने की आवश्यकता ही क्यों पड़ी, मेरी समझ में यह बात नहीं आती।"

निर्देशक

प्रेम भय को दूर करता है; पर इसके विपरीत भय भी प्रेम को दूर कर देता है। और प्रेम ही नहीं, भय से बुद्धि भी नष्ट हो जाती है; सत्य, शिव और सुन्दर के भाव भी कुचल जाते हैं। शेष रह जाता है व्यक्ति का निस्पंद या प्रयास-सिद्ध रसिकता का वह निराश रूप जिसे घर के कोने में घृण्यमयी वस्तु की स्थिति का ज्ञान है और जिसे यह भी मालूम है कि घर के दरवाज़े बंद हैं और उसमें खिड़की कोई भी नहीं। एक छाया उसकी ओर बढ़ती है। उसकी बाँह पर किसी के

हाथ का स्पर्श होता है। उसकी साँस की दुर्गंध से वह नाक सिकोड़ने लगता है। गले में फंदा डालने वाली की सहायिका सप्रेम उससे कहती है—"मेहरबान, ज़रा इधर आ जाइए। आपका नम्बर बाद में।" एक क्षण में पुरुष का शाँत भय उग्र क्रोध में बदल जाता है, पर व्यर्थ। वह तो मनुष्य नहीं रहा, उसमें विवेक कहाँ, और जिन लोगों के बीच वह पड़ा हुआ है उनमें भी विवेक कहाँ? वह तो उस लोलुप पशु की तरह है जो क्रोध में अपने चारो ओर पड़े हुए जाल को चिथड़े-चिथड़े कर डालना चाहता है। अन्त में यह भय मनुष्यता को भी कुचल देता है। मित्रों, यह भय ही आधुनिक जीवन की आधार-शिला है—टेकनालॉजी (technology) का भय जो एक ओर तो हमारे रहन-सहन को ऊँचा उठाना चाहती है, किन्तु दूसरी ओर हमारे विनाश की संभावनाओं को गति देती है; विज्ञान का भय जो एक हाथ से हमें कुछ वरदान देकर दूसरे हाथ से अधिक अभिशाप दे रहा है; उन संस्थाओं का भय जिनके प्रति हमारी श्रद्धा की तन्मयता मरने-मारने के लिए हमें सदा तैयार रखती है; उन महापुरुषों का भय जिनको हमने अक्षय शक्ति दी है और जो उसका लाभ उठा हमें गुलाम बनाते हैं और मौत के घाट उतारते हैं; युद्ध का भय जिसे हम नहीं चाहते पर जिसके लिए हम सब तरह के साधन जुटाते रहते हैं।

निर्देशक के शब्दों के साथ-साथ दोनों आइंस्टीनों पर प्रकाश पड़ता है। लंगूर खुली हवा में पिकनिक का आनन्द ले रहे हैं। उत्साह के साथ वे खाने-पीने में लगे हुए हैं। 'ओ क्रिश्चियन सैनिक, तू आगे बढ़े जा' की कड़ियाँ बार-बार गूँज रही हैं। सहसा भयकर विस्फोट होता है और संगीत की ध्वनि डूब जाती है। चारों ओर अँधकार छा जाता है। देर तक रोने-बिलखने, चीखने की आवाज सुनाई देती है। फिर सन्नाटा छा जाता है। धीरे-धीरे प्रकाश की किरणें छिटक जाती हैं। एक बार फिर सूर्योदय से पूर्व की वेला। प्रभात की तारिका जगमगा उठती है। संगीत का स्निग्ध स्वर सुनाई देता है।

निर्देशक

अनन्त विपुल सौन्दर्य, अखिल शांति ··

सुदूर अंतरिक्ष से नीचे एक प्रकार का लाल धुआँ ऊपर की ओर उठ रहा है। विराट् कुकुरमुत्ता की आकृति में फैल कर आकाश में अचल हो वह एकाकी ग्रह को निगल जाता है।

पिकनिक के दृश्य पर प्रकाश। लंगूरों के शव पड़े हैं। बुरी तरह जले हुए दोनों आइंस्टीन किसी समृद्ध सेव-वृक्ष के ध्वंस के पास पड़े हैं। निकट ही एक 'प्रेशर टैंक' अब भी 'विकसित ग्लैंडर्स' का दमन कर रहा है।

प्रथम आइंस्टीन—

यह ठीक नहीं—अनुचित है......

दूसरा आइंस्टीन—

हमने तो कभी किसी का बुरा नहीं किया......

प्रथम आइंस्टीन—

हमारा जीवन तो सत्य को अर्पित था।

निर्देशक

'और ठीक इसीलिए इन लंगूरों की घातक सेवा तुम कर रहे हो। पेस्कल[1] ने तीन सौ वर्ष पूर्व ठीक ही कहा था—"हम सत्य की एक मूर्ति बना लेते हैं। दया-करुणा के बिना सत्य ईश्वर नहीं, वह उसकी जड़ मूर्ति है, जिससे न तो हमें प्यार ही होना चाहिए और न भक्ति।" तुम लोग इस जड़ मूर्ति की आराधना के अर्थ जीवित थे। प्रत्येक मूर्ति अन्त में मोलक[2] का रूप है—उसे बलिदान प्रिय है। तुम्हारी इस स्थिति का यही कारण है।'

हवा के झोंके से धुएं का कुहरा जो आकाश से चिपका हुआ था, फैलने लगता है। उसका विवर्ण रूप लंगूरों पर छाता हुआ दोनों आइंस्टीनों को अपने अँधकार में निगल लेता है।

---

१. पेस्कल (Pascal) (१६२३-६२) फ्रेंच दार्शनिक और गणितज्ञ।

२. मोलक (Moloch) पतित देव (Fallen Angel)। शैतान का सहकारी। छोटे-छोटे बच्चों की इसे बलि दी जाती थी।

मौत की कराह में बीसवीं सदी के विज्ञान के आत्मघात की सूचना मिलती है।

लॉस एंजेलिस से लगभग बीस मील पश्चिम की ओर दक्षिणी कैलिफोर्निया के तट पर एक स्थान पर हम दृष्टि डालते हैं।

'अमेरिका-पुनर्आविष्कार अभियान-संस्था' के वैज्ञानिक एक नाव के सहारे किनारे उतरने की क्रिया में लगे हुए हैं। पृष्ठ-भूमि में एक विशाल नद दिखाई देता है जो संगम के पास कई नालों में टूट कर बिखरा पड़ा है।

निर्देशक

पार्थेनॉन[1], कॉलिज़ियम[2]—
ग्रीस के गौरव की भव्यता—
गरिमा के अन्य बहुल केन्द्र—
थीबिज़[3] औ' कोपन, अरेज़ो[4] व अजन्ता,

---

१. पार्थेनान—अथेंस में विद्या की देवी का भव्य मंदिर।

२. कालिज़ियम (Coliseum)—रोम का विशाल भवन जिसे प्राचीन युग में सम्राटों ने बनाया था। इस स्थान पर खेल-कूद और दंगल हुआ करते थे।

३. थीबिज़ (Thebes) ग्रीस के प्राचीन बीटिया प्रदेश की राजधानी।

४. अरेजो (Arezzo) इटली का प्राचीन समृद्ध नगर।

बूर्जे[1] जिससे आतंकित स्वर्ग की शक्ति।
साम्राज्ञी विक्टोरिया की कीर्ति,
अमल, धवल, उज्ज्वल, उन्नत—
फ्रेंकलिन[2] डेलानो की महिमा महान्,
अखिल विश्व में ज्योतिर्मय—
आज उदास, म्लान, हतप्रभ।
समुद्र के विजन तट पर,
शून्यता, भयावहता का विस्तार।

इस समय तक डा० क्रैगी की अध्यक्षता में वैज्ञानिक समुद्र-तट को पार कर चुके हैं। वे पथरीली चढ़ाई पार कर रेतीले बंजर मैदान के परे पहाड़ी पर स्थित तैल-कूपों की ओर बढ़ रहे हैं।

संस्था के प्रमुख वनस्पतिविज्ञान-वेत्ता डा० पूल पर प्रकाश। घास-फूस चरती हुई भेड़ की तरह वे एक पौधे से दूसरे पौधे की ओर बढ़ रहे हैं। वृहण-यंत्र (Magnifying glass) की सहायता से वे फूलों की जाँच कर उनके नमूने एक छोटे से बक्स में रखते जाते हैं और साथ ही अपनी छोटी सी नोट-बुक में कुछ टिप्पणी भी लिख देते हैं।

---

१. बूर्जे (Bourges) फ्रांस का प्राचीन शहर। युद्ध-नियंत्रण की दृष्टि से प्रमुख स्थान।

२. फ्रेंकलिन डेलानो—रूज़वेल्ट।

निर्देशक

यह है हमारा नायक, डा० अल्फ्रेड पूल, डी० एस० सी०। अपने विद्यार्थियों और छोटी अवस्था के साथियों में वह रुद्ध-प्रवाह (Stagnant) पूल के नाम से अधिक प्रसिद्ध है। इस नामकरण में बड़ी कटु सार्थकता है। यद्यपि वह असुन्दर नहीं, न्यूजीलैंड की रॉयल सोसायटी का फेलो (Fellow) भी है, तथापि व्यावहारिक जीवन में उसका बुद्धि-ज्ञान संभाव्य-मात्र है और शारीरिक आकर्षण निष्क्रिय भर। ऐसा लगता है मानों उसका अस्तित्व किसी ग्लास-प्लेट के पीछे हो—उसे देखा जा सकता है, पर उससे सम्बन्ध नहीं स्थापित किया जा सकता। अगर आप मनोविज्ञान-विभाग के प्रधान डा० स्नीगलॉक से इसका कारण पूछें तो वे आपको बतावेंगे कि इसका मूल डा० पूल की माँ है जिसके अपने जीवन के स्रोत सूख गए हैं, जो जीवन के रस से वीतराग हो साधुता, सहिष्णुता और पिशाच की छाया बनी हुई है, जो अब भी अपने लड़के की टेबुल पर भोजन के समय प्रमुख स्थान ग्रहण करती है, उसके रेशमी कमीजों को धोती है और उसके मोजों को रफ कर देती है।

मिस हुक पर प्रकाश। उत्साह से वह डा० पूल की ओर बढ़ती है।

"कितनी विचित्र बात है?" वह कहती है।

"अवश्य।" डा० पूल ने शांत भाव से उत्तर दिया।

"यूका ग्लोरियोसा (Yucca Gloriosa) को अपने उचित स्थान पर उगा हुआ देख कर भी यह कौन सोचेगा कि संयोग से यहाँ अन्य पौधे भी मिल जावेंगे, और आर्टेमिसिया ट्रिडेंटाटा (Artemisia Tridentata) भी।"

"आर्टेमिसिया के तो अब भी फूल निकलते हैं।" डा० पूल ने कहा—तुम्हे इनमें कुछ अजीब सा दिखाई देता है ?"

मिस हुक ध्यान से देख कर सिर हिलाती है।

"पुरानी किताबों में जो विवरण मिलता है उसके विपरीत ये फूल अधिक बड़े हैं।" अपनी उत्तेजना को दबा डा० पूल ने धीरे से कहा।

"बड़े ?" उसका मुँह चमक उठता है। "अल्फ्रेड, तुम यह तो नहीं सोचते"—डा० पूल सिर हिलाता है।

"मैं दावे से कह सकता हूँ, यह गामा-किरणों का प्रभाव है।"

"ओह अल्फ्रेड !" प्रसन्नता के आवेश से वह चिल्ला उठती है।

निर्देशक

ट्वीड के वस्त्रों और सुन्दर फ्रेम के चश्मे में एथेल हुक भली लग रही है—वह एक अत्यत स्वस्थ, अत्यन्त योग्य और पूर्णतः अँग्रेजी स्वभाव की लड़की है। ऐसी लड़की को अपने अनुरूप वर न मिले तो शायद वह विवाह करना ही पसन्द न

करे। शायद यही कारण है कि ३५ वर्ष की अवस्था होने पर भी एथेल कुमारी है। अभी तक तो उसे कोई पति मिला नहीं, पर उसे आशा है, निकट-भविष्य में वह विवाह कर लेगी। यद्यपि अल्फ्रेड ने आज तक तो उससे विवाह का प्रस्ताव नहीं किया है, पर उसे मालूम है, वह अपनी स्नेहमयी जननी की इस एकांत मधुर इच्छा की अवहेलना नहीं कर सकेगा। वह एक आज्ञाकारी लड़का है, अल्फ्रेड स्वयं इसे जानता है। और फिर कितनी ही बातों में, उनके विचारों में साम्य है, मेल है—वनस्पति-विज्ञान, विश्व-विद्यालय, वर्ड्सवर्थ की कविता। उसे विश्वास है, ऑकलैंड लौटने से पूर्व सब कुछ ठीक हो जायगा—विवाह-कार्य, दक्षिण ऑल्पस् के रमणीय क्रोड़ में आनन्द के मधुर दिन-रात और घर पहुँचने पर कुछ समय पीछे प्रथम संतान..

अन्य साहसिकों पर प्रकाश-पुंज पड़ता है। वे पहाड़ी पर तैल-कूपों की ओर परिश्रम के साथ बढ़ रहे हैं। उनके नेता प्रो० क्रैगी माथे से पसीना पोंछने कुछ देर रुकते हैं और अपने सहयोगियों पर एक सरसरी निगाह डालते हैं।

"पूल किधर गया ?" उन्होंने प्रश्न किया—"और एथेल हुक ?"

कोई व्यक्ति एक ओर संकेत करता है। प्रकाश की गहरी

रेखा में पीछे, बहुत दूर, वनस्पति-विज्ञान-वेत्ताओं की मूर्तियाँ दिखाई पड़ती हैं।

प्रो० क्रैगी पर प्रकाश। मुँह पर दोनों हाथ लगा वे डा० पूल को आवाज़ देते हैं।

"कुछ देर प्रेम-रसिकता के लिए आप उन्हें छोड़ क्यों नहीं देते ?" विनोदी स्वभाव के कडवर्थ ने कहा।

"प्रेम-रसिकता"—घृणा से डा० स्नीगलॉक की नाक चढ़ गई।

"वह लड़की स्वयं उसकी ओर स्निग्ध है।"

"पर रोमांस के लिए भी दो चाहिएं।"

"स्त्री में विश्वास कीजिए कि वह पुरुष से विवाह की चर्चा करवाए।"

"डा० पूल के बूते तो यह हो चुका..." "डा० स्नीगलॉक ने ज़ोर देकर कहा।

प्रो० क्रेगी ने एक बार फिर पूल को आवाज़ लगाई। अपने साथियों की ओर मुड़ कर वे फिर कहने लगे—"इस तरह लोगों का पिछड़ना मुझे अच्छा नहीं लगता।" कुपित स्वर में उन्होंने कहा—"अनजान देश है, न जाने क्या हो? आप कुछ नहीं कह सकते हैं।"

वे फिर पुकारने लगते हैं।

डा० पूल और मिस हुक पर प्रकाश। प्रो० क्रैगी की आवाज़

उनके कानों में पड़ती है। दूरदर्शक यन्त्र से उस ओर देख और हाथ का इशारा कर वे चलने लगते हैं। अचानक डा० पूल की नजर किसी चीज़ पर पड़ती है और वह चिल्ला उठता है—"देखना"—अँगुली से वह एक ओर संकेत करता है।

"क्या है यह ?"

'ऐकिनो कैक्टस-हेक्सी ड्रोफोरस (Echino cactas hexaedrophorus)—कितनी उत्कृष्ट जाति का कैक्टस है !"

किसी मकान के खंडहर पर मध्यम प्रकाश। सामने के दरवाज़े के पास दो-चार जड़े हुए पत्थरों की दरारों में कैक्टस उगा हुआ है। अपने चमड़े के बटुए से जो बैल्ट से बँधा हुआ है, वह एक छोटी सी कुल्हाड़ी के आकार की कर्णी निकालता है।

"तुम इसे उखाड़ने पर तो नहीं तुले हो ?"

उत्तर में डा० पूल कैक्टस के पास जा पलथी मार कर बैठ जाता है।

"देखना, प्रो० क्रैगी चिढ़ जावेंगे।" मिस हुक उसके काम में बाधा पहुँचाने की कोशिश करती है।

"तुम आगे जाकर उन्हें मना लो।"

विनय भाव से कुछ क्षण वह उसकी ओर देखती है।

"अल्फ्रेड, तुम्हें अकेले मैं नहीं छोड़ सकती।"

"ऐसी बातें करती हो जैसे मैं पांच वर्ष का बच्चा हूं।" वह

तिनक उठता है—"तुम आगे चलो, मैं कहता हूँ।"

मिस हुक तुरन्त ही आज्ञा नहीं मान लेती; वह खड़ी रह कर कुछ देर चुपचाप उसकी ओर देखती है।

निर्देशक

ट्रेजेडी वह प्रहसन है जिसमें हमारी सहानुभूति संयुक्त है; प्रहसन वह ट्रेजेडी है जो दूसरों के साथ घटती है। हास-परिहास, चुहल-विनोद से संयुक्त हुक का चरित्र एक ओर व्यंग्य का पात्र है और दूसरी ओर जीवन के अंतरङ्ग कार्य-कलाप का भी विषय है। अस्त होते हुए सूर्य की ज्वलंत दीप्ति उसने कई बार देखी है, ग्रीष्म की स्निग्ध, मदिर रातों का उसे अनुभव है, वसंत के मधुर अनुराग-रंजित दिनों की स्मृति उसके हृदय में संचित है। कितनी ही बार उसके हृदय में भावनाओं ने अँगड़ाई ली, आकर्षण ने उसे प्रलोभन दिया, लालसा ने स्पंदित किया, निराशा ने तिरस्कार किया। और अब इतने वर्षों के बाद, जब कि वह न जाने कितनी कमिटी-मीटिंग में उपस्थिति साध चुकी थी, कितने भाषण दे चुकी थी, परीक्षा की कितनी ही कापियाँ जांच चुकी थी, ईश्वर ने किसी रहस्य-मय रूप में उसके हृदय में दुःखी-असहाय के लिये संवेदना की भावना उत्पन्न कर दी। डा० पूल असहाय और दुखी है, इसलिये वह उससे प्रेम करने लगी। उसके प्रेम में वह भावुकता नहीं जैसी उसने एक वार उस व्यक्ति के प्रति दिख-

लाई थी, जिसके घुँघराले बाल थे, जिसने उसकी निष्ठा को भी डिगा दिया था और जिसने अन्त में एक धनी ठेकेदार की लड़की से विवाह कर अपना रास्ता लिया था। पर डा० पूल के प्रति उसके प्रेम में सच्चाई है और साथ ही अभिभावक की संकल्पात्मक कोमलता।

"अच्छी बात है". अंत में उसने कहा—"मैं जाती हूँ, पर तुम तो देर नहीं करोगे न ?"

"देर कैसे होने दूँगा !"

मिस हुक धीरे-धीरे अनमने भाव से चली जाती है। डा० पूल उसकी ओर देखता है और अपने को अकेला पा आराम की हल्की-सी साँस ले खोदने में लग जाता है।

निर्देशक

'असंभव'—वह अपने आप कहता है—"यह नहीं हो सकता—माँ कुछ भी क्यों न कहे।" वनस्पति-विज्ञान में मिस हुक दक्ष है, तो वह उसका आदर करता है; उस में संगठन करने की शक्ति है, तो वह उस पर विश्वास करता है; वह उन्नत विचारों की स्त्री है, तो वह उसकी प्रशंसा करता है; पर यह विचार ही उसके लिये भयावह है कि वे दाम्पत्य-सूत्र में बँध जाँय।

अचानक उस खँडहर से तीन व्यक्ति निकलते हैं—फटे-हाल, भीषण, दुष्ट प्रकृति, भयङ्कर काली दाढ़ी। एक क्षण वे

डा० पूल को देखते हैं जो बिना किसी दुष्कल्पना के अपने काम में मग्न है और फिर एक साथ वे उस पर टूट पड़ते हैं। डाक्टर चिल्लाने की कोशिश करता है तो उसके मुँह में वे कपड़ा ठूंस देते हैं और हाथ पीछे की ओर मोड़कर बाँध देते हैं। घसीट कर अपने बन्दी को वे नाली में ले जाते हैं जिससे कि उसके साथी उसे देख न सके।

आकाश में पचास मील की ऊँचाई से दक्षिणी कैलिफोर्निया का एक विशद् चित्र हमारे सामने है। प्रकाश का पुंज जैसे-जैसे नीचे की ओर घनीभूत हो रहा है, निर्देशक की आवाज स्पष्ट होती जा रही है।

निर्देशक

समुद्र और बादलों का वितान,
श्यामल-स्वर्णिल पर्वत माला,
नीलवर्णा अंधकार में डूबी उपत्यका,
अनावृष्टि से पीड़ित बजर मैदान,
कंकड़ औ' रेत-राशि में नदी का लेश —
आज देवों के नगर का यही रूप।
पाँच लाख सूने मकानों का समूह,
पाँच हजार मील का सड़कों में विस्तार,
डेढ़ करोड़ मोटरों की संख्या,

एक्रन[1] से अधिक प्राप्य रबर की वस्तुएँ,

रूस से अधिक सेलुलॉयड,

बफालो[2] से अधिक स्तन-परिधान,

और सुन्दर-स्वस्थ बालाएँ—

उन्नत स्तन, विशाल वक्ष ।

पश्चिम का यह है महान् 'देव-नगर' ।

पृथ्वी से अब हम केवल पाँच मील की दूरी पर हैं। ऐसा लगता है मानों यह विशाल नगरी प्रेतात्माओं की बस्ती हो। संसार की किसी दिन जो अत्यन्त रमणीय नगरी थी, अब खंडहरों का उजाड़ समूह है। रास्तों में बालू के टीले हैं। खजूर और गोल मिर्च के पेड़ों की बीथियों के तो चिह्न भी नहीं रह गये।

हालीवुड और विलशायर बुलवार्ड के लौह-दृढ़ टावरों के बीच विस्तृत चतुर्भुजाकार क़ब्रिस्तान पर प्रकाश पड़ता है। धनुष की तरह तने हुए अर्द्ध-चन्द्राकार दरवाजे को पार कर हम श्मशान के उजड़े दृश्य को देखते हैं। एक छोटा पिरामीड, एक

---

१ एक्रन (Akron) अमेरिका के ओहियो स्टेट मे एक व्यापारिक शहर।

२ बफालो (Buffalo) एरी झील पर स्थित अमेरिका का एक व्यावसायिक नगर।

गॉथिक[1] संतरी-बॉक्स, एक संगमरमर-निर्मित क़ब्र जिस पर विषादपूर्ण देव-प्रतिमाएँ। हेडा बॉडी की विशाल प्रतिमा, जिसकी प्रस्तर-पीठिका पर खुदा हुआ है—

"जनता के विमुग्ध हृदयों की अद्वितीय रानी।"

अत्यन्त सुन्दर मूर्ति।

हम रुक कर आगे बढ़ते हैं। अचानक इस भयावह सूनेपन में कुछ आदमियों की बोली सुनाई पड़ती है। चार आदमी हैं; उनकी दाढ़ी घनी है और कपड़े आवश्यकता से कुछ अधिक गंदे। दो जवान औरतें भी हैं। सब के हाथों में फावड़े हैं और वे खोदने में व्यस्त हैं। कपड़े घर के कते-बुने हैं और अब फट चले हैं। वेश-भूषा सब की एक सी है—वही शर्ट और वही ट्राउज़र। अपने खुरदुरे कपड़ों के ऊपर वे एक छोटा चौकोर एप्रन पहने हैं; इस एप्रन पर लाल ऊन के कसीदे से एक शब्द जड़ दिया गया है—'निषेध'। इस एप्रन के अतिरिक्त युवतियों के वक्ष-स्थलों पर दो वृत्ताकार टुकड़े हैं और ऐसे ही दो टुकड़े जो पहले वालों से कुछ बड़े हैं, कटि के नीचे, पीछे की ओर ट्राउज़र के साथ सिले हुए हैं। इन सब पर भी वही शब्द है—'निषेध'। जब ये बालाएँ हमारी ओर आती हैं तो तीन निश्चयात्मक 'निषेधों' के साथ हमारा स्वागत

---

१ गॉथिक—स्थापत्य-कला का एक विशिष्ट रूप जो १२ वीं और १६ वीं शताब्दियों के बीच पश्चिमी यूरोप में अत्यंत प्रचलित था।

करती हैं और जब लौटती हैं तो 'निषेधों' के दो चिह्न दिखाती हुई चली जाती हैं।

निकट ही एक विशाल क़ब्र है जिसकी छत पर लगभग पैंतालीस वर्ष की अवस्था का एक दृढ़, सुगठित, दीर्घकाय व्यक्ति बैठा हुआ है। मज़दूरों की ओर उसका मुँह है। आँखें तीक्ष्ण और काली, नाक सीधी और नुकीली। दाढ़ी के काले घुँघराले केश भरे हुए ओठों की लालिमा और तरलता को उभार रहे हैं। शरीर को देखते हुए वस्त्र कुछ बेढंगे हैं। मध्य-बीसवीं सदी के फ़ैशन का छोटा-सा हल्के भूरे रंग का सूट वह पहने है। बैठा हुआ वह अपने नाखून कुरेच रहा है।

क़ब्र खोदने वालों पर प्रकाश। उनमें जो अवस्था में सब से कम और सुन्दरता में सब से अधिक है, फावड़े की गति से अवकाश ले छत पर बैठे हुए नेता की ओर आँखें चुरा कर देखता है। नेता को नाखूनों में व्यस्त देख अपनी निकटवर्त्ती स्थूल लड़की पर वह प्यार से छलकती दृष्टि डालता है। लड़की फावड़े पर झुकी हुई है और उसके दो निषेधात्मक धब्बों पर प्रकाश पड़ता है। 'निषेध' के वर्तुलाकार चिह्न प्रकाश की रश्मियों में विशद होते जा रहे हैं, उसकी कल्पना की विशदता की तरह। आलिंगन-पाश में बद्ध करने के लिये आतुर हाथ रुक-रुक कर, हिचक-हिचक कर आगे बढ़ रहे हैं। सहसा, मानों प्रलोभन पर विवेक ने विजय पा ली हो, बढ़े हुए हाथ

किसी अज्ञात शक्ति के झटके से पीछे खिंच जाते हैं। ओठों को चबाता हुआ, युवक मुड़कर दुगने उत्साह से खोदने में लग जाता है।

कुल्हाड़ी अचानक किसी कड़ी चीज़ से टकराती है। हर्षातिरेक से वे चिल्लाने लगते हैं—आनन्द की ध्वनि गूँज उठती है। एक क्षण के अनन्तर मेहगॉनी की सुन्दर लकड़ी से निर्मित शव रखने की संदूकची वे क़ब्र से बाहर निकालते हैं।

"इसे खोल कर देखो।"

"जैसी आज्ञा, श्रीमान्।"

लकड़ी के टूटने-चीरने की आवाज़ होती है।

"आदमी है या औरत?"

"आदमी।"

"ठीक, बाहर फेंको।"

ज़ोर लगाकर लकड़ी की संदूकची वे पलट देते हैं, शव मिट्टी में औंधा गिरता है। क़ब्र खोदने वालों में जो सब से अधिक वयस्क है घुटनों के बल बैठता है। निपुणतापूर्वक शव की घड़ी और उसके आभूषण सहेज वह उसे छुट्टी देता है।

निर्देशक

'गोल्डन रूल ब्र्यूइंग कॉरपोरेशन' (Golden Rule Brewing Corporation) के मैनेजिंग डाइरेक्टर के शव में इस समय भी इतनी ताज़गी है मानों कल ही उसकी मृत्यु हुई

हो। सूखी जलवायु और शव को सुरक्षित रखने की कला का ही यह कौशल है। शव को संदूकची (Coffin) में रखते समय गालों पर जो रूज (Rouge) रगड़ दिया गया था उसका गुलाबीपन अभी भी बना हुआ है। ओठों के स्फुटित कोनों पर खिंचा हुआ अचल स्मित हास्य सुन्दर गोल मुँह पर बॉलट्रे-फियो की मेडोना[१] की तरह अर्थपूर्ण लक्षित होता है।

अकस्मात् घुटनों के बल बैठे हुए क़ब्र खोदने वाले व्यक्ति पर चाबुक का निर्मम प्रहार होता है। प्रकाश दल के नेता पर पड़ता है। उसके हाथ में चाबुक है और साक्षात् 'प्रतिशोध' के अवतार की तरह वह अपने ऊँचे आसन पर बैठा हुआ है।

"अँगूठी बाहर निकालो।"

"कौन सी अँगूठी ?"—आदमी की आवाज़ लड़खड़ाती है। प्रत्युत्तर में नेता चाबुक के दो-तीन वार करता है।

"नहीं, नहीं, दया करो ! ओह ! यह रही अँगूठी।"

अपराधी अपने मुँह में दो अँगुलियाँ डाल रत्न-जटित सुन्दर अँगूठी बाहर निकालता है। मृत व्यक्ति ने द्वितीय महा-युद्ध के समय अपने व्यापार की समृद्धि पर यह अँगूठी खरीदी थी।

---

१ मेडोना (Madona)—इस शब्द का शाब्दिक अर्थ है, मेरी देवी (My Lady)। तात्पर्य ईसा की माता मेरी से है। देवी मेरी को मूर्ति और चित्रकला मे अनेक प्रकार से अभिव्यक्ति देने का प्रयत्न कलाकारों ने किया है।

"अन्य वस्तुओं के साथ इसे रखो।" नेता की आज्ञा चुपचाप पालन की जाती है। —"पच्चीस चाबुक", —विकट आनंद-भाव से वह कहता है—"यही दण्ड आज तुम्हें मिलने वाला है।"

अपराधी सिसकते हुए क्षमा-याचना करता है। कल पुनीत 'शैतान-दिवस' (Belial Day) है .. वह वृद्ध भी हो गया है..... सारी उम्र उसने ईमानदारी के साथ काम किया है. अब वह उप-निरीक्षक के पद तक पहुँचा है।

नेता बीच ही में उसकी बात काट देता है।

"यह प्रजातन्त्रवाद है, कानून की दृष्टि में सब बराबर हैं। कानून की आज्ञा है कि सारी सम्पत्ति प्रोलिटेरिट (Proletariat) की है, दूसरे शब्दों में राष्ट्र की है। और राष्ट्र को धोखा देने की क्या सजा हो सकती है ?" अपराधी मूक व्यथा के साथ नेता की ओर देखता है। "क्या सजा है उसकी ?" नेता कड़क उठता है और चाबुक उसके हाथ में उछलने लगता है।

"पच्चीस चाबुक" मरी हुई आवाज में उसके मुँह से उत्तर निकलता है।

"ठीक, यही निश्चित है। क्यों ? —और, देखो, कपड़े कैसे हैं उसके ?"

एक अल्प-वयस्क दुर्बल युवती नीचे झुकती है और

अपनी अँगुलियों से शव की डबल-ब्रेस्ट काली जैकेट को टटोलती है।

"कपड़ा ठीक ही है", वह कहती है, "और हालत भी अच्छी है। अभी कटा-फटा भी नहीं है।"

"ख़ैर, मैं देखूँगा।" नेता जवाब देता है।

कुछ कठिनाई से शव के शरीर से कोट, कमीज़, ट्राउज़र आदि उतार लिए जाते हैं, केवल मामूली सा कपड़ा उसके तन पर बचा रहता है। उसे फिर क़ब्र में डाल मिट्टी उड़ेल दी जाती है। नेता वस्त्रों को उठाता है, तिरस्कृत दृष्टि से उन्हें देखता है, अपनी धवल-धूसरित रंग की जैकेट को उतारता है और फिर आराम से नई जैकेट धारण करता है।

निर्देशक

आप स्वयं अपने आपको उसकी स्थिति में रखकर विचार कीजिये। पहिनने के लिए सुन्दर, कोमल, भले कपड़े कहाँ से मिलें? सब कुछ तो लुप्त हो गया। वे बड़ी-बड़ी मशीनें जो दिन-रात चला करती थीं, वे शक्तिशाली डाइनेमों जो बिजली पैदा करते थे, वे भीमकाय जल-चक्कियाँ जो डाइनेमों संचालित करती थीं, वे कोयले के आगार जो स्टीम उत्पन्न करते थे, वे धधकते अग्नि-कुंड जो स्टील का निर्माण करते थे—सब गायब हो गए। फैन्सी कपड़े दिखाई कहाँ से पड़ें? और अगर फैन्सी कपड़े ही चाहिये तो उन लोगों की क़ब्रों पर विश्वास

कीजिए जिन्हें किसी दिन ये सुविधायें प्राप्त थीं। जब तक रेडियम की शक्ति संहार में लगी थी, क़ब्रों से भी लाभ नहीं उठाया जा सका। तीन पीढ़ियों तक मनुष्य जाति के कुछ लोग जो विज्ञान की भयंकरता से अपना उद्धार कर सके, जंगलों में अनिश्चित अवस्था में पड़े रहे। केवल पिछले तीस वर्षों में उन लोगों के लिए यह संभव हो सका कि कब्र खोदकर बची-खुची सौंदर्य-प्रसाधन की वस्तुएँ वे काम में लावें।

नेता पर प्रकाश पड़ता है। दूसरे व्यक्ति की जैकेट में वह अजीब-सा लग रहा है—आस्तीन छोटी और घेरे में बड़ी। अपनी ओर आती हुई कुछ लोगों की पद-ध्वनि उसके कानों में पड़ती है। वह सिर उठा कर उधर ध्यान देता है।

कुछ दूरी पर डा० पूल दिखाई पड़ता है। उसके हाथ पीछे की ओर मोड़कर बाँध दिये गए हैं और भारी कदम रखता हुआ, खिन्न मन से वह चल रहा है—चलने के लिए बाध्य हो रहा है। उसके पीछे तीन व्यक्ति हैं जिन्होंने उसकी दुर्दशा की थी। डा० पूल के पाँव जब कभी लड़खड़ाने लगते हैं अथवा उसकी चाल में कमी आती है, तो ये लोग सूई की तरह नुकीली यूका (yucee) की पत्तियाँ उसके शरीर में चुभोते हैं। डाक्टर के चौंकने पर इनका रौद्र हास्य फूट पड़ता है।

शाँत, चकित दृष्टि से नेता इन लोगों को अपनी ओर बढ़ते हुए देख रहा है।

"शैतान के नाम पर, क्या बात है ?" अन्त में उसे पूछना पड़ता है।

यह छोटा-सा दल मक़बरे के नीचे आकर रुक जाता है। वे तीन व्यक्ति झुककर नेता का अभिवादन करते हैं और फिर उसे सारा किस्सा बताते हैं। वे समुद्र-तट पर मछली पकड़ रहे थे, सहसा उन्हें एक विशाल जहाज़ दिखाई पड़ा--कुहरे को चीरता हुआ वह विचित्र जहाज़ उसी ओर बढ़ा आ रहा था। कोई उन्हें देख न ले, इसलिए वे लोग तुरन्त ही छिप गए। एक खंडहर की आड़ से उन्होंने कुछ अजनबियों को समुद्र-तट पर उतरते देखा। सब मिलाकर वे कोई तेरह व्यक्ति रहे होंगे। यह आदमी एक औरत के साथ घूमता हुआ उनके गुप्त स्थान तक निकल आया। औरत तो वापस चली गई, पर यह स्वयं एक छोटी-सी कुल्हाड़ी ले मिट्टी में कुछ उखाड़ने लगा। अवसर पा वे लोग इस पर टूट पड़े, और हाथ-मुँह बाँध जवाब-तलबी के लिए यहाँ ले आए हैं।

कुछ देर के लिए नीरवता छा जाती है। आख़िर नेता पूछता है—

"अंग्रेज़ी बोल सकते हो ?"

"हाँ, मैं अंग्रेजी जानता हूँ।" रुद्ध-गले से डा० पूल बोला।

"अच्छी बात है, इसके बंधन खोलकर ज़रा ऊँचा उठाओ।"

सरल सहज तरीके से वे डा० पूल को ऊँचा करते हैं—इतना ऊँचा कि वह मुँह के बल नेता के पाँवों के पास गिर पड़ता है।

"तुम पादरी हो क्या ?"

"पादरी ?" भय-मिश्रित आश्चर्य से डा० पूल उसके शब्द को दुहरा देता है—"नहीं, पादरी नहीं हूं।"

"तो दाढ़ी क्यों नहीं रखते ?"

"मैं ·····मैं तो नित्य ही ··"

"ओह ! तब तुम यहाँ के रहने वाले नहीं हो।"—डा० पूल की ठुड्ढी और गाल में अँगुली धँसाते हुए नेता कहता है—"अच्छा, उठो।"

डा० पूल उठता है।

"कहाँ से आ रहे हो ?"

"न्यूजीलैंड से, श्रीमान् ?"

डा० पूल थूक को अन्दर ही अन्दर निगलता है, अच्छा होता कि उसके तालू इतने सूखते नहीं और आवाज़ इतनी भर्राई हुई न होती।

"न्यूजीलैंड, क्या बहुत दूर ?"

"जी हाँ, बहुत दूर।"

"बहुत बड़े जहाज़ से आए हो ? मस्तूल थे ?"

पूल सिर हिलाकर सारी बात स्पष्ट करना चाहता है,

इस ढंग से मानों क्लास में लेक्चर दे रहा हो। पारस्परिक वार्तालाप जब गम्भीर या उसके लिये विषम होने लगता था तो वह लेक्चर के तरीके पर उतर आता था। उसने नेता को बताने की कोशिश की कि स्टीम की सहायता से वे क्यों प्रशाँत-महासागर पार नहीं कर सकते थे।

"प्रशान्त-महासागर में कोयला लेने के लिए उन्हें कोई जगह नहीं मिलती। इसलिए उनके यहाँ की जहाजी-कम्पनियाँ स्टीमर का प्रयोग केवल समुद्र-तट पर व्यापार के लिये ही करती हैं।"

"स्टीमर ?" नेता का मुँह उत्साह से चमकने लगता है। "तुम्हारे यहाँ अब भी स्टीमर हैं ? पर इसका तो यह अर्थ हुआ कि तुम्हारे देश में 'उसका'[1] प्रभाव ही नहीं पड़ा।"

डा० पूल हैरत में पड़ जाता है।

"आप किस चाज़ के प्रभाव के बारे में कह रहे हैं ? मैं ठीक से आपकी बात समझ नहीं पा रहा हूँ।"

"उसीका', जब से 'उसने' सारा भार सम्हाला है।" वह अपने माथे तक दोनों हाथ उठाता है और अँगुलियों को फैलाकर सींग का चिह्न बनाता है। भक्तिपूर्वक उसके अनुयायी उसका अनुकरण करते हैं।

"क्या शैतान ?" डा० पूल संदिग्ध स्वर में पूछता है।

नेता इसे स्वीकार करता है।

---

१. संकेत शैतान की ओर है।

"पर, पर मेरा वास्तविक अर्थ तो—"

निर्देशक

हमारे मित्र में धार्मिक सहिष्णुता तो है, पर काश, वह इतना उदारवादी न होता! इस उदारता का तात्पर्य हुआ कि विश्व की इस महान् सत्ता का अखंड गौरव उसने ठीक से स्वीकार नहीं किया। दूसरे शब्दों में, कटुता तो होगी, पर अर्थ यही होगा कि वह 'उसमें' विश्वास नहीं करता।

"हाँ, उसके हाथ में शक्ति आई, नेता ने उसे समझाया—"उसने युद्ध में विजय प्राप्त की; सब लोगों ने उसकी अधीनता स्वीकार की। यह तभी हुआ जब उन लोगों ने यह सब किया।"

डा० पूल का मुँह चमकने लगता है—बात उसकी समझ में आ रही थी। उसने अपने चारों ओर उजड़े सुनसान का बोध किया।

"अच्छा, अब समझा। आप 'तृतीय विश्व युद्ध' की बात कर रहे हैं। हमारा तो भाग्य ही था कि हम नर-संहार से बचे रहे। हमारे देश की भौगोलिक स्थिति ही ऐसी है।" प्रोफेसर की गरिमा से वह कहने लगा, "युद्ध की दृष्टि से न्यूज़ीलैंड का विशेष महत्व नहीं—"

नेता डा० पूल के लेक्चर को बीच ही में रोक देता है।

"तो तुम्हारे यहाँ अब भी रेलें चलती हैं?"

"क्यों नहीं ?" डा० पूल झुंझला उठता है—"पर मैं बता रहा था—"

"और इंजिन क्या सचमुच काम करते हैं ?"

"इसमें भी क्या संदेह है ? हाँ, मैं कह रहा था कि..."

आनन्द से नेता उछल पड़ता है और डा० पूल के कंधे झकझकोरने लगता है।

"तब तुम हमारी सहायता कर सकते हो। इन चीजों का प्रयोग तुम यहाँ कर सकते हो, उसी तरह जैसे इनका चलन उन सुनहले दिनों में हुआ करता था।" वह सींगों का चिह्न[1] प्रदर्शित करता है।" "ओह, अब हमारे यहाँ फिर रेलगाड़ियाँ चलने लगेंगी।"—भविष्य की मनोहर कल्पना से उल्लसित हो वह डा० पूल को अपनी ओर खींचता है, उसके गले में बाँहें डाल दोनों गालों पर प्यार की मुहर लगा देता है।

डा० पूल परेशान है; घृणा से वह सिकुड़ जाता है। वह महापुरुष शायद ही स्नान करता हो—उसके मुँह से भयानक बदबू निकल रही है। उसके पाश से वह अपने को मुक्त करता है।

"लेकिन मैं तो कोई इंजीनियर नहीं हूँ। मुझे तो केवल वनस्पति-विज्ञान का ज्ञान है।"

"यह कौनसी चीज़ है ?"

"पौधों की जानकारी।"

---

१. ईसाइयों के क्रॉस चिह्न पर व्यंग्य।

"युद्ध के पौधे ?" नेता आशान्वित होता है।

"नहीं, नहीं, मामूली पौधे—जिनकी डालियाँ, डंठल, फूल हैं—हाँ, क्रिप्टोजेम (Cryptogems) को नहीं भूलना चाहिये"—उसने शीघ्रता से कहा—क्रिप्टोजेम में ही मुझे विशेष रुचि है। शायद आपको मालूम हो, न्यूजीलैंड में ये खासकर बहुतायत से उगते हैं।"

"और इंजिन के बारे में तुम कुछ भी नहीं जानते ?"

"इंजिन"—डा० पूल घृणा से उसके शब्द को दुहरा देता है—"आपको जानना चाहिये, मुझे इन चीजों का कोई ज्ञान नहीं है।"

"तो तुम यहाँ रेलगाड़ी चलाने में हमारी कोई मदद नहीं कर सकते ?"

"मुझे दुख है।"

बिना कुछ कहे नेता अपना दायाँ पाँव उठाता है; डा० पूल के पेट तक उसे फैलाता है और फिर मुड़े हुए पाँव को एक झटके से सीधा कर देता है।

डा० पूल पर प्रकाश—मिट्टी के टीले से वह उठने का प्रयत्न करता है। हड्डी तो उसकी टूटी नहीं, पर कुछ छिल जरूर गया है। ठोकर मारने के बाद नेता लोगों को पुकारता है।

क़ब्र खोदनेवालों और मछली-मारों पर प्रकाश—आदेश पाते ही वे भागे आ रहे हैं।

नेता डा० पूल की ओर संकेत करता है।

"इसे गाड़ दो।"

"जीवित या मृत?"—स्थूल लड़की गहरी, तीखी आवाज़ में पूछती है। नेता सिर हिलाता है।

"जैसा तुम्हें ठीक लगे।" प्रयत्न-सिद्ध उदासीनता से वह उत्तर देता है। वह स्थूल लड़की ताली बजाती है।

"इधर, इधर"–वह अपने साथियों को संकेत करती है।

"चलो, कुछ देर तफ़री रहेगी।"

कराहते हुए डा० पूल को घेर कर वे खड़े हो जाते हैं। उसे ज़मीन से उठाकर उसी मैनेजिंग डाइरेक्टर की क़ब्र में डाल देते हैं। क़ब्र अध-खुली है; लड़की डा० पूल को पकड़े हुए है और लोग क़ब्र में मिट्टी भर रहे हैं। थोड़ी ही देर में डा० पूल की कमर तक मिट्टी आ जाती है।

स्वर-पथ पर पीड़ा से कराहते व्यक्ति का क्रंदन और आनन्द से थिरकते हुए हत्यारों का अट्टहास निस्तब्धता में विलीन हो जाता है। उस सन्नाटे में निर्देशक की आवाज़ गूँज उठती है।

निर्देशक

बर्बरता और सहृदयता रक्त में मिश्रित है—
सभी व्यक्ति नृशंस और सभी दयावान् हैं।
शहरों पर अग्नि-वर्षा, अनाथ बच्चों से क्रीड़ा,

कुत्तों से प्रेम और 'डेचाउ'[1] का निर्माण,
'लिंचिंग'[2] का विरोध, पर 'ओकरिज'[3] का पक्ष,
विश्व-प्रेम का राग, पर एन० के० वी० डी०[4] में तत्पर।
कौन निर्दोष और कौन दोषी है?
मनुष्य की क्रूरता अनेक रूप धरती है।
स्मरण रहे, शुभ्र मानवता के ज्ञान में
मनुष्य पशुता के पाश से मुक्त है।

स्वर-पथ पर अट्टहास और अनुनय-विनय के शब्द स्पष्ट होने लगते हैं। सहसा नेता की आवाज़ सुनाई पड़ती है।

"पीछे हटो," वह चिल्लाता है, "मुझे दिखाई नहीं दे रहा।"

लोग तुरन्त एक ओर खिसक जाते हैं। मौन शाँति में नेता डा० पूल की ओर देखता है।

"पौधों का तो तुम्हें बहुत-कुछ ज्ञान है," वह कुटिल व्यंग्य करता है—

---

१. डेचाउ (Dachau)—नाज़ियों द्वारा निर्मित कॅन्सेन्ट्रेशन कैंप।

२. लिंचिंग (Lynching)—आधुनिक काल में अमेरिका में नीग्रो जाति पर अत्याचार।

३. ओकरिज (Oakridge)—वह स्थान जहाँ एटम बम की प्रयोग-शाला है।

४. एन० के० वी० डी० (N K. V. D.)—रूसी गुप्तचर-विभाग।

"यहाँ कुछ जड़-मूल क्यों नहीं उगा देते ?"

एक भीषण क़हक़हा।

"छोटे-छोटे गुलाबी फूलों को यहाँ लगाओ।"

वनस्पति-विज्ञान-वेत्ता के कातर मुँह पर प्रकाश की गहरी रेखा पड़ती है। "दया करो, दया ...." उसका आर्तनाद गूँज उठता है।

फिर भीषण क़हक़हा।

"मैं आपके काम आ सकता हूँ। मैं बता सकता हूँ, अच्छी फसल कैसे पैदा की जा सकती है—खाने के लिये ज्यादा अनाज कैसे मिल सकता है ?"

"ज्यादा अनाज ?" प्रसन्नता से नेता का मुँह दीप्त हो जाता है। दूसरे ही क्षण क्रोध से उसके नथने फूल जाते हैं—"झूठे कहीं के !"

"नहीं, नहीं, मैं झूठ नहीं कहता; सर्व-शक्तिशाली ईश्वर की शपथ !"

लोगों के आत्म-सम्मान को धक्का पहुँचता है। उनका विरोध प्रगट हुआ चाहता है।

"तुम्हारे न्यूज़ीलैंड में वह सर्व-शक्तिशाली होगा", नेता ने कहा—"पर यहाँ नहीं—उस समय से नहीं जब से यह सब हुआ है।"

"पर मैं सच कहता हूँ, मैं आप लोगों के काम आ सकता हूँ।'

"शैतान की शपथ लेने को तैयार हो ?"

डा० पूल का पिता पादरी था और वह स्वयं नियमित रूप से गिर्जे जाया करता था। पर इस संकट में वह सब कुछ करने-कहने के लिए तैयार था।

"शैतान की क़सम—सर्व-शक्तिशाली शैतान की कसम।"

प्रत्येक व्यक्ति सींगों का चिह्न प्रदर्शित करता है।

शाँति।

"इसे बाहर निकालो।"

"पर नेता", स्थूल लड़की विरोध करती है, "यह तो उचित नहीं होगा।"

"बाहर निकालो, अपवित्रता की पुतली।"

उसके क्रोध का प्रभाव तत्क्षण होता है। तत्परता से खोद कर वे लोग एक ही मिनट में उसे क़ब्र से बाहर निकाल देते हैं। मकबरे के नीचे डा० पूल के पाँव लड़खड़ा रहे हैं।

"धन्यवाद"—किसी तरह यह शब्द उसके मुँह से निकलता है; उसके घुटने पीड़ा से काँप रहे हैं और वहीं वह गिर पड़ता है।

एक भीषण क़हक़हा। तिरस्कार के साथ वे उसकी व्यथा की खिल्ली उड़ाते हैं।

नेता संगमर्मर के आसन से झुकता है। "इधर देखना, अपवित्रता की पुतली"—उस युवती की ओर वह एक बोतल बढ़ा देता है—"उसे यह पिलाओ; उसे तुरंत चलने-फिरने लायक हो जाना है। हमें प्रधान कार्यालय लौटना है।"

डा० पूल की बगल में वह बैठ जाती है; उसके लड़-खड़ाते शरीर को सहारा देती है; चक्कर खाते हुए सिर को अपनी छाती से लगाती है, जहाँ 'निषेध' के चिह्न अङ्कित हैं, और उसे पेय पिलाती है।

सड़क पर प्रकाश। चार दाढ़ी वाले व्यक्ति नेता को खुली पालकी में बैठा कर ले जाते हैं। अन्य लोग पीछे-पीछे चलते हैं—रेतीली सड़क पर वे तीन-तेरह हो रहे हैं। इधर-उधर, बड़े-बड़े मकानों और दुकानों की ड्योढ़ियों में, मनुष्य की हड्डियों के ढेर लगे हुए हैं।

प्रकाश डा० पूल पर केन्द्रित होता है। दाएँ हाथ में बोतल अब भी मौजूद है, पाँव अब भी स्थिर नहीं हैं, तरंग में आ वह एनी लॉरी के गीत गा रहा है। बिना कुछ खाए-पिए उसने बोतल चढ़ा ली है; उसकी माँ को मदिरा से सदा शिकायत रही है; उसे भी इसकी लत नहीं है—इसलिये बोतल ने शीघ्र ही अपना असर दिखाया। वह गाने लगा—

तू मोहक इन्द्र-धनु सी,

ओ, सुन्दर एनी लॉरी—

मैं तुझ पर बलि-बलि जाऊँ.. ...

इसी समय क़ब्र खोदने वाली दोनों लड़कियाँ निकट आती हैं। डा० पूल मस्त है। पीछे से आकर वह स्थूल लड़की उसकी पीठ पर एक हल्की-सी थपकी देती है। वह चौंक कर अपने पीछे देखता है, भय की कँपकँपी उसके शरीर में दौड़ जाती है। लड़की की मुस्कराहट ही उसे आश्वस्त करती है।

"मेरा नाम फ़्लॉसी है", वह कहती है, और आशा है, तुम मुझ पर नाराज़ नहीं होगे चूंकि मैंने तुम्हें गाड़ना चाहा था।"

"नहीं, नहीं, कतई नहीं"—डा० पूल उसे इस तरह विश्वास दिलाना चाहता है मानो उसे कोई शिकायत नहीं,—उसी तरह जैसे किसी युवती को सिगरेट जलाते देख कोई क्या आपत्ति करेगा।

"यह न सोचना कि मेरा तुम से कोई विरोध है।" फ़्लॉसी ने उसे फिर विश्वास दिलाने का प्रयत्न किया।

"ऐसा भी कभी हो सकता है ?"

"ज़रा हँसी-मज़ाक हो जाता है और कोई बात नहीं।"

"ठीक, ठीक।"

"आदमी को जब गाड़ा जाता है तो उसके रोने-मचलने में बड़ा आनन्द आता है।"

"रोने-मचलने में," डा० पूल उसकी बात को मान लेता है और जबरन मुस्कराना चाहता है।

साहस की मात्रा कुछ और अपेक्षित समझ वह बोतल से दो-चार घूँट मुँह में उँड़ेल लेता है।

"अच्छा, तुमसे फिर मुलाकात होगी।" वह बोली—"इस समय तो मुझे जाना है। नेता की नई जैकेट की आस्तीन लम्बी करनी है, इसलिये उनसे कुछ बातें करनी हैं।"

डा० पूल की पीठ को थपथपाती हुई वह तेजी से चली जाती है।

डा० पूल दूसरी लड़की के साथ अब अकेला रह जाता है। वह चुपके से उसकी ओर देखता है—अट्ठारह वर्ष की बाला, भूरी-लाल अलकें, सुन्दर आकृति, यौवन की उठान से अँगड़ाई लेता हुआ शरीर, कुछ क्षीणकाय, हँसती है तो कपोल खिल जाते हैं और दो सुन्दर आकर्षक गड्ढे बन जाते हैं।

"मेरा नाम लूला है।" वह अपने आपको बताती है—"और तुम्हारा?"

"अल्फ्रेड"—डा० पूल उत्तर देता है—"मेरी माँ को

'इन मेमोरियम'—अल्फ्रेड टेनिसन[1] की कृति—से बहुत प्रेम था।"—वह अपने नाम का कारण बताता है।

"अल्फ्रेड"—लड़की कहती है—"मैं तुम्हें अल्फी कहूँगी। मैं तुमसे क्या कहूँ, अल्फी, मुझे इस गाड़ने-उखाड़ने के कार्य में एकदम रुचि नहीं। मैं नहीं जानती अन्य लोगों से मेरी प्रवृत्ति भिन्न क्यों है? मुझे इस जघन्य व्यापार में कोई विनोद नहीं मिलता। मैं तो वहाँ कोई आमोद-प्रमोद नहीं पाती।"

"मुझे यह सुनकर प्रसन्नता हुई।" डा० पूल ने उत्तर दिया।

"यह समझ लो, अल्फी", कुछ रुक कर वह बोली—"तुम सचमुच बड़े भाग्यशाली हो।"

"भाग्यशाली?"

लूला उसकी ओर देखती है।

"पहले-पहल तुम्हारे साथ ही दया का बर्ताव हुआ है—ऐसा यहाँ कभी नहीं हुआ कि गड़ा हुआ व्यक्ति वापस उखाड़ा गया हो। अब तुम सीधे 'शुद्धि-समारोह' (Purification Ceremony) में भाग लेने चल रहे हो।"

---

1. टेनिसन—विक्टोरिया के युग का प्रसिद्ध अंग्रेज़ कवि। अपने मित्र हैलेम की मृत्यु पर इसने 'इन मेमोरियम' (स्मृति में) की रचना की जो अँग्रेज़ी साहित्य की एक महत्वपूर्ण कृति है।

"शुद्धि-समारोह ?"

"हाँ, कल 'शैतान-दिवस' है।" डा० पूल को इस विषय में पूर्णतः अबोध जान उसे कहना ही पड़ता है—" अब यह न पूछना कि शैतान-दिवस पर क्या-क्या होता है।"

डा० पूल सिर हिला कर चुप हो जाता है।

"किन्तु तुम्हारे यहाँ शुद्धि कब होती है ?"

"हम लोग तो नित्य ही स्नान करते हैं,—"डा० पूल को शीघ्र ही स्मरण हो आता है कि ये लोग कभी नहाते-धोते नहीं। लूला भी इस विषय में कोई अपवाद नहीं है।

"नहीं नहीं", वह अधीरतापूर्वक प्रश्न करती है। "मेरा मतलब है मनुष्य-जाति की शुद्धि ?"

"मनुष्य-जाति की शुद्धि ?"

"कुछ नहीं जानते। क्या तुम्हारे यहाँ पादरी आकृति-भ्रष्ट बच्चों को जिन्दा रहने देते हैं ?"

कुछ देर निस्तब्धता। तब डा० पूल उससे प्रश्न करता है।

"क्या यहाँ आकृति-भ्रष्ट बच्चे बहुत पैदा होते हैं ?"

वह निश्चयात्मक भाव से सिर हिलाती है।

"उस 'घटना' के बाद से ही —उस समय से ही जब से 'उसने' अधिकार ग्रहण किया।" वह सींगों का प्रदर्शन करती है। "लोगों का कहना है उससे पूर्व यहाँ ऐसी अवस्था नहीं थी।"

"गामा-किरणों (Gamma rays) का प्रभाव किसी ने तुम्हें बताया है?"

"गामा-किरणें? गामा-किरण किसे कहते हैं?"

"बच्चों के आकृति-भ्रष्ट होने का यही कारण है।"

"तुम यह बताने की चेष्टा तो नहीं कर रहे हो कि इसका कारण 'शैतान' नहीं है?" उसका स्वर संशय से कठोर हो जाता है, वह उसे इस तरह देखती है जैसे वह कोई कट्टर नास्तिक हो।

"नहीं, नहीं, मेरा यह अभिप्राय नहीं।" डा० पूल उसे समझाने में शीघ्रता करता है—

"वह तो प्रधान कारण है ही, इसमें भी क्या कहना-सुनना है?" बेढगे तरीके से, अनाड़ी की तरह वह सींगों का चिह्न बनाता है। — "मैं तो अन्य गौण कारणों की बात कर रहा था—उन उपायों की जिनके द्वारा 'वह' अपनी कार्य-सिद्धि करता है।"

उसके शब्द, और उनसे भी अधिक पवित्र चिह्न का प्रदर्शन, लूला के संशयों को दूर करता है। संशय-विमुक्त मुँह मृदुल हास्य से खिल जाता है। गालों के गड्ढों में नई ज़िन्दगी आ जाती है, मानों लूला के मुँह से अलग ही उनका अपना स्वतंत्र अस्तित्व हो। डा० पूल भी हँस कर उसका स्वागत करता है, पर दूसरे ही क्षण मुँह फेर लेता है—उसका सारा शरीर रोमांच से सिहर उठता है।

निर्देशक

माँ में असीम श्रद्धा होने के कारण डा० पूल आज अड़-तीस वर्ष का होने पर भी अविवाहित है। विवाह के लिये उसके हृदय में एक अनैसर्गिक पवित्र भावना थी, अतः अपना आधा जीवन उसने अंदर ही अंदर सुलगते हुए बिता दिया। वह यह अनुभव करता था कि किसी सच्चरित्र युवा स्त्री को शैय्याशायिनी तथा जीवन-संगिनी होने के लिये कहना काम-लोलुपता होगी, अतः अपनी विद्या की गरिमा के कारण शिष्टाचार की विडंबना में पड़, वह उस लोक का वासी हो गया था जहाँ प्रेम के सपने लुब्ध अवसर को जन्म देते हैं और मदिर आकांक्षाएँ मातृत्व की भावना से सतत संघर्ष करती रहती हैं। अब उसके सामने लूला का सौन्दर्य है—वह लूला जिसके पास किसी प्रकार की शिक्षा का दंभ नहीं, पर जिस में यौवन अँगड़ाइयाँ ले रहा है—जिसके पास वह रूप-रस-गंध है जो व्यक्ति को सहज ही अपनी ओर आकर्षित कर सकता है। तो कोई आश्चर्य नहीं यदि लूला को देख डा० पूल का चेहरा अनुरक्त हो जाय, पर दूसरे ही क्षण वह उसके मुँह से आँखें हटा लेता है यद्यपि हृदय यही चाहता है कि उसे निर्निमेष आँखों में पी लिया जाय।

अपने आप को संतोष देने के लिये और कुछ साहस संचित करने के लिये उसने बोतल का सहारा लिया। सड़क

सहसा बालू के टीलों के बीच एक सँकड़ी पगडंडी में सीमित हो जाती है।

"तुम आगे चलो।" डा० पूल विनम्र भाव से कहता है।

मुस्कराकर वह उसकी शिष्टता का उत्तर देती है। इस देश में तो मनुष्य आगे चलते हैं, औरतें उनके पीछे-पीछे।

डा० पूल के सामने लूला की पीठ के 'निषेध' प्रकाश की किरणों में चमक उठते हैं। उसके प्रत्येक कदम पर 'निषेध' के चिह्न हिल पड़ते हैं। डा० पूल पर घना प्रकाश। वह विस्फारित नयनों से इन निषेधों को देख रहा है।

निर्देशक

यह प्रतीक उसकी आँतरिक चेतना का बाह्य, दृश्यमान्, मूर्त-चिह्न है—विषय-लालसा। मातृ-आदेश व सप्तम कमांडमेंट[1] का यह विरोधी सिद्धान्त उसकी कल्पना और जीवन के तथ्यों पर हावी हो गया है।

बालू के टीले समाप्त हो जाते हैं। सड़क फिर इतनी चौड़ी हो जाती है कि दो व्यक्ति साथ-साथ उस पर चल सकते हैं। डा० पूल अपने साथी के मुँह को छिपी नजर से देख लेता

---

१ सप्तम कमांडमेंट—धर्माज्ञा। ईश्वर ने मोजेज को दस आज्ञाएँ दी थीं जो ईसाइयों के लिए अत्यंत मान्य हैं। इस धर्माज्ञा के अनुसार व्यभिचार वर्जित है।

है जहाँ विषाद की छाया अंकित है।

"क्या बात है?" उसकी व्यथा को जानने के लिये वह व्यग्र हो जाता है। साहस कर वह उसका नाम लेता है—"लूला!" और उसके हाथ को अपने हाथ में ले लेता है।

"ओह, कितना वीभत्स?" उसके शब्द-शब्द से गंभीर नैराश्य प्रकट हो रहा है।

"क्या वीभत्स?"

"प्रत्येक वस्तु। आदमी इन सब के बारे में सोचना नहीं चाहता, पर वह बड़ा अभागा है, उसे सोचना ही पड़ता है। एक ही चीज के बारे में बार-बार सोचते-सोचते आदमी भी पागल हो जाता है। इच्छा भी कभी तृप्त हुई है? और अगर उनकी आज्ञा का उल्लंघन करते हुए पकड़े गये तो फिर प्राणों का संकट है। सिर्फ पाँच मिनट के लिये आदमी भी क्या से क्या कर डालता है। अपना सर्वस्व लुटा देने के लिये वह तैयार हो जाता है। पर यही तो संभव नहीं—कितना बंधन है, कितना निषेध है! और तब क्रोध आता है, मुट्ठियाँ बंध जाती हैं, भुजाएँ अपने पाश में कुछ आबद्ध करने के लिये मचल उठती हैं, और फिर इतनी परेशानी, इतनी तकलीफ के बाद सहसा···"वह चुप हो जाती है।

"सहसा क्या?" डा० पूल पूछता है।

वह तीक्ष्ण दृष्टि से उसकी ओर देखती है, पर उसके मुँह

पर केवल निष्कपट जिज्ञासा का भाव पाती है।

"क्या कहूँ तुम से ?" वह अन्त में उससे यही पूछती है—"क्या नेता से तुमने जो कहा था वह सच है ? अपने पादरी होने के सम्बन्ध में ?"

अपने प्रश्न पर वह स्वयं लज्जित हो जाती है।

"अगर तुम्हें मेरी बात का विश्वास न आ रहा हो तो मैं अभी सिद्ध करने के लिये तैयार हूँ।" डा० पूल की रगों में शराब का जोश लहर मारने लगा था।

एक क्षण तो लूला उसकी ओर देखती है, फिर उदासीन हो आँखें परे कर लेती है। किसी अज्ञात भय से वह पीछे हट जाती है और सशंक हो अपना एप्रन ठीक करने लगती है।

"और हाँ, तुमने यह तो बताया ही नहीं कि सहसा क्या हो जाता है ?" डा० पूल की हिम्मत उसके इस विनम्र संकोच को देख कर बढ़ जाती है।

लूला चारों ओर देख कर पहले यह निश्चय कर लेती है कि कोई उनकी बात तो नहीं सुन रहा है, फिर धीरे से वह कहती है—

"सहसा 'उसका' सब पर अधिकार हो जाता है। दिन-रात लोग यही सोचते रहते हैं, उन्हें बाध्य होकर सोचना पड़ता है। उनके सङ्कल्प-विकल्प होते रहते हैं। पर जानते हो, यह अवैध है, निषेधपूर्ण। फिर आदमी पागल हो जाता है।

परिणाम यह होता है कि औरत पर चारों ओर से बौछार होने लगती है, उसे अपवित्रता की पुतली कहा जाता है। यही तो तुम्हारे पादरी करते हैं।"

"अपवित्रता की पुतली ?"

"हाँ, अपवित्रता की पुतली।"

"अच्छा, समझा।"

"फिर शैतान-जयंती आती है।" कुछ ठहर कर फिर वह अपनी बात जारी करती है—"और जानते हो, उसका क्या अर्थ होता है ? अगर किसी के संतान हो जाय तो वह अपने किए का फल भोगे।" भय से वह काँप उठती है और सींगों का चिह्न प्रदर्शित करती है। "मैं जानती हूँ, हमें उसकी आज्ञा का पालन करना ही चाहिए। पर आह ! मुझे उम्मीद है, मेरी संतान तो ठीक ही होगी।"

"ठीक तो होगी ही", डा० पूल ने जोर देकर कहा—"तुम में आखिर खराबी ही क्या है, तुम इतनी अधीर क्यों हो रही हो ?"

अपनी बढ़ती हुई हिम्मत से प्रसन्न हो डा० पूल उसकी ओर देखने लगता है।

लूला पर प्रकाश। निषेध के चिह्नों पर प्रकाश का पुंज गहरा होने लगता है—कई निषेध के चिह्न चमकने लगते हैं।

अत्यन्त कातर हो लूला सिर हिलाती है।

"यही तुम नहीं जानते, मेरे दो चूचुक अधिक हैं।"

"ओह!" डा० पूल के मुँह से अनायास यह शब्द निकल जाता है। उसे अपनी माँ की स्मृति हो आती है। शराब का असर भी क्षण भर के लिए गायब हो जाता है।

इसमें सचमुच ही कोई बुराई हो, यह बात नहीं है।" लूला अपनी बात कहने में शीघ्रता करती है—"अच्छी से अच्छी औरतों के पास इतना तो आप पावेंगे ही। इतना तो वैध माना गया है। तीन युग्मों तक उन्हें कोई शिकायत नहीं होती। पाँवों की सात अँगुलियाँ भी उन्हें स्वीकार है। इससे अधिक शरीर में अगर कोई वृद्धि है तो 'शुद्धि-समारोह' पर संस्कार कर दिया जाता है। मेरी मित्र पॉली के इस मौसम में एक बच्चा पैदा हुआ है, उसके आठ अँगुलियाँ हैं, और अँगूठों का पता नहीं। उसकी पहली संतान है, पर बचने की कोई आशा नहीं। पॉली का सिर तो मूँड़ ही दिया गया है।"

"ऐसा क्यों?"

"जिन बच्चे-बच्चियों का निस्तार करना होता है, उनकी माताओं के साथ इसी प्रथा का पालन किया जाता है।"

"पर क्यों?"

"यही बताने के लिए कि वह शत्रु है।"

निर्देशक

श्रोडिंगर[१] के शब्दों में "कुछ मोटे ढंग में इस बात को यों समझाया जा सकता है कि दो चचेरे भाई-बहिनों का विवाह अत्यन्त हानिकारक होगा यदि उनकी मातामही ने एक्स-रे-नर्स की हैसियत से दीर्घकाल तक काम किया हो। यह कोई ऐसी बात नहीं है जिससे किसी मनुष्य को व्यक्तिगत रूप में चिंतित होने की आवश्यकता हो, किन्तु समाज के लिए यही विषय भयप्रद हो सकता है यदि मानव-शरीर में अवांछित परिवर्तन करने के लिए यह संक्रामक रूप धारण कर ले।" यह चिंता का विषय होना चाहिए, पर वस्तुतः कौन इसकी परवाह करता है। ओकरिज में प्रयत्न कम नहीं हो रहे, कम्बरलैंड के समुद्री तट पर अणुशक्ति-पौधे का कार्य चल ही रहा है; और दूसरी ओर भगवान् ही जाने माउन्ट एरारेट (Mount Araıat) की चोटी पर केपिज़ा (Kapıtza) क्या करने पर तुला हुआ है—वह अद्भुत रशियन आत्मा जिसके सम्बन्ध में डॉस्टोवेस्की[२] इतने कवित्वपूर्ण लय में लिखा करता था। रशिया के नर-पिंडों, पूँजीपतियों और साम्यवादी

---

१. श्रोडिंगर (Schroedinger) आधुनिक युग में इटली का वैज्ञानिक।

२. डॉस्टोवेस्की (Dostoevsky) प्रसिद्ध रशियन कवि।

प्रजातंत्रवादियों के लिए न जाने वह किन आश्चर्यों का उद्घाटन करना चाहता है।

एक वार फिर सड़क मिट्टी में खो जाती है। चारों ओर बालू ही बालू है, मानों डा० पूल और लूला सहरा के रेगिस्तान में हों।

डा० पूल की दृष्टि से लूला पर प्रकाश। वह आगे बढ़ रही है। उसकी पीठ के 'निषेध' चमक उठते हैं। निषेध, निषेध, निषेध.....। लूला रुक कर डा० पूल को देखने के लिए मुड़ती है। सामने के निषेध—निषेध-निषेध......। प्रकाश ऊपर की ओर उठ कर उसके मुँह पर पड़ता है और डा० पूल को एक क्षण में उसकी व्यथा स्पष्ट हो जाती है।

निर्देशक

सप्तम कमांडमेंट—जीवन के तथ्यों का संकलन। पर एक अन्य तथ्य भी है। केवल अभ्यास-सिद्ध निषेध से उसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता, यदा-कदा वासना के आवेश से भी उसकी अभिव्यक्ति नहीं होती। वह मनुष्य की वैयक्तिकता का तथ्य है।

"काश, मेरे बाल न मूँड़े जॉय।" गहरी व्यथा से उसकी आवाज भारी है।

"ऐसा वे नहीं करेंगे।"

"तुम्हारे नहीं कहने से क्या होता है?"

"वे कैसे कर सकते हैं—उन्हें नहीं करना चाहिए।" अपने साहस पर उसे आश्चर्य हो रहा था—"इतने सुन्दर बाल?"

वेदना से अभिभूत हो लूला सिर हिलाती है।

"पर मुझे तो ऐसा लगता है कि मेरे बच्चे के सात से अधिक अँगुलियाँ होंगी। वे उसे मार डालेंगे—मेरे सिर का मुँडन होगा– मुझ पर निर्मम प्रहार होंगे। और वह शैतान ही हमसे यह सब करवाता है।"

"क्या करवाता है?"

बिना कुछ कहे लूला उसके मुँह को देखने लगती है; भय से काँप कर वह अपनी आँखें नीची कर लेती है।

"उसकी यही इच्छा है कि हम पर जुल्म हो।"

दोनों हाथों से अपना मुँह ढाँप लूला ज़ोर-ज़ोर से सिसकने लगती है।

निर्देशक

मदिर अनुराग में सिहरता
अन्तर और बाह्य।
जीवन के पोषक तत्त्वों के अतिरिक्त
आती सुनहले सपनों की याद.....
और अरे, ये तरल अश्रु की बूँद......।

डा० पूल लूला को अपनी भुजाओं में लपेट लेता है।

लूला उसके वक्षःस्थल का सहारा लेकर सिसकने लगती है। डा० पूल का मनुष्यत्व सहज संवेदना से स्निग्ध हो जाता है, वह अत्यन्त कोमलता के साथ उसकी अलकों पर हाथ फेरने लगता है।

"रो मत, लूला। क्यों दुखित होती हो ? मैं तो तुम्हारे साथ हूँ। मैं उन्हें ऐसा नहीं करने दूँगा।"

थोड़ी देर में लूला आश्वस्त हो जाती है। उसकी हिच-कियों का क्रम टूट जाता है। वह आँखें ऊपर करती है और प्यार से डा० पूल को देखती है। उस दृष्टि में प्रेम का वह संकल्पात्मक निमंत्रण था जिसे पूल के अतिरिक्त कोई भी अन्य पुरुष तत्क्षण स्वीकार कर लेता। कुछ क्षण इसी उधेड़-बुन में सिमट जाते हैं। और इसी बीच लूला संयत हो जाती है। उसकी पलकें झुक जाती हैं। अपनी दुर्बलता का बोध कर वह आँखें फेर लेती है।

"मुझे दुःख है।" कुछ अस्फुट-से स्वर उसके मुँह से निकलते हैं। बच्चों की तरह वह अपनी आँखें मसलने लगती है।

डा० पूल रूमाल निकाल अत्यन्त स्नेह से उसके आँसू पोंछ देता है।

"तुम कितने अच्छे हो !" उसका रोम-रोम कृतज्ञ है— "यहाँ के आदमियों से कितने भिन्न।"

हास्य की हल्की-सी रेखा उसके ओठों पर दौड़ जाती है। कपोलों पर दो आकर्षक गड्ढे प्रगट हो जाते हैं मानों वन्य शशकों का एक जोड़ा, जो अब तक लुका हुआ था, प्रगट हो गया हो।

प्रेम के आवेश में डा० पूल लूला को अपने कर-पाश में जकड़ कर चूम लेता है। उसे इतना सोचने का अवकाश भी नहीं रहा कि वह क्या करने जा रहा है।

लूला एक क्षण विरोध करती है, फिर पूर्णरूपेण आत्म-समर्पण कर देती है--अत्यन्त आवेगशील, अत्यन्त स्पंदनशील।

स्वर-पथ पर संगीत की ध्वनि सुनाई पड़ती है—'प्रेम का दान दो . . प्रेम सत्व महान् है।

सहसा लूला का रोम-रोम सिहर उठता है, आकृति दृढ़ हो जाती है। एक झटके से वह अपना हाथ छुड़ा लेती है और डा० पूल के मुँह की ओर ताकने लगती है। अपराध की शंका से उसका शरीर काँपने लगता है।

"लूला!"

वह उसे फिर अपनी ओर खींचने का प्रयत्न करता है, किन्तु वह दूर ही हटती जाती है। उस सङ्कीर्ण मार्ग पर वह तेज़ी से कदम बढ़ाए जाती है।

निषेध के चिह्न चमक उठते हैं—निषेध, निषेध, निषेध.........

प्रकाश-पुंज में प्रशस्त पथ दिखलाई पड़ता है। नगर के एक विशिष्ट भाग में चहल-पहल दिखाई दे रही है। पुराने दिनों की तरह यह भाग आज भी संस्कृति का केन्द्र है। 'संगीत-मंदिर' के सामने एक कुँआ है जिसका जल अधिक गहरा नहीं है। दो औरतें पानी खींच रही हैं और मिट्टी के घड़ों को भरती जा रही हैं। दूसरी औरतें रीते घड़े वहाँ रख देती हैं और भरे घड़ों को दूसरी जगह ले जाती हैं। रोशनी के दो खंभों के बीच लोहे की छड़ के सहारे एक बैल का धड़ लटक रहा है। अभी-अभी वह क़त्ल हुआ है। मक्खियों की भिनभिनाहट में एक आदमी चाकू से उसकी अँतड़ियाँ साफ़ कर रहा है।

"कितना अच्छा लग रहा है!" नेता हँस रहा है।

कसाई खिलखिला उठता है और अपने लाल पंजों से सींगों का चिह्न प्रदर्शित करता है।

कुछ दूरी पर बड़े-बड़े चूल्हे जल रहे हैं। जातीय महोत्सव है। कुछ लोग खाने-पकाने में लगे हुए हैं। नेता अनुग्रह कर रोटी का एक गर्म टुकड़ा स्वीकार करता है। वह उसका स्वाद ले ही रहा है कि दस-बारह छोटे-छोटे लड़के प्रकाश-पुंज में उसकी ओर आते हुए दिखाई देते हैं। बोझ से वे लदे हुए हैं। पास के सार्वजनिक पुस्तकालय से वे जलावन लाए हैं। जमीन पर बोझ पटक वे साँस लेने के लिये रुकते हैं

कि दो-चार हाथ और गालियाँ खा और पुस्तकें लाने के लिये दौड़ जाते हैं। एक आदमी आँच तेज करने के लिये उन पुस्तकों को आग में झोंकने लगता है।

डा० पूल की विद्वत्ता और पुस्तक-प्रेम इस दृश्य को देखते ही विद्रोह कर उठते हैं।

"अमानुषिक !" वह विरोध करने के लिये तैयार हो जाता है। नेता मुस्कराने लगता है।

"पुस्तक* अग्नि में प्रवेश करती है, रोटी बाहर निकलती है। कितनी स्वादिष्ट !"

वह क़हक़हा लगाता है।

डा० पूल झुक कर आग की लपटों में भस्म होने से एक किताब का उद्धार करता है। शैली की कविताओं का सुन्दर संकलन है।

"धन्यवाद है ईश..." बीच ही में वह रुक जाता है। सौभाग्य है कि उसे याद हो आया कि किन लोगों के बीच वह खड़ा हुआ है। वह सम्हल गया।

पुस्तक अपनी जेब में डाल वह नेता की ओर देखता है। "संस्कृति के विषय में आप क्या कहेंगे ?" वह प्रश्न करता है—"अनवरत प्रयत्नों के पश्चात्, कष्टों को झेलने के बाद, ज्ञान का जो संग्रह हुआ है—मानवता की जो सर्वजनीन

* The Phenomenology of Spirit.

सम्पत्ति है, उसका क्या होगा? हमारे विचारों का जो उत्कृष्ट...”

‘कोई पढ़ तो सकता नहीं।” नेता प्रत्युत्तर के लिये विकल हो जाता है—“हम तो उन्हें पढ़ाने की कोशिश भी करते हैं, पर इससे होता क्या है?”

वह एक ओर संकेत करता है। लूला पर प्रकाश का मध्यम पुंज। सुन्दर मुख, मोहक आकृति, एप्रन पर दो वर्तुलाकार लाल रंग के ‘निषेध’ और सामने दो छोटे-छोटे ‘निषेध’, आलोकित हो उठते हैं।

इतना पुस्तक-ज्ञान ही उन्हें आवश्यक है। वह अपनी पालकी ढोने वालों को आवाज़ देता है—“अब चलो।”

किसी समय कॉफी का जो रेस्तोरॉ था—बिल्टमोर कॉफी शॉप (Biltmore Coffee Shop)—पालकी उसके अन्दर जाती है। दरवाज़े पर किवाड़ नहीं हैं। अन्दर कुछ अँधेरा है। दुर्गन्ध फैल रही है। कुछ प्रौढ़ाएँ, कुछ युवतियाँ, कुछ लड़कियाँ—सब मिलाकर बीस-तीस औरतें पुराने क़िस्म के कर्घों पर जिन्हें कभी मध्य अमेरिका के रैड इंडियन इस्तेमाल करते थे, कपड़ा बुनने में व्यस्त हैं।

“इस मौसम इन अपवित्रता की पुतलियों में किसी के भी संतान पैदा नहीं हुई।” नेता उन औरतों के बारे में डा० पूल से बातें करता है। उसकी भृकुटि तन जाती है। “जब ये कुछ

पैदा नहीं कर सकती तो इन्हें क्या कहोगे—वन्ध्याएँ, बंजर। शैतान ही जाने, हमारी जन-संख्या का क्या होने वाला है?"

कॉफी शॉप के अन्दर वे बढ़ जाते हैं। एक वयस्क स्त्री तीन-चार वर्ष के बच्चों के एक गिरोह की रखवाली कर रही है। इस औरत के तालू फटे हुए हैं और उँगलियाँ चौदह हैं। आगे बढ़ते-बढ़ते वे एक स्थान पर रुक जाते हैं। सामने एक अन्य डाइनिंग-रूम है, पहले वाले से कुछ छोटा।

एक स्वर में कुछ बच्चों की आवाज़ आ रही है। वे संक्षिप्त प्रश्नोत्तरी के आरम्भिक प्रश्न-उत्तर की आवृत्ति कर रहे हैं।

प्रश्न—मनुष्य का प्रधान कर्म क्या है?

उत्तर—मनुष्य का प्रधान कर्म शैतान का गुण-गान, उसके वैमनस्य से बचना और विनाश से यथा संभव रक्षा करना है।

डा० पूल के मुँह पर तीव्र प्रकाश। आलोक में भय-मिश्रित आश्चर्य के भाव स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं। फिर उसकी दृष्टि की सीध में सुदूर गहरा प्रकाश पड़ता है। तेरह से पन्द्रह वर्ष की अवस्था के साठ लड़के-लड़कियाँ बारह-बारह की पाँच पंक्तियों में सतर्क खड़े हैं। उनके सामने मंच पर छोटे कद का एक मोटा आदमी बैठा हुआ है। उसके शरीर पर चित-कबरी बकरी के चमड़े की लम्बी पोशाक है। सिर पर रोंवेदार

चमड़े की टोपी है, जिसका अगला सिरा सामने की ओर उठा हुआ है और उसके साथ मंझले आकार के दो सींग जुड़े हुए हैं। रंग भूरा-सा है, दाढ़ी गायब है और मुँह पसीने से चमक रहा है जिसे बार-बार वह आस्तीन से पोंछ लेता है।

नेता पर प्रकाश। झुक कर वह डा० पूल के कंधों को छूता है। "देखते हो, वे शैतान-शास्त्र के प्रधान आचार्य हैं। शरीर का आकर्षण इनके लिये कुछ भी प्रभाव नहीं रखता और उसी के हम सब शिकार हैं।"

प्रकाश-पुँज से परे बच्चे अपना पाठ याद करने में लगे हुए हैं।

प्रश्न—"मनुष्य के प्रारब्ध में क्या निश्चित है?"

उत्तर—"शैतान ने अनुग्रहपूर्वक मनुष्य के प्रारब्ध में दीर्घ-काल तक नरक का वास निश्चित किया है।"

"इस आदमी के सींग क्यों लगे हुए हैं?" डा० पूल ने नेता से पूछा।

"यह मठाधीश (Aichimandrite) है।" नेता कारण बताता है—"इसे तो तीसरे सींग की भी स्वीकृति मिलने वाली है।"

मंच पर मध्यम प्रकाश।

"बहुत ठीक।" आचार्य की ऊँची पैनी आवाज़ में बच्चों की-सी आत्म-तुष्टि और आत्म-गरिमा है। माथे का पसीना

पोंछ वह फिर कहता है—"बहुत ठीक। अब बताओ तुम लोग दीर्घ-काल तक नरक के अधिकारी क्यों हो ?"

एक क्षण के लिये शांति। फिर लड़के पहले कुछ धीरे, फिर जोर से, एक साथ उत्तर देते हैं—

"शैतान ने हमारी देह और आत्मा को भ्रष्ट और दूषित कर दिया है। इस भ्रष्टाचार के कारण हम वस्तुतः शैतान के दंड के अधिकारी हैं।"

आचार्य प्रसन्नतापूर्वक सिर हिलाता है।

"उस अन्तर्यामी का यही सुनिश्चित निर्णय है।" उसका स्वर स्नेह-सिक्त हो रहा है।

"तथास्तु!" दूसरी ओर से एक साथ आवाज आती है।

सब सींगों का चिह्न प्रदर्शित करते हैं।

"अपने पड़ोसी के साथ तुम्हारा क्या कर्त्तव्य है ?"

"मेरे पड़ोसी के साथ मेरा यही कर्तव्य है कि यथासाध्य मैं उसे वह काम करने से रोकूँ जिसे मैं स्वयं उसके विरोध में करना चाहता हूँ; अपने आपको शासकों के नियंत्रण में रखूँ; अपने शरीर को शैतान-दिवस के अनुगामी दो सप्ताहों के अतिरिक्त निर्दोष रखूँ और वही कार्य करूं जिससे मुझे शैतान द्वारा निश्चित मेरे प्रारब्ध का भोग मिले।"

"चर्च क्या है ?"

"चर्च वह संस्था है जिसका शैतान नेता है और उसके

अनुगामी उसके सदस्य हैं।"

"बहुत ठीक।" आचार्य फिर अपनी आस्तीन से पसीना पोंछता है। —"अब एक लड़की की यहाँ जरूरत है।"

अपने विद्यार्थियों को सरसरी दृष्टि से देख वह अँगुली से एक ओर इशारा करता है।

"इधर आओ तुम, दूसरी पंक्ति में बाँई ओर से तीसरी लड़की, हाँ, जिसके सुनहरे-भूरे बाल हैं।"

पालकी के चारों ओर खड़े हुए लोगों पर प्रकाश।

पालकीवाहकों की आँखें प्रसन्नता से चमक रही हैं। दाढ़ी और मूँछों में मुँह खिल रहा है; प्रेम की लालिमा से गाल अनुरक्त हो जाते हैं। नेता के भरे हुए ओठ भी स्निग्ध हो जाते हैं। केवल लूला का मुख म्लान है। खिन्न, हतप्रभ,— आँखें टकटकी लगा कर दृश्य की भयङ्करता को देख रही हैं। इस निर्ममता का वह प्रत्यक्ष बोध कर चुकी है। डा० पूल उसे देखता है, फिर उस लड़की की विवशता को जो चुपचाप मंच की ओर पाँव बढ़ा रही है।

"ऊपर आओ"—विजेता के अधिकार से आचार्य आज्ञा देता है—"यहाँ, मेरे पास। अब क्लास की ओर देखो।"

लड़की आज्ञा-पालन करती है।

वह एक दुर्बल, क्षीणकाय, लम्बी लड़की है। अवस्था १५ वर्ष के आस-पास। मुख निर्दोष। वक्षों पर 'निषेध' के

कई चिह्न हैं—एप्रन पर नीचे की ओर, उठते हुए उरोजों पर और पीछे नितम्बों पर।

आचार्य उसकी ओर इस तरह संकेत करता है, मानों उसने कोई जघन्य अपराध किया हो।

"इधर देखो।" घृणा से उसका मुख विवर्ण हो जाता है—"तुम लोगों ने इससे भी अधिक घृणित वस्तु देखी है?"

वह क्लास की ओर देखता है।

"लड़को", वह चीखता है—"जिसे इसमें शारीरिक आकर्षण दिखाई दे रहा हो, अपना हाथ उठावे।"

क्लास पर तीव्र प्रकाश। बिना किसी अपवाद के सब लड़के हाथ ऊँचा कर देते हैं। उनके मुँह पर वासना और आमोद के आह्लादकारी भाव हैं। उनकी आत्मिक उन्नति चाहने वाले आचार्य धर्म के गूढ़ नियमों को उन पर जितना ही लादना चाहते हैं, उनकी माँसल इच्छा बंधनों में उतनी ही बलवती होती जाती है।

आचार्य पर प्रकाश। प्रपंच-भाव से वह एक आह छोड़ता है। सिर हिला कर, मानों उसे बड़ा दुख हो, वह कहता है—"मुझे यही भय था।" फिर मंच पर खड़ी लड़की की ओर वह देखता है—"अब मेरे प्रश्न का उत्तर देना। स्त्री का क्या स्वभाव है?"

"स्त्री का स्वभाव?" लड़की अभी भी घबड़ा रही है।

"हाँ, स्त्री का स्वभाव ? शीघ्र उत्तर दो।"

लड़की की नीली आँखों में भय तैर रहा था। उसने आचार्य को एक बार देखा, फिर दृष्टि दूसरी ओर मोड़ दी। उसका मुँह विवर्ण है, ओठ काँप रहे हैं; वह थूक निगलने लगती है।

"स्त्री", वह उत्तर देने का प्रयत्न करती है—"स्त्री. "

आवाज़ काँप जाती है। आँखें आँसुओं में डूब जाती हैं। अपने भावों को संयत करने के प्रयत्न में उसकी मुट्ठी बँध जाती है और दाँत कटकटाने लगते हैं।

"बोलती क्यों नहीं ?" आचार्य तीव्र स्वर से उसे लल-कारता है। ज़मीन पर पड़ी हुई बेंत उसके हाथ में उछलने लगती है, लड़की की खुली पिंडलियों पर एक प्रहार होता है— "बोलती क्यों नहीं ?"

"स्त्री", लड़की एक बार फिर प्रयत्न करती है। "अप-वित्रता की पुतली है, कुरूपता की जननी है, वह. .आह ! आह !!"

बेंत के प्रहार से वह चीख़ उठती है।

आचार्य हँसता है और सारी क्लास क़हक़हा लगाती है।

"वह मनुष्य जाति की . " उसे स्मरण कराता है।

"वह मनुष्य-जाति की शत्रु है, शैतान से दंडित है, और जो उसके अन्दर के शैतान के सामने झुक जाता है उन पर

दंड का आह्वान करती है।"

गहरा सन्नाटा छा जाता है।

"ठीक", आचार्य का स्वर उस सन्नाटे को चीर कर गूँज जाता है—"यही हो तुम। यही है स्त्री जाति। जाओ, जाओ।" वह चिल्लाता है और, क्रोध से पागल, लड़की पर कई बेंत जड़ देता है।

कष्ट से कराहती हुई लड़की मंच से कूद कर पंक्ति में अपना स्थान ग्रहण करती है।

नेता पर प्रकाश। उसे भी क्रोध आ रहा है।

"यही है प्रगतिशील शिक्षा!" वह डा० पूल से कहता है "कोई अनुशासन नहीं। पता नहीं हम लोगों की कैसे पार पड़ेगी? जब मैं पढ़ा करता था, हमारे आचार्य लड़कियों को बैंच से बाँध देते थे और कोड़े से उनकी मरम्मत करते थे। एक, दो, तीन, चार, चाबुक उछल-उछल कर उनके हाथ में बल खाता था। ओह, शैतान! कैसे चिल्लाती थीं वे लड़कियाँ! ये अपवित्रता की पुतलियाँ यों काबू में नहीं आतीं। इसे कहता हूँ मैं शिक्षा! खैर, यह तो हुआ।" और फिर अपने पालकीवाहकों की ओर देखता है—"चलो, अब चला जाय।"

पालकी प्रकाश-पुँज से धीरे-धीरे ओझल हो जाती है। प्रकाश लूला पर आकर स्थिर हो जाता है। उसका

संवेदनशील हृदय यंत्रणा से कराह उठता है। वह उस पंक्ति में खड़ी हुई लड़की की ओर देख रही है जिसकी आँखें अब भी डबडबाई हुई हैं और जिसका सारा शरीर अब भी सिहर रहा है। अपने हाथ पर किसी स्पर्श का अनुभव कर तूला चौंक उठती है; भय की कँपकँपी उसके शरीर में छूट जाती है। पर डा० पूल के दया से कोमल मुँह को अपने निकट देख वह आश्वस्त हो जाती है।

"मैं तुम से सहमत हूँ—" वह धीमे स्वर में कहता है—"यह तो नृशंसता है, अन्याय है।"

"कृतज्ञता से तूला का मुँह आर्द्र हो जाता है। प्रसन्न-वदन वह डा० पूल से कहती है—"अब हमें चलना चाहिए।"

वे तेजी से पाँव रखते हुए बढ़ जाते हैं। पालकी के पीछे-पीछे वे कॉफी-शॉप से गुजरते हैं, फिर बाँई ओर मुड़कर एक विशाल कमरे में प्रवेश करते हैं। कमरे के एक कोने में आदमियों की हड्डियों का ढेर छत को छूना चाहता है। नीचे फर्श पर दर्जनों कारीगर हड्डियों से तरह तरह की चीजें बना रहे हैं—खोपड़ी से प्याले, हाथ की हड्डी के भीतरी भाग से सूई, पिंडली की हड्डी से बाँसुरी और शरीर के अन्य भागों की हड्डियों से करछुल, चम्मच आदि।

आदेश पाते ही वे काम बन्द करते हैं। एक कारीगर बाँसुरी पर गीत गाता है—'अर्पित करो महान् सत्व' और दूसरा हाड़ से बना हुआ गले का एक आभूषण नेता को भेंट करता है।

निर्देशक

"और उसने मुझे उस घाटी में पहुँचाया जहाँ हड्डियाँ ही हड्डियाँ थीं; और ओह! वे सब सूखी थीं।" ये सूखी हड्डियाँ उन लोगों में से कुछ व्यक्तियों की थीं जो सहस्रों, लक्षों की संख्या में उन तीन भीषण ग्रीष्म दिवसों में मरे थे—वे दिवस जो तुम्हारे लिए भी सुरक्षित है। और उसने मुझ से पूछा, "मनु-पुत्र (Son of man)! क्या ये अस्थियाँ जीवित हो सकती हैं।" मैंने नकारात्मक उत्तर दिया। हड्डियों के ढेर में स्थान ग्रहण करने से भले ही बरूच (Baruch) हमारी रक्षा करदे, किन्तु उस दूसरी मृत्यु से, धीरे-धीरे घुल-घुल कर विनाश के मुख में जाने से, वह हमें किसी भी प्रकार नहीं बचा सकता......।

पालकी पर प्रकाश। सीढ़ियों से चढ़ कर वाहक उसे दालान में ले जाते हैं। भीषण दुर्गंध है, गंदगी का वर्णन भी नहीं किया जा सकता। दो चूहों पर प्रकाश, वे एक माँस-खण्ड पर झपट रहे हैं। मक्खियों का समूह एक बच्ची की मवाद से भरी आँखों पर भनभना रहा है। प्रकाश गहन होता है, चालीस-पचास औरतें जिनमें बहुतों के सिर मुँडे हुए हैं इधर-

उधर सीढ़ियों पर, गंदे फर्श पर, पुराने ज़माने के टूटे-फटे गद्दों-सोफों पर बैठी हुई हैं। प्रत्येक स्त्री की गोद में संतान है। सभी बच्चे दस सप्ताह की अवस्था के हैं और जिन स्त्रियों के सिर मूंडे हुए हैं उनके बच्चे आकृति-भ्रष्ट हैं। खरगोश के से होठ, हाथ-पाँव के स्थान पर माँस के लोथड़े, छोटे-छोटे हाथों में लटकती हुई कितनी ही अँगुलियाँ, वक्षस्थल पर चूचुक की दूनी संख्या—आकृति-भ्रष्ट संतान माताओं की गोद में बेडौल लग रहे हैं।

निर्देशक

मौत, नाश और क्षय का यह दूसरा रूप है। हैज़ा, ज़हर, आग, कैन्सर से तो मौत को बुलावा दिया ही जाता था, पर यह विधान ही दूसरा है—मनुष्य-जाति के रूप में वीभत्स परिवर्तन। जन्म में मृत्यु का यह दयनीय पर विकराल घातक रूप, एटमिक अणु युद्ध की ही क्यों, एटमिक उद्योग की सृष्टि है। प्राण-बिन्दुओं के सूक्ष्म विभाग (Nuclear fission) से संचालित विश्व में किसी भी बच्चे की माँ एक्स-रे टेकनिशियन हो सकती है और वही क्यों उसकी पहले चार-पाँच पीढ़ियाँ भी इस विज्ञान में अपना दख़ल रख सकती हैं।

आकृति-भ्रष्ट बच्चों से होता हुआ प्रकाश डा० पूल पर स्थिर हो जाता है। वह भी अपनी नाज़ुक नाक

पर रूमाल रखे हुए है और आँखें फाड़ कर अपने चारों ओर के इस भयंकर दृश्य को व्याकुल दृष्टि से देखता है।

"ऐसा मालूम होता है मानों सारे बच्चे एक ही अवस्था के हों।" वह लूला से कहता है जो इस समय भी उसके साथ खड़ी है।

"तो तुम क्या उम्मीद करते हो? दस दिसंबर से सत्रह दिसंबर तक ये सारे बच्चे पैदा हुए थे।"

"पर इसका तो यह अर्थ हुआ ...." वह परेशान है। अपनी बात भी पूरी नहीं कर पाता, पर तत्क्षण बात साध देता है—"यहाँ तो न्यूज़ीलैंड से वस्तु-स्थिति सर्वथा भिन्न है।

मदिरा सेवन के बाद भी, प्रशांत महासागर के पार न्यूज़ीलैंड में बैठी हुई माँ का उसे स्मरण हो आता है। अपराधी की तरह झिझक कर वह खाँसता है और आँखें दूसरी ओर फेर लेता है।

"वह रही पॉली"—लूला चिल्ला कर कमरे के उस पार दौड़ जाती है।

डा० पूल बच्चों के साथ बैठी हुई माताओं के बीच विनम्र भाव से लूला के पीछे पीछे बढ़ जाता है।

पॉली एक गद्दे पर बैठी हुई है जिस में भूसा भरा हुआ

है। पास ही एक डेस्क है जिसका किसी समय कोई खजाँची उपयोग करता था। वह अट्ठारह उन्नीस वर्ष की दुबली-पतली लड़की है। उसका सिर मूँडा हुआ है मानों अपराधी फाँसी के तख्ते पर लटकाया जाने वाला हो। चेहरा सुन्दर है, आँखें चमक रही हैं। निराश. हतप्रभ दृष्टि से वह लूला को देखती है और फिर बिना किसी जिज्ञासा या उत्सुकता के डा० पूल को, जो लूला के साथ-साथ चल रहा है।

"डार्लिंग!"

लूला झुक कर अपनी मित्र को चूम लेती है। डा० पूल की दृष्टि में 'निषेध' के चिह्न घूम जाते हैं। तब लूला पॉली के पास बैठ जाती है और हिम्मत बंधाने के लिये उसके गले में बाँह डाल देती है। पॉली उसके कंधे पर झुक कर सिसकने लगती है। लूला की आंखों में भी आँसू आ जाते हैं। गोद में बच्ची रो पड़ती है—मानों उनकी वेदना से वह भी अभिभूत हो उठा हो। पॉली लूला के कधों से सिर उठा भीगी आँखों से बदनसीब बच्ची को देखती है और फिर निषेध के वर्तुलाकार चिन्हों को सरका उसे स्तन-पान कराने लगती है। बच्ची जल्दी-जल्दी दूध पीने लगती है, मानों वह कई दिनों से भूखी हो।

"मुझे इस से बहुत स्नेह हो गया है", वह सिसकती

है—"मैं चाहती हूँ किसी तरह इसके प्राण बच जाँय।"

"डार्लिंग! डार्लिंग!" लूला और कुछ नहीं कह पाती।

सहसा एक कर्कश आवाज़ उन्हें चौंका देती है।

"चुप रहो, शोर मत करो। शाँति!"

कई ओर से आवाज़ आती है।

"शाँति, शाँति!"

"शाँति!"

"शाँति, शाँति!"

एक साथ चारों ओर निस्तब्धता छा जाती है। कुछ देर बाद बिगुल बजता है, और बच्चों की तरह पैनी-तीखी आवाज़ में अहंकार की दृढ़ता से एक व्यक्ति घोषित करता है—"शैतान के महामना पादरी-प्रमुख (Arch-Vicar), पृथ्वी के अधिपति, कैलिफोर्निया के प्रधान पादरी (Primate), दीनों के सेवक, हॉलीवुड के बिशप पधार रहे हैं।"

होटल की प्रमुख सीढ़ियों पर प्रकाश, महामना पादरी-प्रमुख शाँत-भाव से नीचे उतर रहे हैं—सौम्य मुख, भव्य चर्म-परिधान, स्वर्ण-मण्डित मुकुट, चार नुकीले सींग। परिचारक बकरे के चर्म की छत्र-छाया उन पर किये हुए है। पीछे-पीछे गिर्जे के अन्य सम्मानित अधिकारी चले आ रहे हैं। उनमें किसी के सिर पर तीन सींग हैं, किसी के सिर पर दो, किसी के सिर पर एक और कुछ सींग-विहीन हैं। महामना पादरी-

प्रमुख से लेकर निम्न पादरी भी दाढ़ी-विमुक्त हैं। उनका शरीर गठा हुआ है, और स्वर तीखा-पैना है।

नेता अपनी पालकी से उठ कर आत्मा की उन्नति करने वाले इन मान्य व्यक्तियों का स्वागत करता है।

निर्देशक

चर्च एवं स्टेट,
लोभ-घृणा-युक्त है।
मनुष्य नहीं, पशु
निम्न विकार-युक्त है।

नेता सम्मानपूर्वक मस्तक नवाता है। पादरी-प्रमुख अपने सींगों को छूकर पवित्र अँगुलियों से नेता का मस्तक स्पर्श करता है।

"सींगों की प्रतिष्ठा में सदा विनम्र रहो।"

"तथास्तु।"

नेता अपना सिर ऊँचा करता है। भक्ति-भावना से स्निग्ध स्वर कर्म-निष्ठा की दृढ़ता में बदल जाता है—

"आज की रात के लिए सारा आयोजन तो ठीक है?"

"ठीक है।"

पादरी-प्रमुख उत्तर देता है। दस वर्ष के बच्चे की सी तीव्र आवाज़ है, पर दीर्घ-काल से उत्तरदायित्व सम्हालने के कारण स्वर अत्यन्त दृढ़ है। पादरी-प्रमुख को इस बात का गर्व

है कि अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा उनका स्थान महत्वपूर्ण है। तीन सींगों के विशेषाधिकारी के तत्वावधान में गणकों ने ग्राम-ग्राम, नगर-नगर, घूम कर आँकड़े एकत्र किए हैं। आकृति-भ्रष्ट बच्चों की माँ के शरीर पर निशान कर दिया गया है, उनके सिर मूंड़ दिए गए हैं और चाबुकों के प्रहार का प्रारम्भिक दंड उन्हें मिल चुका है। इस समय सभी अपराधिनी स्त्रियाँ और उनके बच्चे शुद्धि-केन्द्रों पर उपस्थित हैं—रीवर-साइड, सन् डियेगो या लॉस एँजेलिस में। पवित्र चाबूक और चाकू भी प्रस्तुत हैं। निश्चित समय पर समारोह आरम्भ किया जा सकता है। कल सूर्योदय से पूर्व 'शुद्धि-समारोह' सम्पन्न हो जायगा।

पादरी-प्रमुख सींगों का चिह्न प्रदर्शित करता है। कुछ देर मौन रह आँखें बन्द करता है। फिर अन्य पदाधिकारियों को सम्बोधित करता है—

"इन मुंडित नारियों को, अपवित्रता की पुतलियों को, शैतान की शत्रुओं को, वासना की प्रतिमाओं को नियुक्त स्थान पर ले जाओ।"

लगभग एक दर्जन अधिकारी स्त्रियों के झुण्ड पर टूट पड़ते हैं।

"चलो, जल्दी करो।"

"शैतान के नाम पर शीघ्रता करो।"

त्रस्त, कातर, भय-विह्वल स्त्रियाँ किसी तरह भारी पाँवों को आगे बढ़ाती हैं। उनके आकृति-भ्रष्ट बच्चे दूध से भरे उन्नत स्तनों से चिपटे हुए हैं। अपनी पीड़ा की मूक कहानी व्यक्त करती हुई निःशब्द वे दरवाज़े से बाहर निकलती हैं।

भूसे के गद्दे पर बैठी हुई पॉली पर प्रकाश। एक अधिकारी निकट आ उसे ठोकर मारता है।

"खड़ी हो!" घृणा और क्रोध से वह गरज उठता है—"नरक की गंदगी, बैठी हुई क्या कर रही है, खड़ी हो!"

खींच कर उसके मुँह पर वह हाथ मारता है। दूसरे वार से अपनी रक्षा कर पॉली अपने बच्चे को उठा दौड़ कर अन्य स्त्रियों के साथ हो लेती है।

रात्रि का दृश्य। हल्के-हल्के बादलों के अन्दर तारे झलमल कर रहे हैं। चन्द्रमा निस्तेज है और पश्चिम में डूबा चाहता है। सन्नाटा गहरा है। सुदूर संगीत की स्वर-लहरी गूँज रही है, धीरे-धीरे शब्द स्पष्ट हो जाते हैं—"जय जय शैतान, जय जय महापतित शैतान।"

निर्देशक

बढ़ रहा धीरे-धीरे लंगूर का पंजा,
व्यग्र ग्रसने को
आकाश और चाँद-तारे—
पाँच दुर्गन्ध-युक्त अँगुलियाँ

मानों विश्व पर आतंकित।

एक लंगूर के हाथ की छाया कैमरे की तरफ़ बढ़ती है, धीरे-धीरे अत्यन्त विशद और भयावह होकर वह सारे चित्र-पट को अन्धकार में डुबो देती है।

लॉस एँजेलिस कॉलिजियम के अँतरंग भाग में प्रकाश। मशालों के धुँएदार प्रकाश में एक विशाल जन-समूह का दर्शन होता है। श्रेणियों में बद्ध लोग खड़े हैं और उनके सारे शरीर की मुद्रा और भाव-भंगिमा से धर्म के लिए भक्ति प्रगट हो रही है। आँखों के गर्त्त, नासिका के उभरे रंध्रों और विस्फारित ओठों से उनकी तल्लीनता प्रगट हो रही है। संगीत एक-स्वर से चल रहा है—"जय जय शैतान, जय जय महा-पतित शैतान।" नीचे मंडप में सैकड़ों स्त्रियाँ जिनके सिर मुँडे हुए हैं, छोटे-छोटे जघन्य बच्चों को बगल में दबाए बलि-वेदी के सामने नत-मस्तक खड़ी हैं। कुलपति और मठाधीश एक ओर खड़े हैं, दूसरी ओर परिचारक और अन्य पदाधिकारी। दोनों ओर से शैतान की महिमा में संगीत की ध्वनि गूँजने लगती है।

१ कोरस

जय जय शैतान,

२ कोरस

जय जय महापतित शैतान!

कुछ देर रुकने के बाद कोरस का स्वर नए रूप में परिवर्तित हो जाता है।

१ कोरस

तू पाप का साकार रूप—

२ कोरस

भीषण, दुर्द्धर्ष स्वरूप;

१ कोरस

तेरे पाश से त्राण

२ कोरस

दुष्कर, भयंकर कार्य

१ कोरस

तेरे नाम की जय हो!

२ कोरस

हे मनुज के चिर शत्रु;

१ कोरस

उस निर्माता के विद्रोही,

२ कोरस

तेरे पाश मे आबद्ध

१ कोरस

रुद्ध मनुष्य के प्राण।

२ कोरस

आत्म-हित के विपरीत

१ कोरस

तेरे षड्यन्त्र में हम लीन।

२ कोरस

तू स्वयं असीम शक्ति,

१ कोरस

उर के अंतर में तेरी गति,

२ कोरस

शाश्वत तेरी शक्ति के त्राण

१ कोरस

हे विनाश के चिर मूल।

२ कोरस

समीर की गति के चालक,

१ कोरस

तू स्वयं स्टूका[1] औ' स्पिट फायर,[2]

२ कोरस

बील्जेबूब[3] और अज़ाज़ेल[4]—

१, २. स्टूका और स्पिट फायर—प्रथम विश्व-युद्ध में बमवर्षा करने वाले भयानक यान।

३. बील्ज़ेबूब (Beelzebub)
४. अज़ाज़ेल (Azazel)
} शैतान के सहकारी प्रचंड दानव।

१ कोरस

तेरे नाम की जय हो।

२ कोरस

हे विश्व के प्रभु,

१ कोरस

इसके पतन के जनक,

२ कोरस

तेरे नाम की जय हो।

१ कोरस

राष्ट्रों के उन्नायक,

२ कोरस

प्रभु मोलक की जय हो।

१ कोरस

उस सशक्त, सर्वव्यापी,

२ कोरस

प्रभु मैमन[1] की जय हो।

१ कोरस

उस अमित शक्तिशाली,

२ कोरस

प्रभु पिशाच की जय हो।

---

१. मैमन (Mammon) दानव. धन और विलासिता का देव।

१ कोरस

चर्च में, स्टेट में—सर्वत्र व्याप्त

२ कोरस

प्रभु शैतान का विराट् रूप

१ कोरस

उसके नाम की जय हो।

२ कोरस

जय-जय शैतान,

१ कोरस

जय-जय महापतित शैतान!

सब एक साथ—

जय-जय महापतित शैतान!

संगीत की ध्वनि ज्यों ही समाप्त होती है बिना सींगों वाले दो पदाधिकारी मंच से उतर कर एक निकटवर्ती स्त्री को खींच कर बलिवेदी के पास खड़ी कर देते हैं। भय से निस्पंद, त्रस्त स्त्री चुपचाप वहाँ खड़ी रहती है। पासाडेना के कुलपति एक बड़े से चाकू पर वहाँ सान चढ़ा रहे हैं। स्त्री के होश गायब हो रहे हैं; आँखें फाड़-फाड़ कर वह कुलपति को देख रही है। सहसा एक पदाधिकारी उससे बच्चा छीन कर कुलपति के सामने लटका देता है।

आकृति-भ्रष्ट बच्चों के समूह पर प्रकाश। कोरस की ध्वनि फिर गूँजने लगती है।

१ कोरस

शैतान की शत्रुता का चिह्न—

२ कोरस

कुत्सित, घृणित;

१ कोरस

शैतान के अनुग्रह का फल—

२ कोरस

कलुष में विकृति का वपन।

१ कोरस

'अन्य' के अनुकरण का परिणाम—

२ कोरस

पृथ्वी पर नरक की यंत्रणा,

१ कोरस

विकृति की जननी कौन ?

२ कोरस

माता।

१ कोरस

अपवित्रता की पुतली कौन ?

२ कोरस

माता।

१ कोरस

मानव-जाति का अभिशाप कौन ?

२ कोरस

माता।

१ कोरस

इसका अंतर औ' बाह्य

२ कोरस

शैतान से अधिकृत।

१ कोरस

जघन्य लीला में प्रवृत्त,

२ कोरस

पिशाच से प्रतिष्ठित।

१ कोरस

भीषण शक्ति से चालित,

२ कोरस

आकर्षण से विमूढ़,

१ कोरस

अँततः विकृति की जननी।

२ कोरस

नौ मास पश्चात्, कलुष के आकार में,

१ कोरस

मनुष्य की विभीषिका औ'

२ कोरस

उसके रूप के उपहास का

१ कोरस

पृथ्वी पर जन्म।

२ कोरस

किस विधि हो प्रायश्चित्—

१ कोरस

करें रक्तदान, रक्तदान।

२ कोरस

किस विधि हो शैतान प्रसन्न,

१ कोरस

करें रक्तदान, रक्तदान।

२ कोरस

करे रक्तदान, रक्तदान, रक्तदान...

कैमरे का प्रकाश बलिवेदी पर पड़ता है। श्रेणी-बद्ध स्त्रियों का समूह शुद्धि-क्रिया की प्रतीक्षा कर रहा है। उनकी आँखों में

भय का कंप और मुँह पर निरीहता है। सहसा सबके ओंठ खुल पड़ते हैं और संगीत का स्वर, पहले रुकता-रुकता सा, फिर सम्हल कर, गूँज उठता है।

"करें रक्तदान, रक्तदान, रक्तदान, रक्तदान, रक्तदान, रक्तदान..."

बलिवेदी पर फिर प्रकाश। नर-नारियों का विशाल समूह एक स्वर से गीत की लय में तल्लीन है।

कुलपति (Patriarch) छुरे पर सान चढ़ाने का पत्थर मठाधीश (Archimandrite) को देता है और स्वयं बाँए हाथ से आकृति-भ्रष्ट बच्चे की गरदन छुरे पर झुका देता है। बस दो-तीन झटके पर्याप्त होते हैं। कुछ देर चीख कर, कराह कर, बच्चा सदा के लिये शाँत हो जाता है।

रक्त की कुछ बूँदें जब वेदी पर बह जाती हैं, कुलपति नन्हे से शव को उठाकर अँधकार के गर्त्त में फेंक देता है। संगीत की ध्वनि बहुल हो जाती है—

'करें रक्तदान, रक्तदान, रक्तदान, रक्तदान, रक्तदान, रक्तदान, रक्तदान.........."

"यह अब भी क्यों खड़ी है? भगाओ इसे यहाँ से।" कुलपति का आदेश कड़क उठता है।

बच्चे की माँ भय से काँपती हुई भाग जाती है। गिर्जे के दो पदाधिकारी पवित्र चाबुक से उस पर तीव्र प्रहार करते हैं। संगीत की मिठास में रुदन की व्यथा घुल जाती है।

दर्शकों की भीड़ में करुण चीत्कार और अर्द्ध तृप्ति का तुमुल घोष सुनाई पड़ता है।

बलि की इस परिश्रम-साध्य क्रिया से पदाधिकारियों को कुछ थकावट और कुछ रोष आ रहा है। वे एक अल्पवयस्क दुर्बल युवती को वेदी पर खींचते हैं। युवती कृश और क्षीण है—अभी तक लड़की ही लग रही है। उसका मुँह दिखाई नहीं पड़ रहा है कारण लोग उसे सामने से खींच रहे हैं। एक पदाधिकारी ज्योंही एक ओर होता है, पॉली का मुँह स्पष्ट हो जाता है।

बच्ची के अँगूठा गायब है और आठ चूचुक हैं। उसे कुलपति के सामने पेश किया जाता है।

१ कोरस

किस विधि हो प्रायश्चित् ?

२ कोरस

करें रक्तदान, रक्तदान ?

१ कोरस

किस विधि हो शैतान प्रसन्न ?

इस बार सारा समूह स्वर में स्वर मिलाता है—

"करें रक्तदान, रक्तदान, रक्तदान, रक्तदान, रक्तदान, रक्तदान......"

बच्ची की गरदन कुलपति के पंजों में जकड़ जाती है।

"नहीं, नहीं, ऐसा न करो ! दया करो !"

पॉली आगे बढ़ना चाहती है। पादरी उसे ठेलकर पीछे कर देते हैं। कुलपति स्थिर, शाँतभाव से बच्ची की गरदन छुरे पर नाप देता है। एक झटके में ही दो टुकड़े हो जाते हैं। धड़ वेदी के पीछे अन्धकार के गर्त्त में फेंक दिया जाता है। पॉली की हिचकियाँ बँध जाती हैं।

कोलाहल गूँज उठता है। डा० पूल पर प्रकाश। आगे की पंक्ति में बैठा हुआ पूल इस दृश्य को देखते ही बेहोश हो जाता है।

'पापागार' के अन्दर का दृश्य। एक ओर ऊँचे मंडप पर पादरी-प्रमुख विराजमान हैं। निकट ही बलि-वेदी है, बगल में द्वार हैं जो इस समय बन्द हैं। सामने जन-साधारण के लिए स्थान है। पादरी-प्रमुख से कुछ दूर हटाकर एक अंगीठी रखी हुई है, जिसमें चारकोल सुलग रहा है। एक सींग विहीन पादरी सूअर का माँस भून रहा है। एक दूसरा पादरी जिसके दो सींग हैं, डा० पूल को होश में लाने का यत्न कर रहा है। जब ठंडे जल के छींटों से कोई फल नहीं निकला तो उसने कस-कस कर चपत का प्रयोग शुरू किया। तत्काल फल मिला। जीव-विज्ञान-वेत्ता गाल मसलता हुआ आँखें खोलता है और चपत से बचने के लिए चटपट उठ बैठता है।

"कहाँ हूँ मैं ?"

"पापागार में" मठाधीश उत्तर देता है। "महामना पादरी-प्रमुख के सामने।"

डा० पूल उस महान् व्यक्ति को शीघ्र पहचान लेता है। उसका मस्तिष्क कार्य करने लगता है। वस्तु-स्थिति को समझ कर वह सिर नवा देता है।

"एक स्टूल लाओ।" पादरी-प्रमुख की आज्ञा होती है।

स्टूल वहाँ रखा जाता है ल को उस पर बैठने का आदेश होता है। डा० पूल लड़खड़ाते पाँवों से पादरी-प्रमुख के निकट आ स्टूल पर बैठता है। ज्योंही वह अपना स्थान ग्रहण करता है, किसी के चीत्कार का परिचित स्वर उसके ध्यान को अपनी ओर आकर्षित करता है।

वेदी पर प्रकाश। कुलपति आकृति-भ्रष्ट बच्चों को काट-काट कर अन्धकार के गर्त्त में फेंक रहा है। उसके परिचारक बिलखती हुई माताओं पर ठोकरों की बौछार कर रहे हैं।

डा० पूल पर प्रकाश। उसका शरीर काँप रहा है। दोनों हाथों से उसने अपना मुँह ढक लिया है। स्वर-पथ पर सगीत की शुष्क लहरी विद्रूप कर रही है—

"करें रक्तदान, रक्तदान, रक्तदा न, रक्तदान, रक्तदान..... "

"आह, कितना वीभत्स!" डा० पूल क्षीण स्वर में कुछ कहता है।

"पर इसमें बीभत्स क्या है ? तुम्हारे धर्म में भी तो रक्त-पात का आयोजन है।" महामना पादरी-प्रमुख का मुँह व्यंग्य से चमक उठता है—

"मेमने[1] (Lamb) के रक्त में स्नान—क्या मैं झूठ बोल रहा हूँ ?"

"यह तो ठीक है" डा० पूल उसकी बात स्वीकार करता है—"पर हम लोग सचमुच रक्त में मार्जन नहीं करते। यह तो केवल कहा जाता है—गीतों में गाया भर जाता है।"

डा० पूल की नजर दूसरी ओर पड़ती है। चारों ओर सन्नाटा खिंचा हुआ है। एक पादरी बड़ी सी प्लेट में माँस के कुछ टुकड़े रखकर आ रहा है। साथ में कुछ बोतलें भी हैं। महामना पादरी-प्रमुख के सामने टेबुल पर खाने-पीने का सामान रख दिया जाता है। पंचम जॉर्ज के युग के छुरे-काँटे वहाँ रखे हुए हैं। उनकी सहायता से पादरी-प्रमुख भोजन में दत्त-चित्त होता है।

माँस का एक टुकड़ा मुँह में डालकर वह डा० पूल से भी कुछ खाने के लिए कहता है और एक बोतल की तरफ इशारा कर देता है।

डा० पूल खाने में जुट जाता है भूख से उसकी आँतें

१. लैंब—निर्दोषिता और सादगी का प्रतीक। क्राइष्ट के लिए बहुत प्रयुक्त होता है—ईश्वर का मेमना (Lamb of God)।

डुब रही थीं। चारों ओर शाँति है। केवल वेदी से रक्त की बूँदे चू रही हैं और मुँह में ग्रास चल रहा है।

"मालूम होता है तुम्हारी इसमें श्रद्धा नहीं,"—पादरी-प्रमुख डा० पूल से पूछता है। खाने में दोनों मशगूल हैं।

"किन्तु मै आपको विश्वास दिलाता हूँ—" डा० पूल अपना अडिग विश्वास व्यक्त करने के लिए आतुर है।

"देखो, देखो, मेरी बात सुनो। मैं चाहता हूँ कि तुम यह समझ लो कि हमारी मान्यताएँ निराधार नहीं हैं। हमारा धर्म बुद्धिवादी और यथार्थवादी है।" कुछ देर के लिए पादरी-प्रमुख अपना भाषण बन्द करता है। बोतल से एक घूँट ले और माँस का एक टुकड़ा चबा वह अपनी बात पूरी करता है—"मैं आशा करता हूँ, तुम्हें विश्व-इतिहास की तो कुछ जानकारी होगी ही।"

"चलती हुई बातें ही जानता हूँ।" डा० पूल विनम्र-भाव से उत्तर देता है। पर वह यह भी बता देना आवश्यक समझता है कि इस विषय पर उसने कितनी ही किताबे पढ़ रखी हैं, जैसे—ग्रेव की 'रशिया का उत्थान और विनाश' (Rise and Extinct of Russia), वेसडो की बेजोड़ पुस्तक, 'पश्चिमी सभ्यता का पतन' (Collapse of Western Civilisation); ब्राइट की 'यूरोप की शव-परीक्षा' (Europe, An Autopsy) और पर्सीवल पॉट का अत्यन्त दिलचस्प

उपन्यास पर वास्तविक घटनाओं से पूर्ण 'कोनी द्वीप के अन्तिम दिन' (The Last Days of Coney Island)।"

पादरी-प्रमुख अपना सिर हिलाता है।

"विनाश के बाद जो कुछ प्रकाशित हुआ मैं नहीं जानता।" उपेक्षा के साथ वह डा० पूल से कहता है।

"ओह, मैं भी कितना मूर्ख हूँ।" डा० पूल ने अपनी झेंप मिटाने के लिए वाचालता का प्रयोग किया। इधर उसने बातें बनाने में काफी तरक्की कर ली थी।

"लेकिन विनाश से पहले की कितनी ही पुस्तकें मैंने पढ़ी हैं। दक्षिणी कैलिफोर्निया में तो कई सुन्दर पुस्तकालय थे। अब तो कितने ही नष्ट हो चुके हैं और मुझे भय है, जलावन के अभाव में हमें बचे-खुचे पुस्तकालयों को काम में लाना ही होगा। फिर भी मैंने तीन-चार हज़ार पुस्तकें अपनी अध्ययन-गोष्ठी (Seminary) के लिए सुरक्षित रख छोड़ी हैं।"

"मध्य युग के गिर्जों की तरह अध्ययन-गोष्ठी।" डा० पूल अपनी संस्कृति की गरिमा से उत्साहित हो जाता है— "सभ्यता और धर्म का तो अविच्छिन्न सम्बन्ध है। इस बात को मेरे नास्तिक मित्र...।" सहसा उसे स्मरण हो आया कि यहाँ गिर्जे की मान्यतायें भिन्न हैं। अपने वाक्य को वह अधूरा छोड़ देता है और परेशानी छिपाने के लिए शराब पीने लगता है।

सौभाग्यवश उसके शब्द महामना पादरी-प्रमुख के कानों तक नहीं पहुँचे। वह अपने विचारों में ही डूबा हुआ था—डा० पूल का आक्षेप सुन नहीं सका।

"इतिहास के अध्ययन से मैं तो इसी निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि मनुष्य ने प्रकृति से विद्रोह किया, अपने अहं को सृष्टि के क्रम से शक्तिशाली माना और शैतान की महिमा (सींगों का प्रदर्शन) का अन्य सत्ता से मुकाबिला किया। लगभग एक लाख वर्ष तक इस संघर्ष का परिणाम अनिश्चित रहा। तीन शताब्दियों पहले पासा पलटा और ऐसा लगा मानों रातोंरात एक पक्ष ने विजय पाई।......कुछ और लो—सूअर का यह पाँव—क्यों ?"

डा० पूल एक टुकड़ा उठाता है। पादरी-प्रमुख स्वयं बड़े चाव से खा रहा है। "सृष्टि के क्रम पर मनुष्य ने एक बार कुछ विजय प्राप्त की थी, उसकी गति कुछ तेज भी हुई।"—पादरी-प्रमुख एक क्षण के लिए दांतों में उलझे हुए हड्डी के टुकड़े को निकालने के लिए रुकता है।"—लेकिन शैतान को अन्त में मनुष्य का सहयोग मिला और उसने सारे संसार पर अपने आतंक का सिक्का जमा दिया।"

भाषण के प्रवाह में पादरी-प्रमुख को यह भी ध्यान नहीं रहा कि वह सेंट अज़ाज़ेल (St. Azazel) की वेदी के सम्मुख धर्म-मंच पर बैठा हुआ है। वह ज्योंही अपने हाथ

को सीधा करता है झटके के कारण फोर्क से पकड़ा हुआ माँस का टुकड़ा नीचे गिर पड़ता है। अपनी वाक्-चातुरी से प्रसन्न हो वह जमीन पर गिरे हुए माँस के टुकड़े को उठाकर आस्तीन से पोंछता है और खाने लगता है।

"नई दुनिया से मशीन और अन्न से लदे जहाज़ बाहर जाने लगे। क्षुधा-पीड़ित जनता के लिए भोजन चाहिए। उनके सिर से मानों एक बोझ उतर गया। मशीनें उनके लिए काम करने लगीं। उन्होंने ईश्वर को धन्यवाद दिया—उसकी उदारता के प्रति कृतज्ञता प्रगट की—उसी ने तो पृथ्वी को अन्नदा बनाया, आदि-आदि।" पादरी-प्रमुख व्यंग्यपूर्वक खिलखिलाता है—"यह कहना व्यर्थ है कि बिना किसी स्वार्थ-भाव के कोई वस्तु दान दी जाती है। ईश्वर के दान का भी मूल्य है और शैतान का यही प्रयत्न होता है कि मनुष्य को ईश्वर के आशीर्वाद के लिये अधिक से अधिक मूल्य चुकाना पड़े। उदाहरण के लिये मशीन ही लो। शैतान अच्छी तरह जानता था कि परिश्रम से जी चुराने पर शरीर और आत्मा दोनों मशीन के गुलाम हो जायँगे। वह जानता था कि मशीन यदि मनुष्य की मूर्खता पर आवरण डाल सकती है, तो वह उसकी मेधा, बुद्धि और योग्यता को भी ढक सकती है। मशीन से धड़ाधड़ उत्पादन होने लगा। लोगों ने कहा अगर चीज़ में कोई ऐब है तो पैसे वापस लो और अगर मनुष्य की वैयक्तिकता या बुद्धि

का उसमें कुछ भी अंश दिखाई पड़े तो दूने पैसे वापस लो। ...और फिर नई दुनिया का वह अन्न-भंडार! हे भगवान्, हम तुम्हारे कृतज्ञ हैं...। पर शैतान जानता था कि भोजन का सम्बन्ध संतान की उत्पत्ति से भी है। जब अन्न का संकट था, लोग अपनी प्रेम-लीला से बच्चों की मृत्यु-संख्या ही बढ़ाते थे और इस प्रकार केवल जनता की जीवन-काल-सीमा कम करते थे। अन्न-संकट दूर होते ही जन-संख्या में वृद्धि होने लगी—स्त्री-पुरुष का संयोग और बच्चों का उत्पादन—मानों लोगों ने यही कसम खा रखी हो।

पादरी-प्रमुख का व्यंग्य फिर गूँज उठता है।

चित्रपट पर प्रकाश। शुक्राणु का परिवर्द्धित चित्र—वह अपनी उद्दाम-शक्ति लगा स्लाइड में ऊपर की ओर बाएँ कोने में फैले रज से मिलने के लिए अत्यन्त प्रयत्न कर रहा है। स्वर-पथ पर संगीत-ध्वनि गूँज रही है। १८०० ईसवी के लंदन पर एक विहंगम दृष्टि। तब संघर्ष और स्व-रक्षा में सन्नद्ध डार्विनियन रेस पर प्रकाश। फिर १६०० ई० के लंदन का दृश्य। शुक्राणु पर पुनः प्रकाश। फिर लंदन पर प्रकाश जैसा कि जर्मन उड़ाकू ने १६४० में उसे देखा था। महामना पादरी-प्रमुख पर गहन प्रकाश।

"हे ईश्वर", वह कुछ काँपती हुई आवाज़ में कहता है। ऐसी आवाज़ इन भावों को व्यक्त करने के लिए समुचित

समझी जाती है। —"इन अमर आत्माओं के लिए हम तेरे कृतज्ञ हैं।" तब स्वर में परिवर्तन होता है—"ये अमर आत्माएँ व्याधि के मन्दिर में कैद हैं—ऐसे शरीर जो निरंतर पीड़ित, दुखित, निकृष्ट और हेय हैं। शैतान ने जो कुछ सोचा था वही हुआ। पृथ्वी इन माँस के पिंडों से भर गई। एक वर्गमील भूमि पर पाँच सौ, आठ सौ, और कभी-कभी तो दो हज़ार आदमी का भार हो गया। पृथ्वी की उर्वरा-शक्ति दिन पर दिन क्षीण होती गई। कृषि के नियमों का उल्लंघन किया गया। खनिज द्रव्यों के लिए पृथ्वी के साथ अत्याचार हुआ। जंगल साफ़ होने लगे, उपजाऊ भूमि बंजर होने लगी। नई दुनियाँ में भी, जो पुरानी के लिए आशा-किरण थी, यही हुआ। ज्यों-ज्यों उद्योग-धन्धों में तरक्की हुई, भूमि की उर्वरा-शक्ति कम होती गई। देश के गौरव में वृद्धि हुई, सोने का वहाँ ढेर लग गया, उसकी ताक़त का लोहा लोगों ने माना—और फिर मानों अचानक उसकी भूख जाग उठी—ओह, भीषण भूख! शैतान ने अपनी दूरदर्शिता से यह सब पहले ही देख लिया था। भूख से अन्न की माँग हुई, अन्न से जन-संख्या की आशातीत वृद्धि, विशाल जन-संख्या से फिर भूख की तकलीफ़। ओह, कितनी भयंकर भूख, नई प्रज्वलित भूख, असंख्य मज़दूर, प्रोलिटेरि-एट जन-समुदाय की भूख, श्री-सम्पन्न नागरिकों की भूख जिन्हें जीवन-यापन की सारी सुविधाएँ प्राप्त थीं—मोटर, रेडियो आदि,

आदि, —वह भूख जो सभी युद्धों का मूल कारण है और सभी युद्ध जो भूख की आग को और भी उभारते हैं।"

पादरी-प्रमुख बोतल की एक घूँट गले में नीचे उतारने के लिए रुकता है।—"और यह याद रखिये", उसकी बात का क्रम अभी टूटा नहीं है—"युद्ध के विध्वंसकारी शस्त्रों, अणु-बम आदि के प्रयोग के बिना भी शैतान को अपने कार्य में सफलता मिलती। गति कुछ मंद भले ही हो, पर यह निश्चय था कि आदमी संसार का विनाश कर अपना विनाश अवश्य करता। बचने का कोई रास्ता नहीं था। वे तो उसके दोनों सींगों में फँस गए थे। अगर युद्ध के सींग से किसी तरह वे अपनी रक्षा भी कर लेते तो भूख का शिकार उन्हें होना ही पड़ता। और जब भूख से मरने की बारी आती तो युद्ध की शरण लेना अवश्यंभावी होता। अगर इस 'गति साँप छुछुन्दर केरी' से बचने के लिए वे कोई शांतिपूर्ण और बुद्धिमानी का मार्ग निकालने की कोशिश करते तो शैतान ने उनके लिए आत्म-विनाश का सींग पहले से ही तैयार कर रखा था। उस दूरदर्शी ने औद्योगिक क्रांति के आरम्भ में ही यह देख लिया था कि आदमी मशीन की उन्नति से इतना दंभी हो जायगा कि यथार्थ के धरातल पर उसके पाँव भी नहीं पड़ेंगे। ठीक यही हुआ। मशीन के गुलाम ने प्रकृति-विजेता के उपलक्ष्य में अपने आपको बधाई दी। प्रकृति-विजेता! ठीक!! सच्चाई तो यह थी कि

प्रकृति के संतुलन को उसने नष्ट कर दिया था और अब फल भुगतने के लिए उसे विवश होना पड़ा। ज़रा तुम सोचो तो सही कि इस विनाश के सदी-डेढ़-सदी पहले आदमी क्या करने पर उतारू था—नदियों पर ताक़त दिखाना, वन्य-पशुओं की हत्या करना, जंगलों का नाश करना, समुद्र-तट की उठी हुई वालुका-राशि को जल में डुबो देना, पेट्रोल के सागर को फूँक देना, युग-युग में संचित खनिज-द्रव्यों का अपव्यय करना! मूर्खता और दुष्टता के साथ क्रीड़ा! और इसे उसने संज्ञा दी 'उन्नति' की। 'उन्नति!'—उसने फिर अपना शब्द दुहराया—"उन्नति! किंतु मैं तुम्हें यह भी बता दूँ कि अकेले आदमी का दिमाग़ इस तरह का नाम नहीं ढूँढ़ सकता था—कितना व्यंग्यपूर्ण नाम! ऐसे मौके पर बाहर से सहायता लेनी ही पड़ती है। शैतान का अनुग्रह तो सद्यः प्राप्त है, आदमी का बस सहयोग चाहिए। और कौन सहयोग देना नहीं चाहता?"

"सहयोग कौन नहीं देना चाहेगा?" डा० पूल मुस्करा कर पादरी-प्रमुख के मत पर अपनी सहमति देता है। मध्य-युग के गिर्जों का उल्लेख कर वह एक बार गलती कर चुका था और उसे दुहराना नहीं चाहता था।

"उन्नति और राष्ट्रीयता—ये दो बड़े-बड़े विचार उसने आदमी के दिमाग में ठूँस दिए। उन्नति—अर्थात् वह सिद्धांत

कि "कुछ नहीं' के बदले 'कुछ' की प्राप्ति हो; वह सिद्धांत कि लाभ के लिए कुछ भी खर्च न हो; वह सिद्धांत कि आप आगामी पचास वर्षों की घटनाओं का ज्ञान रखते हैं; वह सिद्धांत कि अपने अनुभवों के बल पर आप अपनी वर्तमान गति-विधि को समझते हैं; वह सिद्धांत कि राम-राज्य निकट है और उसकी स्थापना के लिए, अपने महत् आदर्शों के लिए आप कुत्सित से कुत्सित साधनों का प्रयोग कर सकते हैं और आपको इस बात का अधिकार है। आप उन लोगों को लूट-खसोट, मार-काट सकते हैं जो आपके मतानुसार (और आपका मत ही अखण्ड सत्य है) पृथ्वी पर स्वर्ग की स्थापना में बाधा पहुँचा रहे हों। कॉर्ल मार्क्स का वह वचन याद है—'शक्ति उन्नति की धात्री है।'[1] वह तो यह भी लिख देता कि उन्नति शक्ति की धात्री है पर उद्योग-धन्धों के प्रारम्भ में शैतान यह झगड़ा खड़ा करना नहीं चाहता था। शक्ति के धात्रीत्व की तो दूनी महत्ता है, कारण जहाँ विज्ञान की उन्नति बिना किसी भेद-भाव के अखिल विनाश के साधन प्रस्तुत करती है राजनैतिक तथा नैतिक उन्नति उन साधनों के प्रयोग के लिए बहाने जुटा देती है। मैं आपको यह साफ बता दूँ, जनाब, कि इतिहास का अधूरा ज्ञान भ्राँति है, पागलपन है। आधुनिक इतिहास का आप जितना अध्ययन करेंगे, यह बात उतनी

१. 'Force is the mid-wife of Progress'.

ही स्पष्ट हो जायगी कि शैतान ने कितनी दूर तक मार्ग-निर्देश किया है।" पादरी-प्रमुख सींगों का चिह्न प्रदर्शित करता है और शराब की दो-चार घूँटों से शरीर में ताज़गी ला अपनी बात पूरी करने लगता है—"और फिर राष्ट्रीयता की भावना? यह वह सिद्धांत है कि आप जिस राष्ट्र की प्रजा हैं वही आपका सच्चा देवता है, शेष राष्ट्रों के देव झूठे हैं। ये सारे झूठे-सच्चे देव अल्हड़ जवानों की तरह विचार-अविचार की मर्यादा के प्रति उदासीन हैं। शक्ति, श्री और सम्मान के लिए संघर्ष सत्यं शिवं सुंदरं के लिए जिहाद है। इतिहास के एक विशिष्ट काल में ये सिद्धांत लोक-प्रिय हुए और यही तथ्य शैतान के अस्तित्व का सुन्दर प्रमाण है, और इससे बढ़कर क्या प्रमाण हो सकता है कि शैतान ने इस संघर्ष में विजय प्राप्त की।"

"मैं ठीक से समझा नहीं"—डा० पूल ने अपना संदेह प्रगट किया।

"इसमें ठीक से समझने की क्या बात है? आपके पास दो सिद्धांत हैं। प्रत्येक सिद्धांत भ्रामक और गुमराह करने वाला है, प्रत्येक सिद्धांत ऐसे कार्य करने के लिए मजबूर करता है जिनका परिणाम घातक होता है। किंतु फिर भी सारा सभ्य मानव-समाज दृढ़ता-पूर्वक इन सिद्धांतों को अपनाता है—फलतः संघर्ष और विनाश। ऐसा आख़िर क्यों? किसके संकेत से? किसकी उत्तेजना से? किसकी प्रेरणा से? इनका बस एक ही

उत्तर है।"

"आपका तात्पर्य है, आप समझते हैं... यह सब शैतान के करण हुआ ?"

"मानव-जाति की अधोगति और विनाश की कामना अन्य कौन कर सकता है ?"

"ठीक, ठीक", डा० पूल स्वीकार करता है—"किंतु फिर भी प्रोटेस्टेंट ईसाई होने के कारण इस बात को मैं . "

"अच्छा, यह बात है ?" पादरी-प्रमुख के स्वर में व्यंग्य घुल जाता है—"तब तुम लूथर से भी अधिक जानते हो, क्रिश्चियन चर्च से भी अधिक तुम्हें इस बात का ज्ञान है। तुम्हें यह भी मालूम है या नहीं कि दूसरी शताब्दी के बाद से किसी भी कट्टर ईसाई ने यह नहीं माना कि आदमी में ईश्वर की प्रतिष्ठा हो सकती है। और सच भी है, उसमें तो केवल शैतान की ही प्रतिष्ठा हो सकती है। आखिर लोगों की इस धारणा का क्या कारण था ? यही न कि वे यथार्थ से मुँह नहीं मोड़ना चाहते थे ? साँच को आँच क्या ? शैतान, पिशाच, दानवी-प्रतिष्ठा, ये तो यथार्थ तथ्य हैं।"

"मैं नहीं मानता", डा० पूल ने विरोध किया—"एक वैज्ञानिक के नाते .."

"एक वैज्ञानिक के नाते तुम उन अनुभवों की उपेक्षा नहीं कर सकते जो तथ्यों को सुचारु रूप से स्थापित करते हैं। यहाँ

तथ्य क्या है? एक अनुभव और स्व-निरीक्षण का तथ्य, अर्थात् कोई भी व्यक्ति अपमान, अधोगति, कष्ट, अङ्ग-भङ्ग, मृत्यु नहीं चाहता; दूसरा इतिहास का तथ्य, अर्थात् किसी विशिष्ट काल में मानव-समाज के एक विशाल अंश का ऐसे विश्वासों में मान्यता रखना और ऐसी कार्य-प्रणालियों को अपनाना जिनका परिणाम होता है बड़े पैमाने पर कष्ट, विध्वंस और विनाश। इस बात को बस एक ही ढंग से समझाया जा सकता है कि मनुष्यों को किसी बाहरी चेतना से प्रेरणा मिली। इसने या तो उन्हें उत्तेजित किया या उनमें अपनी प्रतिष्ठा कर ली और विनाश की लालसा को तो इसने इतना उत्कट कर दिया कि उन्हें अपना सुख-दुख समझने का भी विवेक नहीं रहा।"

कुछ देर तक सन्नाटा।

"किंतु", डा० पूल ने आखिर साहस किया—'इन तथ्यों को तो दूसरे ढंग से भी समझाया जा सकता है।"

"पर इतने सुचारु ढंग से नहीं।" पादरी-प्रमुख अपनी बात पर अटल था। "फिर और भी तो प्रमाण हैं। प्रथम विश्व-युद्ध को ही उदाहरण-स्वरूप लो। अगर साधारण जनता या राजनीतिज्ञों पर शैतान का अधिकार नहीं होता तो वे पन्द्रहवें वेनेडिक्ट या लार्ड लैंसडाउन की बात नहीं मान लेते? बिना रक्त-पात के शान्ति स्थापित नहीं कर लेते? पर यही तो नहीं होना था—नामुमकिन था। आत्म-कल्याण की बात सोचना

उनके लिए असम्भव था। उन्हें तो वही करना था जो शैतान उनसे करवा रहा था और उनके अन्दर का शैतान चाहता था कि कम्यूनिस्ट क्रान्ति हो; उस क्रान्ति की फासिस्ट प्रतिक्रिया हो; मुसोलिनी, हिटलर ।र पोलिटवरो ताकत में आवें; अकाल भूख और मरी का प्रचार हो; बेकारी दूर करने के लिए युद्ध का सामान बने; यहूदियों और कुलाकों को प्रताड़ित किया जाय; नाज़ी और कम्युनिस्ट पोलैंड का बटवारा कर एक दूसरे पर टूट पड़ें। हाँ, वह चाहता था कि दास-प्रथा का अत्यन्त अमानुषिक रूप में फिर से प्रचार हो। वह चाहता था कि जनता को वलपूर्वक देश से खदेड़ दिया जाय और गरीबी का तांडव हो। वह चाहता था कि कंसेन्ट्रेशन कैंप और गैस-चेम्बर की स्थापना हो। वह चाहता था कि बम की वर्षा हो। कितने सुन्दर शब्द हैं—बम की वर्षा! वह चाहता था कि एक क्षण में युग-युग का ऐश्वर्य मिट्टी में मिल जाय, भविष्य की उन्नति के सपने सदा के लिए सो जॉय और संस्कृति, सदाचार तथा स्वतन्त्रता का नाम ही मिट जाय। शैतान यही चाहता था और यही हुआ। वह असीम शक्तिशाली राजनीतिज्ञों, सेनानायकों, पत्रकारों और साधारण लोगों के हृदय में प्रवेश करने की शक्ति रखता था। उसके जरा से संकेत से कैथलिकों ने पोप की अवज्ञा की, लैंसडाउन को देशद्रोही ठहराया गया—उसके देश-प्रेम पर आक्षेप किया गया। युद्ध चार वर्ष

तक चलता रहा और सब कुछ पूर्व निश्चित स्कीम के अनुसार ही हुआ। संसार की हालत दिन पर दिन बिगड़ती गई, जैसे-जैसे हालत बिगड़ती गई लोगों ने प्रसन्न हो शैतान की आज्ञा को सिर-माथे लगाया। वे पुरानी धारणायें जो व्यक्ति की आत्मा का मूल्य समझती थीं ढह गईं, पुराने नियन्त्रण अपना बल खो बैठे; संवेदना और सहृदयता का कोई मूल्य नहीं रहा। उस 'दूसरी शक्ति' ने चिरकाल से मनुष्य के मस्तिष्क में जिन विचारों को जन्म दिया था, वे एक-एक कर खिसक गये—रिक्त-पूर्ति उन्नति और राष्ट्रीयता के पागल सपनों से हुई। इन सपनों को सच मानते ही आदमी कीड़े-मकोड़ों से श्रेष्ठ नहीं रहा और वैसा ही व्यवहार उसके साथ हुआ।"

पादरी-प्रमुख स्मित-वदन माँस का एक दूसरा टुकड़ा उठाता है। बात अभी भी पूरी नहीं हुई थी—"अपने जमाने में हिटलर भी शैतानियत का अच्छा नमूना था। सन् १६४५ से तीसरे विश्व युद्ध के अर्से में जैसे अनेक नेता उत्पन्न हुए थे उतना प्रबल तो हिटलर नहीं था—मेरा तात्पर्य है कि उतनी प्रबलता से शैतान ने उसमें अपनी प्रतिष्ठा नहीं की थी जितनी बाद के नेताओं में—किन्तु इतना तो सत्य है, अपने युग का वह विशिष्ट पुरुष था। दूसरे व्यक्तियों की अपेक्षा वह अधिक दावे के साथ कह सकता था—'मैं नहीं, मेरे अन्दर का शैतान।' अन्य व्यक्ति तो कुछ अंशों में ही शैतान से

प्रतिष्ठित थे, जैसे वैज्ञानिक—अच्छे-भले आदमी, दूसरों की भलाई चाहने वाले, पर शैतान ने उन्हें अपनी ओर खींचा और उनके हृदय में ऐसे स्थान पर अपनी प्रतिष्ठा की जहाँ वे मनुष्य न रहकर विशेषज्ञ बनने लगे। परिणाम हुआ, युद्ध के बर्बर साधन, ग्लैंडर्स और बम। और फिर उस आदमी को भी न भूलो—क्या नाम था उसका?—वही जो कई वर्षों तक अमेरिका का सभापति रहा था........।"

"रूजवेल्ट?" डा० पूल ने सुझाया।

"ठीक, रूजवेल्ट। तुम्हें याद है, द्वितीय विश्व-युद्ध में किन शब्दों को वह बार-बार दुहराया करता था? 'बिना शर्त आत्म-समर्पण'। जानते हो इन शब्दों का अर्थ, इनका तात्पर्य? इसे कहते हैं शैतान की प्रत्यक्ष और समुचित प्रेरणा!"

"यह तो आप कहते हैं". डा० पूल ने विरोध किया, 'पर आपके पास प्रमाण क्या है?"

"प्रमाण?" पादरी-प्रमुख ने कहा, "युद्ध के बाद का सारा इतिहास इसका प्रमाण है। ज़रा याद करो, संसार में क्या-क्या हुआ जब उसके शब्दों ने एक निर्दिष्ट नीति का रूप ग्रहण कर लिया और उसे अमल में लाया गया। बिना शर्त आत्म-समर्पण। अर्थात् तपेदिक के लाखों शिकार, चोरी करने के लिए मजबूर लाखों बच्चे, शरीर बेचने के लिए विवश लाखों बच्चियाँ। बच्चे-बच्चियों को अपने चंगुल में फँसा देख शैतान

को बड़ी प्रसन्नता होती है। बिना शर्त आत्म-समर्पण, अर्थात् युरोप का नाश, एशिया में अराजकता, सर्वत्र हाहाकार—भूख, मरी, विप्लव, अत्याचार! इतिहास के किसी भी काल में निर्दोष व्यक्तियों पर इतना अत्याचार कभी नहीं हुआ था। निर्दोष जब सताया जाता है, तब, तुम जानते हो, शैतान को कितना आनन्द आता है? महाविनाश तो होना ही था, वही हुआ। यह है तुम्हारा बिना शर्त आत्म-समर्पण। उसकी इच्छा के अनुकूल ही सब कुछ हुआ। इन सब के चरितार्थ होने में कोई चमत्कार या अद्भुत बात नहीं हुई—सब कुछ स्वाभाविक रूप से हुआ। विधि की लीला के बारे में हम जितना सोचते हैं उतना ही हमें आश्चर्य होता है।" अनन्य भक्ति-भाव से पादरी-प्रमुख सींगों का चिह्न प्रदर्शित करता है। कुछ देर रुक कर वह कहता है—"कुछ सुनाई देता है?"

कुछ क्षण वे चुपचाप बैठे रहते हैं। संगीत की अस्पष्ट, धुँधली ध्वनि बहुल होने लगती है—"करें रक्तदान, रक्तदान, रक्तदान......।" एक आकृति-भ्रष्ट बच्चे का क्षीण चीत्कार सुनाई पड़ता है—कुलपति छुरे पर उसके दो टुकड़े कर वेदी के पीछे अन्धकार के गर्त्त में फेंक देता है। बच्चे की माँ पर चाबुकों का प्रहार होता है। उत्तेजित जनता में किसी के करुण रुदन की तीव्र ध्वनि फूट रही है।

"तुम हैरान हो रहे होगे कि बिना किसी चमत्कार के

उसने यह नवीन सृष्टि कैसे कर दी ?" पादरी-प्रमुख गहरे विचारों में डूब कर कहता है—"पर यह सब उसने सहज तरीके से ही किया, आदमियों के सहयोग से, उन्हें और उनके विज्ञान को अपना साधन बना कर। उसने तो आदमी की एक नई जाति ही खड़ी करदी, ऐसी जाति जिसके रक्त के अणु-अणु में दोष, जिसके भीतर-बाहर सर्वत्र गन्दगी और जिसके भविष्य में बस अन्धकार, आकृति-भ्रष्टता और पूर्ण-विनाश का योग है। ओह! 'जीवित पाप' के हाथ में पड़ना ही भयानक है।"

"तब आप लोग उसकी पूजा ही क्यों करते हैं ?"

"भूखे शेर को तुम खाना क्यों देते हो ? इसीलिये न कि तुम स्वयं उसके ग्रास न बन जाओ। अवश्यंभावी तो होना ही है, पर जितनी देर उसे टाला जा सके उतना ही अच्छा है। क्या पृथ्वी, क्या नरक, सभी जगह उसकी इच्छा सर्वोपरि है और हम तो फिर इस पृथ्वी पर ही हैं।"

"यह तो कोई अभिमान की वस्तु नहीं।" दार्शनिक स्वर में डा० पूल अपना मत प्रकट करता है।

दरवाज़े की ओर से फिर चीख की आवाज़ आती है। डा० पूल की दृष्टि उधर मुड़ जाती है। इस बार उसके मुँह पर घृणा और भय के स्थान पर वैज्ञानिक जिज्ञासा की वृत्ति है।

"अभ्यस्त हो रहे हो, क्यों ?" पादरी-प्रमुख ने कहा।

निर्देशक

आत्म-निष्ठा भीरुता की जननी
संभव है, कभी उन्नत भावों का सृजन करे।
आचार लोक कल्याण का अवरोधक
पशु की प्रतिष्ठा में निरन्तर गतिशील।
विश्व-सेवा के व्रती, उदार-चेता व्यक्तियों की हत्या
क्षुद्र सीमाओं में आबद्ध, हम क्रूर कर्मों में निरत।
प्रोटेस्टेंट और पेपिष्ट, बैबिट[1] और सैडिस्ट[2]
स्वेड व स्लोवाक, कुलक[3] और ज्यू के संहारक।
संहार और विध्वंस में हम सदैव सजग।

मित्रो, उन दिनों का स्मरण कीजिये जब तुर्कों ने आर्मीनिया-वासियों की हत्या करने में सीमा का उल्लंघन कर दिया था और आप लोग क्रोध से काँपने लगे थे। आपने ईश्वर को धन्यवाद दिया था कि आप एक प्रोटेस्टेंट और प्रगतिशील

---

१. बैबिट (Babbit)—सिंक्लेयर लेविस के प्रसिद्ध उपन्यास का चरित्र। अमेरिका के उद्योग-व्यवसाय में लिप्त पूँजीवादी व्यक्ति का प्रतिनिधि चरित्र।

२. सैडिस्ट (Sadist)—क्रूरता और बर्बरता मे आनन्द लेने वाला।

३. कुलक (Kulak)—मंगोलियन जाति, रूसवासियो के अत्याचार का शिकार।

देश के निवासी थे जहाँ ऐसी नृशंसता असंभव है। और अब एक क्षण के लिये आप उन बर्बरताओं को सोचिए जिन्हें आपने अपनी दिनचर्या में अपना लिया है। आपकी ओर से या आपके द्वारा सामान्य मानव-शिष्टता का उल्लंघन तो नित्य की वस्तु है। सप्ताह में एक-दो बार आप अपनी छोटी लड़की को भी चित्रपट द्वारा जघन्य कर्मों से परिचित करा देते हैं और वह स्वयं उन्हें अत्यन्त सामान्य पाती है। आज से बीस वर्ष पश्चात् यदि इसी गति से कार्य होते रहे तो आपके पौत्र टेलिविज़न पर तलवार के हाथ देख लिया करेंगे और यदि उनसे नीरसता होने लगी तो सेना में आपत्ति या विरोध करने वालों को मौत के घाट उतरते देख लेंगे अथवा इसी प्रकार की नृशंसता से अपना मनोविनोद कर लेंगे।

'पापागार' में इस समय भी डा० पूल द्वार-छिद्रों से बाहर देख रहा है। पादरी-प्रमुख भोजन समाप्त कर चुके हैं। खान-पान के बाद ये लोग आराम की साँस ले रहे हैं, कुछ शान्ति छाई हुई है। सहसा डा० पूल अपने साथी से चिल्ला कर पूछता है—

"क्या हो रहा है वहाँ? लोग उठ क्यों रहे हैं?"

"इसकी तो मुझे बड़ी देर से उम्मीद थी।" बिना किसी

प्रकार की व्यग्रता के पादरी-प्रमुख ने शान्ति से कहा—"यह तो उनके रक्त का स्वभाव है। और फिर मार भी पड़ चुकी है।"

"वे तो मैदान की ओर दौड़ रहे हैं। एक-दूसरे के पीछे भाग रहे हैं। क्या पृथ्वी पर......? हे भगवान्! मुझे क्षमा कर। पर सचमुच यह सब......" डा० पूल अत्यन्त व्यग्र और कातर था। उत्तेजित हो दरवाज़े से मुँह मोड़ वह घूमने लगता है।

"हरएक चीज़ की सीमा होती है।"

"यहीं तुम गलती कर रहे हो।"--पादरी-प्रमुख ने उत्तर दिया—"सीमा किसी भी चीज़ की नहीं होती। आदमी सब कुछ कर सकता है, सिर्फ यहीं उसका वश नहीं चलता।"

डा० पूल स्तब्ध है। वह वापस स्टूल पर बैठ जाता है—मानो उसकी इच्छा के प्रतिकूल किसी बलवती शक्ति ने उसे खींच कर अपने स्थान पर बैठा दिया हो। व्यग्र, उत्सुक और भयभीत—वह बाहर का दृश्य देखने लगता है।

"यह तो अमानुषिक है—राक्षसी, घृणित।" वह अपने काबू से बाहर हो रहा था।

पादरी-प्रमुख अपने आसन से अन्यमनस्कतापूर्वक उठ दीवार से सटी आलमारी खोल दूरबीन का एक जोड़ा निकालता है। डा० पूल की ओर वह उसे बढ़ा देता है।

"बाहर की ओर देखना है तो इनसे देखो। विनाश से पूर्व हमारे जहाजी बेड़ों में इनका प्रयोग होता था। स्टैंडर्ड दूरबीन हैं, इनसे सब साफ दिखाई देगा।"

"तो आपका तात्पर्य है......।"

"तात्पर्य क्या, मैं तो स्वयं देख रहा हूँ।" पादरी-प्रमुख ने व्यंग्य किया—"कैसे आदमी हो, देखो इनसे। तुमने अपने न्यूज़ीलैंड में ऐसा दृश्य कभी नहीं देखा होगा।"

"ऐसा तो मैंने कभी नहीं देखा।' डा० पूल करुण, विवश और भयातुर स्वर में कहता है।

अंत में वह दूरबीन अपनी आँखों पर लगाता है। उसकी दृष्टि से दूर प्रकाश-पुञ्ज में वीभत्स दृश्य—वासना से उन्मत्त मनुष्य का पशु की तरह स्त्री पर झपटना; सेटिर[1] और निम्फ का प्रेमालिंगन; प्रबल अवरोध का अनुराग के समर्पण में परिवर्तन; उत्कंठित अधरों का दाढ़ी-युक्त अधरों से स्पर्श; उच्छ्वसित हृदय का अधीर भुजाओं से मिलन; हँसना, मचलना, चीखना, पुकारना, यही सब हो रहा है।

---

१. (Satyr) प्राचीन ग्रीक पुराणों में ग्रामवासियों के देवता। विषय-वासना मे इन देवो की अधिक रुचि थी। ये आधे मानव और आधे पशु के आकार के थे।

निम्फ (Nymph)—ग्रीकों के अनुसार सारी प्रकृति में ये देवियाँ व्याप्त थीं—जल में, वृक्ष में, पर्वत में—सर्वत्र। प्रकृति उपासना से इनका सम्बन्ध है

पादरी-प्रमुख पर प्रकाश। अरुचि और ग्लानि से उसका मुँह विकृत हो जाता है।

"बिल्लियों की तरह...," वह कहता है—"पर प्रेम-व्यापार में बिल्लियाँ सामाजिकता का ध्यान रखती हैं। अब भी तुम्हें शैतान की शक्ति पर सन्देह है?"

कुछ देर स्तब्धता।

"क्या यह सब विनाश के बाद आरम्भ हुआ?" डा० पूल पूछता है।

"दो पीढ़ियों में।"

"दो पीढ़ियों में!" डा० पूल दबी आवाज में कहता है— "इस स्थिति-परिवर्तन में किसी ने बाधा नहीं डाली? इस तरह का व्यापार क्या वर्ष में और कभी करने की उनकी इच्छा नहीं होती?"

"पाँच सप्ताह उन्हें मिलते हैं, पर यथार्थ संभोग के लिए हम उन्हें केवल दो सप्ताह की ही अनुमति देते हैं।"

"क्यों?"

पादरी-प्रमुख सींगों का चिह्न प्रदर्शित करता है।

"यह तो सामान्य सिद्धान्त की बात है। दंड का भोग तो उन्हें मिलना ही चाहिए। शैतान का क़ानून है। नियम-भंग करने पर दंड तैयार है।"

"ठीक, ठीक"—डा० पूल को उस प्रसंग की स्मृति हो

आई जब कि रेतीले मैदान में लूला के प्रति उसने प्यार की इच्छा प्रगट की थी।

"उन्हें तो अवश्य कठिनाई होती है जो दाम्पत्य-जीवन के पुराने सिद्धान्तों के अनुसार ही सम्भोग करना चाहते हैं।"

"क्या ऐसे लोग बहुत हैं?"

"यही पाँच-छः फी सदी। हमारे यहाँ उन्हें कामातुर (Hot) कहा जाता है।"

'आप उन्हें आज्ञा तो नहीं..."

"आज्ञा? मालूम पड़ने पर उनकी जान निकाल डालते हैं।"

"पर यह तो अमानुषिक है।"

"अमानुषिक तो है ही। पर आप इतिहास को न भूलिए। समाज की अविच्छिन्न एकता के लिए या तो बाह्य शत्रु की या अल्प-संख्यकों के दमन की आवश्यकता है। हमारा कोई बाहरी शत्रु नहीं, अतः इन कामातुरों से ही हमें बदला लेना पड़ता है। ये हमारे लिए ऐसे ही हैं जैसे हिटलर के लिए यहूदी, लेनिन और स्टालिन के लिए बुर्जुआ, कैथलिक देशों में नास्तिक और प्रोटेस्टेंटों के लिए पोप के अनुयायी। कहीं गलती हुई तो समझ लीजिए, कामातुरों ने गड़बड़ की है। अगर ये न हों तो शैतान ही जाने हमारा काम कैसे चले?"

"पर आप कभी उनकी भावनाओं को समझने का प्रयत्न

नहीं करते ?"

"आवश्यकता ही क्या है ? क़ानून क़ानून है। हम दंड के भागी हुए, दूसरों को दंड का भागी होना ही पड़ेगा। अगर ये संयम से रहें तो इन्हें दंड क्यों मिलेगा ? दंड से बचना है तब या तो ऐसा काम करें कि बच्चे गैर मौसम में पैदा ही न हों और उनकी प्रेम-लीला दूसरों पर प्रकट न हो, अथवा हमारे यहाँ से भाग जाँय।"

"भाग कहाँ जाँय ?"

"क्यों ? उत्तर की ओर फ्रेसनो (Fresno) के पास एक जाति का निवास है—८५ फी सदी कामातुर हैं। रास्ता जरूर खतरनाक है। पानी की तंगी है। और अगर हमारे आदमियों ने किसी को पकड़ लिया तो फिर खैर नहीं, जिन्दा ही गाड़ देते हैं। अगर जोखिम उठाना चाहें तो वे पूर्ण स्वतंत्र हैं। नहीं तो पादरी हो ही सकते हैं।" वह सींगों का चिह्न प्रदर्शित करता है।—"किसी मेधावी लड़के को कच्ची उमर में अगर हमने कामातुर पाया तो उसका भाग्य तो निश्चित हो गया। हम उसे पादरी बना लेते हैं।"

दूसरा प्रश्न करने की हिम्मत होने के पूर्व कई क्षण बीत जाते हैं।

"आपका मतलब है, आप . ?"

"ठीक यही, नरक के राज्य के लिए यह करना ही होता

है। व्यावहारिक कारण तो अलग रखिए, पहले यही सोचिए समाज का संचालन भी तो हमें ही करना पड़ता है। साधारण जन-समाज के लिए क्या होना-जाना है? पादरियों की आवश्यकता तो रहती ही है।"

बाहर शोरगुल बढ़ता ही जाता है।

"कुत्सित!" घृणा की तीव्रता से पादरी-प्रमुख का मुख विकृत हो जाता है। वह चिल्लाता है—"आगे जो होना है, उसके सामने तो यह कुछ भी नहीं। 'उसे' धन्यवाद है जो मैं इस गन्दगी से बच सका। वे जानते नहीं वे क्या कर रहे हैं—वे क्या—मनुष्य का शत्रु उनसे यह जघन्य व्यापार करा रहा है। ज़रा उधर तो देखना।" पादरी-प्रमुख डा० पूल को अपनी ओर खींच एक संकेत करता है। —"दिखाई दिया? वेदी के पश्चिम की ओर, उस भूरे बालों वाली अपवित्रता की पुतली के साथ—यही है नेता!" उपहास के स्वर में उसने ज़ोर दिया—"देखना इन दो सप्ताहों में इस नेता का क्या रूप होता है?"

डा० पूल टीका करने से अपने आपको रोक लेता है। ऐसे आदमी के विरुद्ध जो कुछ दिनों के भोग-विलास के बाद फिर ताक़तवर हो जायगा, वह आक्षेप नहीं करना चाहता। वह केवल परेशान हो हँस देता है।

"हाँ, मालूम होता है राज-काज के झंझटों से वे कुछ आराम करना चाहते हैं।"

निर्देशक

पर नेता को लूला के साथ ही विश्राम करने की क्या आवश्यकता है ? और लूला—नीच, पशु, वारांगना ! पूल के लिए एक ही आश्वासन है; उसके जैसे संकोची स्वभाव के व्यक्ति के लिए जो वासनाओं से पीड़ित होने पर भी अवसर का पूर्ण उपयोग नहीं कर सकते, यह आश्वासन पर्याप्त है कि लूला के चरित्र पर उसके घर का या अध्ययन-अध्यापन-संस्था का वातावरण विश्वास नही कर सकता, वह असंभाव्य माना जाएगा। पूल के चरित्र पर कोई आँच नहीं आ सकती। और यहाँ तो लूला ही नहीं है, अनेकों स्त्रियाँ हैं—फ्राँसी, शहदिया रङ्ग की स्थूल, ट्यूटन लड़कियाँ, दीर्घ-काय आर्मिनियन स्त्रियाँ, सम्मिश्रित वर्ण की युवतियाँ, नीली आँखों वाली छोटे कद की प्रौढ़ाएँ, इत्यादि।

"हाँ, वह रहा हमारा नेता !" पादरी तिलमिला कर कहता है।—"अगर ये सूअर शैतान के पाश में न फँसे तो फिर गिर्जा..."

लूला के सहवास के लिए डा॰ पूल अत्यन्त आतुर हो रहा है। और लूला का साथ ही क्यों, वासना की तृप्ति ही ध्येय है तो कोई भी युवती क्यों न हो, डा॰ पूल तैयार है, पर मर्यादा का उल्लंघन वह नहीं कर सकता। अपनी आतुरता को

दवा पार्थिव और आध्यात्मिक शक्ति के सम्बन्ध में वह बातें करने लगता है।

पादरी-प्रमुख कोई ध्यान नहीं देता।

"मैं समझता हूँ अब मुझे अपना काम देखना चाहिए।" वह अपनी बात कहने में शीघ्रता करता है।

एक परिचारक को वह बुलाता है जो उसे चर्बी-निर्मित एक बत्ती देता है। पादरी-प्रमुख फिर मंच की दाईं ओर वेदी के पास जाता है। वहाँ तीन-चार फीट लम्बी एक बेढंगी मोम-बत्ती पड़ी हुई है। पादरी-प्रमुख अपने घुटनों पर झुक मोम-बत्ती जलाता है। सींगों का चिह्न प्रदर्शित करने के बाद वह डा० पूल के पास आता है जो खेद और आत्म-प्रतारणा के साथ अपने सामने के मैदान में घृणित दृश्य देख रहा है।

"कृपया एक ओर हट जाइए अब।"

डा० पूल आज्ञा-पालन करता है।

परिचारक एक के बाद दूसरा किवाड़ बन्द करता है। पादरी-प्रमुख आगे बढ़कर मंच के मध्य में खड़ा होता है और अपने सुवर्ण-मंडित सींगों का स्पर्श करता है। वेदी के निकट संगीत का स्वर ऊँचा उठता है। दर्शकों का कोलाहल शाँत हो जाता है—कभी-कभी अवश्य पाशविक बर्बरता के फल-स्वरूप प्रेम की किलकारियाँ या कष्ट की टीस गूँज उठती हैं।

१ कोरस

यही समय है,

२ कोरस

अन्यथा शैतान निर्दय है।

१ कोरस

समय की समाप्ति का समय है,

२ कोरस

अवधि का अन्त है।

१ कोरस

वासना के विवर्त्त में

२ कोरस

विलास का अवकाश है।

१ कोरस

तेरे रक्त में शैतान है।

२ कोरस

कलुष और कीड़े,

१ कोरस

घृण्य के आकार,

२ कोरस

विकृति के रूप—

१ कोरस

इनके जनन का काल है।

२ कोरस

यही समय है

१ कोरस

तू कुत्सित है, घृणित है,

२ कोरस

शैतान तुझ पर कुपित है।

१ कोरस

आत्मा की हत्या का समय है,

२ कोरस

मनुष्य के नाश का समय है—

१ कोरस

पिपासा की दंडाज्ञा है,

२ कोरस

औ' आनन्द हत्यारा है।

१ कोरस

शत्रु की विजय का,

२ कोरस

पशु के प्रभुत्व का,

१ कोरस

कीड़ों के जनन का,

२ कोरस

उचित अवसर है।

१ कोरस

तेरी नहीं, 'उसकी' इच्छा है,

२ कोरस

सदैव के लिए तेरा नाश हो।

भीड़ एक स्वर से 'तथास्तु' कहती है।

"शैतान के शाप से यशस्वी बनो।" पादरी-प्रमुख ऊँची आवाज़ में कहता है। धर्म-वेदी के निकट अपने आसन पर आकर वह बैठ जाता है। बाहर भीषण कोलाहल है। जन-रव बढ़ता ही जाता है। सहसा जन-समूह धर्म-वेदी की ओर अग्रसर होता है। वेदी के निकट आकर लोग एक दूसरे के एप्रन फाड़ने लगते हैं और पादरी-प्रमुख के आसन के पास उन्हें डालते जाते हैं। थोड़ी ही देर में वहाँ एप्रन का ढेर लग जाता है। स्त्रियाँ प्रत्येक निषेध-चिह्न के दूर होने पर 'हाँ' की आवाज़ लगाती हैं। विजय के उन्मेष में स्त्री-पुरुष एक दूसरे की ओर अपलक देखने लगते हैं। पादरियों का विरक्त समूह अनमने भाव से गा रहा है—"तेरी नहीं, 'उसकी' इच्छा है, सदैव के लिए तेरा नाश हो।"

डा० पूल पर प्रकाश। मंच के एक कोने से वह सारा दृश्य देख रहा है।

भीड़ पर प्रकाश। विह्वल, आतुर, अधीर स्त्री-पुरुषों के आने-जाने का तांता लगा हुआ है। सहसा लूला दिखाई पड़ती है—उसकी आँखें चमक रही हैं, ओठ फड़क रहे हैं, कपोल अनुरक्त हैं। मुँह फेरते ही डा० पूल पर उसकी दृष्टि पड़ती है।

"अल्फी!" वह वहीं से चिल्लाती है।

"लूला!"

डा० पूल उसके मदिर प्रेम से रोमांचित हो जाता है। वे दौड़ कर आलिंगन में लिपट जाते हैं। कई क्षण बीत जाते हैं। स्वर-पथ पर संगीत के आकर्षक स्वर गूँज उठते हैं।

जनता पर प्रकाश। लोग एक के पीछे एक बढ़ते जाते हैं।

"शीघ्रता करो, शीघ्रता।"

लूला डा० पूल का हाथ पकड़ उसे वेदी के पास ले जाती है।

"इस एप्रन को फाड़ डालो।" वह डा० पूल से कहती है।

डा० पूल एप्रन पर दृष्टि डालता है, ज़रा सहम जाता है, और फिर गाल लाल हो जाते हैं। 'निषेध' के चिह्नों पर जो लाली है मानों वह उसके गालों पर दौड़ गई हो। वह आँखें हटा लेता है।

"यह तो...अभद्रता होगी।" वह कहता है।

वह कभी हाथ आगे बढ़ाता है, कभी पीछे; फिर निश्चय कर अँगूठे और अँगुली से एप्रन को पकड़ दो-एक झटके देता है।

"ज़ोर से खींचो।" लूला चिल्लाती है।

डा० पूल आवेश में आ आज्ञा का पालन करता है। प्रश्न सिर्फ एप्रन के टुकड़े करने का नहीं था, वरन् उस वातावरण के मोह को चीरने का था जहाँ उसकी माँ का प्रभाव उस पर पड़ा था; उन धारणाओं और रूढ़ियों के बंधनों को तोड़ने का था, जिनमें वह पला था। सिलाई इतनी आसानी से उखड़ जायगी, इसकी उसे उम्मीद नहीं थी। झटके का बल स्वयं उस पर पड़ा। पाँव सम्हले नहीं, वह गिर पड़ा। पर उठने में भी उसने अत्यन्त शीघ्रता की। सप्तम कमांडमेंट के प्रतीक बेल-बूटेदार निषेध-चिह्नों पर उसकी दृष्टि पड़ी। निषेध-चिह्नों से आँखें लूला के विहँसते हुए मुँह पर गईं। प्रकाश की थिरकती हुई किरणों में कभी वह लूला के गुलाबी गालों को देखता है, कभी 'निषेध' के लाल चिह्नों को।

"हाँ, हाँ, हाँ"—विजयोल्लास में लूला चिल्ला पड़ती है।

एप्रन खींच कर वह पादरी-प्रमुख के आसन के पास डाल देती है और निषेध-चिह्नों को उखाड़ कर मोमबत्ती की जलती हुई लौ की भेंट चढ़ाती है।

घुटनों पर झुकी हुई लूला पर मध्यम प्रकाश पड़ता है। इतने में एक प्रौढ़-सा पुरुष दौड़कर उसके आगे खड़ा हो जाता है। पैंट के पीछे नितंबों पर कढ़े हुए उसके निषेध-चिह्नों को वह उखाड़ देता है। इसके बाद वह लूला को धर्म-वेदी की ओर खींचने लगता है।

क्रुद्ध नागिन की तरह लूला उसकी ओर आँखें तरेरती है। भरे हाथ से वह उसके गाल पर एक चाँटा जड़ देती है और दौड़ कर डा० पूल की बाँहों में घिर जाती है।

"हाँ !" धीमे स्वर में वह अपनी जुबान खोलती है।

"हाँ !" डा० पूल जोर से कहता है।

वे एक दूसरे को चूम लेते हैं, प्रेम से उनके ओठ खिल जाते हैं। धीरे-धीरे वे अन्धकार के गहन आवरण की ओर चलने लगते हैं। पादरी-प्रमुख के आसन के पास जब वे पहुँचते हैं, तो किसी व्यक्ति की थपथपी से चौंक कर डा० पूल ऊपर की ओर देखने लगता है।

"दूरबीन तो देते जाओ !" पादरी-प्रमुख घृणा और उपेक्षा से उससे कहता है।

रात्रि के दृश्य पर प्रकाश। चाँदनी छिटकी हुई है, पर अजगर की तरह अन्धकार उसे निगलना चाहता है। लॉस ऐंजेलिज़ काउन्टी म्यूज़ियम के भग्नावशेषों पर स्यापा छाया हुआ है। आलिंगन-पाश में बद्ध लूला और डा० पूल पर एक

बार प्रकाश पड़ता है और फिर वे अँधेरे में खो जाते हैं। स्त्रियों के पीछे लगे हुए पुरुष, पुरुषों पर झुकती हुई स्त्रियाँ, चित्रपट पर विभिन्न प्रकार की छाया-मूर्त्तियाँ घूमने लगती हैं। स्वर-पथ पर कभी संगीत और कभी आमोद-प्रमोद की रगरलियाँ सुनाई पड़ती हैं; कभी पुरुषों की बर्बरता और कभी नारी की यंत्रणा गूँज उठती है।

निर्देशक

पक्षियों पर दृष्टि डालिए। उनके प्रेमालाप में कितनी मृदुल कोमलता और शौर्य की कितनी गरिमा है! मुर्गी को ही लीजिए। निश्चय उसके शरीर में कोई ऐसा रसायनिक द्रव्य है जिसका अस्तित्व ही उसकी भोग-लिप्सा को स्वीकार करता है, किंतु फिर भी उसका प्रभाव उसके लिए इतना उग्र या स्वल्पकालीन नहीं होता जितना दूध पिलाने वाली मादाओं के लिए जिनके शरीर में रज की उत्तेजना है। यह भी स्पष्ट है कि मुर्गा मुर्गी की इच्छा के प्रतिकूल बलात्कार नहीं कर सकता। यही कारण है कि उसके शरीर का सौन्दर्य और उसमें कोर्टशिप की भावना अक्षुण्ण है। पिंडजों में इस सौन्दर्य और सुरुचि का अभाव है। जब मादा की विलास-भावना और उसकी आकर्षण-शक्ति पूर्णतः शरीर के रसायनिक तत्वों से संचालित हैं, तब नर में सौन्दर्य और कोर्टशिप की आकांक्षा रहे ही क्यों?

मनुष्यों के लिए तो वर्ष का प्रत्येक दिन ही संभोग के लिए निर्दिष्ट है, पर स्त्रियों के लिए कुछ दिन ऐसे अपवादस्वरूप हैं जब वे पुरुष की इच्छा को, रसायनिक द्रव्य की पूर्व स्थिति न होने के कारण स्वीकार करने में असमर्थ होती हैं। उनके शरीर में यह द्रव्य इतने कम परिमाण में उत्पन्न होता है कि उन्हें भी भोग-लिप्सा के लिए कुछ सोचना-विचारना या संयम से काम लेना पड़ता है। यही कारण है कि अन्य प्राणियों के विपरीत आदमी हमेशा ही प्रेमी रहा है। पर अब तो गामा-किरणों के कारण सब कुछ बदल गया है। जन्म-जन्मांतरों से चले आए मनुष्य के शरीर और मन का ही रूपांतर हो गया है। आधुनिक विज्ञान धन्य है जिसने यौन-संसर्ग को शृंखल और रोमांस को ऋतु-कालीन बना दिया है। धन्य है विज्ञान जिसने कोर्टशिप, शौर्य-भावना, कोमलता,प्रेम रसिकता, सब को सदा के लिए मिटा दिया है।

ठीक इसी समय उल्लसित लूला और अस्त-व्यस्त डा० पूल अन्धकार से बाहर निकलते हुए दिखाई पड़ते हैं। एक सुगठित, हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति लम्बे-लम्बे डग रखता हुआ प्रकाश के केन्द्र में आता है। उसके ओठ खुले हुए हैं, आँखें बाहर को निकली पड़ती हैं और साँस जोर-जोर से चल रही है।

डा० पूल आगन्तुक को एक बार देख अपने साथी से कहता है—

"मैं समझता हूँ अब हम लोगों को इस ओर चलना ही चाहिए।"

बिना कहे-सुने आगंतुक डा० पूल पर झपटता है। उसे वेग से पीछे ढकेल, लूला को हाथों पर उठा, वह चल पड़ता है। डा० पूल धक्के का वेग न सह सकने के कारण नीचे गिर पड़ता है। लूला एक क्षण तो विरोध करती है, पर दूसरे ही क्षण मानों उसकी रग-रग में बिजली दौड़ गई हो, वह उसकी इच्छा के सामने झुक जाती है।

भूखा शेर जिस तरह गरजता हुआ अपने शिकार पर झपटता है, आगन्तुक भीषण तेजी से लूला को अपनी भुजाओं में जकड़ अन्धकार में विलीन हो जाता है।

डा० पूल जमीन से उठ कर उसका पीछा करता है, मानों उसे अपना प्रतिरोध और लूला का त्राण करना है। किंतु भय और भद्रता के कारण उसकी गति मन्द पड़ जाती है। कौन जाने उसे आगे कौन सा दृश्य दिखाई पड़े—लूला के साथ वह पिशाच क्या करता हुआ मिले? खूँखार, रीछ की तरह भयानक घने बालों का झब्बा.. उसकी तो शकल ही डरावनी थी। बुद्धिमानी इसी में है कि आगे न चला जाय ..डा० पूल असमंजस में पड़ कर वहीं रुक जाता है। उसे क्या करना चाहिए, इसी उधेड़-बुन में वह परेशान है। इतने में सम्मिश्रित वर्ग की दो युवतियाँ काउन्टी म्यूज़ियम की ओर दौड़ती हुई

आती हैं और एक साथ डा० पूल से लिपट कर उसका मुँह चूमने लगती हैं।

"ओह! सौन्दर्य के देव!" दोनों के मुँह से एक साथ फटे बाँस की सी आवाज़ निकलती है।

डा० पूल हिचकिचाता है। एक ओर माँ की स्मृति और लूला के प्रति कर्त्तव्य की भावना उसे आगे बढ़ने से रोकती है। दूसरी ओर 'जीवन के तथ्य' और जवानी के सपने उसे निमंत्रण दे रहे हैं। दो क्षण के नैतिक संघर्ष के बाद, जैसी आशा थी, उसने प्रेम की देवियों का स्वागत किया। उसकी आँखें नाच उठीं, चुम्बन का प्रत्युत्तर उसने चुम्बन से दिया। डा० पूल के मुँह से ऐसे शब्द निकल रहे थे जिन्हें सुन मिस हुक हैरान हो जाती और उसकी माँ का तो शायद दम ही निकल जाता। गलबहियाँ डाल वह उनके उरोजों से क्रीड़ा करने लगा। ऐसी क्रीड़ा उसने हाथों से क्या, विचारों से भी शायद ही कभी की हो।

हास-विलास के स्वर घने होकर धीमे पड़ जाते हैं। फिर कुछ देर के लिए स्तब्धता हो जाती है।

प्रकाश-पुंज। मठाधीश, पादरी, परिचारक तथा अनुचरों के साथ महात्मना पादरी-प्रमुख और पासाडेना के कुलपति शांत-गंभीर भाव से चले आ रहे हैं। डा० पूल और इन युवतियों पर दृष्टि पड़ते ही वे रुकते हैं। कुत्सा और घृणा से मुँह

विकृत कर कुलपति थूकने लगता है, पर पादरी-प्रमुख कुछ उदारता दिखा व्यंग्यपूर्ण मुस्कराहट से डा० पूल की ओर देखने लगते हैं।

"डा० पूल!" ऐसे स्वर में पादरी-प्रमुख ने कहा, मानों सचमुच उन्हें आश्चर्य हुआ हो।

डा० पूल के हाथ आलिंगन से खिंच जाते हैं। पादरी-प्रमुख की ओर वह निर्दोष दृष्टि से देखने का प्रयत्न करता है। "ये लड़कियाँ?" इस तरह वह उनकी तरफ संकेत करता है मानों उसे उन लड़कियों के वारे में जानने की कुछ जिज्ञासा हो रही हो—"ये लड़कियाँ कौन हैं? मैं तो इनका नाम भी नहीं जानता। हम तो ज़रा वनस्पति-विज्ञान की चर्चा कर रहे थे, बस।"

"वाह, सौन्दर्य के..." एक लड़की अपने रुक्ष स्वर में कह उठती है।

डा० पूल इतने जोर से खाँसता है कि लड़की अपना वाक्य भी पूरा नहीं कर पाती।

"हम तो इधर से जा रहे थे। कोई विचार मत लाना। आखिर 'शैतान-दिवस' तो वर्ष में एक बार ही आता है।" पादरी-प्रमुख ने आनन्द लेते हुए कहा।

डा० पूल के निकट आ पादरी-प्रमुख अपना सुवर्णमण्डित किरीट स्पर्श कर सद्यः पवित्र हाथ उसके मस्तक पर रखते हैं।

अपने व्यवसाय की व्यवहार-जन्य स्निग्धता से उन्होंने कहा—"तुम्हारा तो अनायास अद्भुत परिवर्तन हो गया है, हाँ, सचमुच आश्चर्यपूर्ण !' उनकी आवाज़ में फिर बल पड़ जाता है—"हाँ, एक बात और कह दूँ। तुम्हारे न्यूज़ीलैंड के साथियों से हमारे कुछ लोगों की मुठभेड़ हो गई थी। वेवरली पहाड़ियों पर वे घूमते हुए मिले थे। मैं समझता हूँ, वे तुम्हारी ही तलाश में निकले होंगे।"

"हाँ, यही हो सकता है।"

"लेकिन तुम्हें वे नहीं पा सकते।" पादरी-प्रमुख ने कोमल स्वर में कहा। —"हमारे कुछ अन्वेषक एक छोटे-से दल के साथ उनका मुकाबला करने गए थे।"

'फिर क्या हुआ ?" डा० पूल ने उत्सुकता के साथ पूछा।

"होता क्या ? हमारे साथियों का कुछ देर उन्होंने सामना किया। उनका एक आदमी काम आया, कुछ घायल हुए और शेष घायलों को लेकर भाग खड़े हुए। मै समझता हूँ, अब हमें और परेशानी नहीं होगी। किंतु निश्चय ही क्यों न कर लिया जाय—"वे अपने दो परिचारकों को संकेत से बुलाते हैं और उन्हें आदेश देते हैं—"देखो, न तो इनके छूटने का प्रश्न खड़ा होता है और न भागने का। कुछ भी गड़बड़ होने पर सारी ज़िम्मेदारी तुम लोगों की होगी।"

दोनों परिचारक सिर नवाते हैं।

"और अब", डा० पूल की ओर मुड़ कर पादरी-प्रमुख बोले—"हम तो यहाँ से जा रहे हैं। तुम शौक से आकृति-भ्रष्ट बच्चों की संख्या बढ़ाओ।"

कनखियों से डा० पूल को देख, उसका कंधा थपथपा, पादरी-प्रमुख कुलपति के साथ चल पड़ते हैं।

डा० पूल कुछ देर तो उन्हें जाते हुए देखता है, फिर अपने प्रहरी-परिचारकों की ओर मुड़ता है। वह कुछ व्यग्र दिखाई देता है।

लड़कियाँ उसके गले में बाँहें डाल देती हैं।

"नहीं, नहीं, सब के सामने नहीं। इन व्यक्तियों की उपस्थिति में यह बात अच्छी नहीं लगती।"

"ऊँह, क्या फ़र्क पड़ता है?"

डा० पूल को उत्तर देने का अवकाश भी नहीं मिलता कि प्यार की रंगीनियाँ उस पर अपनी मदिरा उँड़ेल देती हैं। अर्द्ध-स्वीकृति, अर्द्ध-अस्वीकृति के साथ, विलासोन्मत्त बालाओं के कर-पाश में बद्ध वह अन्धकार की छाया में छिप जाता है। परिचारक घृणा से थूकते हैं।

निर्देशक

मेरे उद्यान का सरोवर
चाँद और तारों की किरणों में थिरकता—

अन्य सरों में बिखरी यही विभा।
पर काँपता हृदय मेरा—मानों जल की ऊर्मियों से
करना चाहता कोई मुझ पर प्रहार—
सशंकित आत्मा मेरी दोष की प्रताड़ना से।

प्रकाश का मध्यम पुँज। कंकरीट की ऊँची दीवाल के पास नीचे बालुका-राशि पर डा० पूल प्रगाढ़ निद्रा में बेसुध है। कुछ बीस फुट हट कर एक प्रहरी-परिचारक सो रहा है। दूसरा 'फॉर-एवर एम्बर'[1] (Forever Amber) की एक पुरानी प्रति पढ़ रहा है। आकाश पर सूरज ऊँचा चढ़ आया है। एक छोटी हरी छिपकली डा० पूल के पसरे हुए हाथ पर रेंगती हुई निकल जाती है। वह जरा भी नहीं हिलता मानों उसे मौत निगल गई हो।

निर्देशक

निद्रित अवस्था में बेसुध शरीर ऐसा लगता है मानों व्यक्ति की सत्ता से उसका कोई सम्बन्ध ही न हो। डा० पूल सो रहा है, पर मानों अल्फ्रेड पूल डी० एस-सी० से उसका

१—फॉर-एवर एम्बर—कैथलीन विन्सर (Kathleen Winsor) द्वारा रचित उपन्यास। चार्ल्स द्वितीय के विलासपूर्ण युग की सजीव कहानी। लेखिका ने बड़ी कुशलता के साथ एम्बर के सौन्दर्य और उसके प्रभाव को व्यक्त किया है। उपन्यास का प्रत्येक पृष्ठ रोमांस, शौर्य और उन्माद से पूर्ण है।

कोई सम्बन्ध नहीं है। निद्रा शरीर-धारण करने से पूर्व की स्थिति है, वह आत्मिक शान्ति की उपलब्धि का निमित्त है। निद्रा में हम अपनी सत्ता को भूल जाते हैं, इसलिए कि उस विराट् सत्ता को हमारे मस्तिष्क के विकारों को शमित, और शरीर के साथ की गई स्वेच्छाचारिता को अनुशासित करने का अवसर मिले।

सुबह जागने से रात को सोने तक आप यथासाध्य प्रकृति का दमन और अपनी शुभ्र मानवता का हनन करते हैं, किन्तु दुर्दान्त पशु को भी अन्त में अपने जघन्य व्यापार से क्लांत हो विश्राम लेना पड़ता है। जिस समय नींद में उसकी आँखें झपी हुई हैं, उसके अन्तर की शक्ति उस सर्वनाश से उसकी रक्षा करती है, जिसके साथ जाग्रत घड़ियों में वह उन्मत्त हो खेल रहा था। सूर्योदय होता है और पशु अपने स्वेच्छाचार के लिए आँखें खोलता है। अगर उसने अपनी वासनाओं को संयमित करने का संकल्प किया तो बात दूसरी है—आत्म-ज्ञान के प्रकाश में—आत्म-मुक्ति की साधना में—उसकी नींद टूटती है। रात्रि के बाद जागरण का यही क्रम है।

स्त्रियों के उत्तेजित अट्टहास में निर्देशक की बात अधूरी ही रह जाती है। डा० पूल की निद्रा कुछ टूटती है; दूसरे अट्टहास पर वह आँखें मलता हुआ बैठ जाता है। चकित दृष्टि

से वह अपने चारों ओर देखता है। उसे मालूम नहीं, वह कहाँ है। अट्टहास फिर फूट पड़ता है। डा० पूल की दृष्टि उस ओर दौड़ जाती है। दृष्टि-पथ पर वे गेहूँए वर्ण की युवतियाँ बालू के टीलों के पीछे से निकलती हुई दिखाई पड़ती हैं, और द्रुत गति से वे काउन्टी म्यूजियम के खंडहरों की ओर बढ़ जाती हैं। नेता भी उनके पीछे-पीछे लगा हुआ है। तीनों आँखों से ओझल हो जाते हैं।

प्रहरी-परिचारक की नींद टूट जाती है। वह अपने साथी की ओर देखता है।

"क्या बात है?"—वह उससे पूछता है।

"कोई नई बात नहीं।"—पुस्तक से सिर उठाए बिना ही वह उत्तर देता है।

इतने में म्यूजियम की कंदराओं से चीखने की आवाज़ आती है। परिचारक एक-दूसरे की ओर देख कर थूकते हैं।

डा० पूल पर प्रकाश।

"हे ईश्वर, हे ईश्वर!"—वह चिल्ला उठता है। दोनों हाथों से वह अपना मुँह ढक लेता है।

निर्देशक

सुबह हो चुकी है। तृप्ति की थकान के कारण कुतर-कुतर कर खाने वाली आत्मा और पद-पद पर रुकावट पैदा करने वाले सिद्धांतों को डा० पूल ने ढीला कर दिया है। अपनी माँ

के चरणों पर और गोद में बैठ कर उसने ये सिद्धांत सीखे थे—वे सिद्धांत जिन्हें बड़ी आशा और भक्ति के साथ उसकी माँ ने सिखाया था, पर जिनकी स्मृति उसे मादक लालसाओं के कारण ही हुआ करती थी। प्रत्येक लालसा के साथ पश्चात्ताप की भावना लगी रहती थी, फिर दंड का विचार आता था, फिर अन्य इच्छाएँ जाग पड़ती थीं। क्रम का यही सतत रूप था। मैं कहता हूँ, उसे अपने सिद्धाँतों को ढीला कर लेने दो; इसके फलस्वरूप वह आसानी से धर्म में रुचि दिखाने लगेगा। पर कैसा धर्म और कैसी रुचि? जो सबसे अधिक निश्चित है उसी के सम्बन्ध में वह अनभिज्ञ है। अब इस समय उस की ओर यह स्त्री बढ़ रही है। इससे तो शायद ही उसे अपनी शुभ्र मानवता को पहचानने में सहायता मिले।

निर्देशक का अंतिम वाक्य समाप्त होते ही लूला दिखाई पड़ती है।

"अल्फी!" प्रसन्नता से वह आवाज़ लगाती है—"मैं कब से तुम्हें खोज रही हूँ।"

दोनों परिचारकों पर प्रकाश, जो बड़ी कठिनाई से अपने भावों को दबा एक बार उसे देखते हैं और फिर मुँह फेर कर खखारने लगते हैं।

डा० पूल लूला को देखता है—उसका मुँह शाँत है, और वासना की उत्तेजना का उस पर कोई चिह्न नहीं। अपराधी

की तरह डा० पूल आँखें नीची कर लेता है।

"गुड मॉर्निंग !" शिष्टाचार के कारण उसे कुछ कहना ही पड़ा--"मुझे आशा है.. रात तो ठीक गुजरी होगी... मेरा मतलब है, नींद तो ठीक आई ?"

लूला उसकी बगल में बैठ जाती है। कंधों से लटकते हुए चमड़े के थैले से वह रोटी का आधा लोफ और पाँच-छः बड़ी-बड़ी नारंगियाँ निकालती है।

"आजकल खाना-पकाना तो अधिक हो नहीं सकता,"—वह समझाती है।

"ठीक, ठीक।"—डा० पूल ने उसका कोई विरोध नहीं किया।

"तुम्हें भूख तो लगी ही होगी ? कल रात थक भी बहुत गए होगे ?"—वह डा० पूल से पूछती है।

लूला का मुँह विकसित हो जाता है, गालों पर हँसी बिखर जाती है।

अपनी झिझक और आवेश छिपाने के लिए डा० पूल दूसरी चर्चा छेड़ देता है।

"ये तो बहुत सुन्दर नारंगियाँ हैं। न्यूज़ीलैंड में तो ऐसी नारंगियाँ केवल विषम जलवायु वाले भागों में .....।"

"हूँ, इसे लेना।"—लूला बिना उसकी बात सुने ही कहती है।

वह उसे रोटी का एक मोटा-सा टुकड़ा देती है। दूसरा टुकड़ा अपने लिए तोड़, वह खाने लगती है।

"रोटी तो अच्छी है। तुम देख क्या रहे हो, खाते क्यों नहीं ?" उसके मुँह में रोटी का एक बड़ा-सा कौर है।

डा० पूल को भूख तो बेहद लगी हुई है, पर साधारण शिष्टाचार के कारण वह रोटी धीरे-धीरे कुतरता है। रोटी खाने में शीघ्रता वह इसलिए नहीं करता कि कहीं लूला उसे भुक्खड़ न समझे।

लूला सट कर उसके कंधे पर झुक जाती है।

"विनोद ही रहा, क्यों अल्फी ?" रोटी का दूसरा टुकड़ा वह अपने मुँह में भर लेती है, और बिना उत्तर की प्रतीक्षा किए कहती जाती है—"तुम्हारे साथ तो सबसे अधिक आनन्द आया। तुम्हें कैसा लगा ?"

वह अनुरागपूर्ण दृष्टि से उसकी ओर देखने लगती है।

डा० पूल के मुँह पर नैतिक उद्वेलन की मर्मांतक वेदना और व्यग्रता है।

"अल्फी ! बात क्या है ?" वह चिल्लाती है।

"अच्छा हो, अगर हम लोग दूसरे विषय पर बातें करें।"—किसी तरह उसके मुँह से शब्द निकलते हैं।

लूला सीधी हो जाती है, और चुपचाप उसके मुँह की ओर देखने लगती है।

"तुम्हें सोचने की बुरी आदत है।"—वह आखिर कहती है,—"इतना सोचा मत करो। अधिक सोचने से आदमी चिंताग्रस्त रहता है।" उसका मुँह लटक जाता है। क्षीण स्वर में वह अपनी बात पूरी करती है—"अधिक विचारशील होना अधिक भयावह है। 'जीते-जागते पाप' के हाथ में पड़ना खतरनाक है। ओह! पॉली और उसके बच्चे के साथ कितना निर्दय व्यवहार हुआ, जब मैं यह सोचती हूँ मेरी तो आत्मा......।"

लूला काँप उठती है। आँखों में आँसू उमड़ पड़ते हैं—वह मुँह फेर लेती है।

निर्देशक

अश्रु-बिन्दु—व्यक्तित्व के प्रतीक चिह्न! दृष्टि पड़ते ही आदमी का हृदय पिघल उठता है—अपराध की भावना भी उस सहृदयता से दब जाती है।

डा० पूल को परिचारकों की उपस्थिति का भी ध्यान नहीं रहा। उसने लूला को अपनी ओर खींच कर हृदय से लगा लिया—और रोते बच्चे को जिस तरह चुप किया जाता है—वह उसे दिलासा देने लगा। उसे अपने प्रयत्न में सफलता मिली। एक-दो मिनट में वह उसकी गोद में शाँत हो गई। ऊर्ध्व साँस ले, उसने आँखें खोल कर पूल की ओर देखा—

मुस्कराहट की स्मित ज्योति उसके अधरों पर खिंच गई। गालों पर सुषमा बिखर गई—शरारती गड्ढे बाहर उभर आए।

"मैंने सदैव इसी की कामना की है।"

"क्या सचमुच ?"

"लेकिन ऐसा कभी नहीं हुआ, हो ही नहीं सका। तुम्हारे आने के पहले तक ऐसा कभी नहीं हुआ .....।" डा० पूल के गालों पर उसकी अंगुलियाँ थिरक रही थीं—"अगर तुम्हारी दाढ़ी न बढ़े तो बड़ा अच्छा रहे। नहीं तो तुम भी उन्हीं लोगों जैसे लगोगे। लेकिन तुम वैसे नहीं हो—सर्वथा भिन्न हो।"

"इतनी भिन्नता तो नहीं है।" डा० पूल ने कहा।

वह झुक कर उसकी पलकों को, मुँह को, गले को, चिकुर को चूम लेता है और फिर पुरुषत्व की गरिमा से उसे देखने लगता है।

"वैसे भिन्न नहीं।" लूला अपनी बात को संशोधित करती है। उसके गालों पर वह हल्की सी थपकी देती है—"भिन्नता यह है कि हम और तुम साथ-साथ बैठे हैं, बातें कर रहे हैं, खुश हैं और फिर भी अपने आपे में हैं। ऐसा यहाँ कभी नहीं हुआ। पर हाँ......" वह रुक जाती है और सहसा उसका मुँह स्याह पड़ जाता है। धीरे से वह कहती है—"जानते हो, यहाँ कामातुरों के साथ क्या व्यवहार होता है ?"

इस बार अधिक विचारशीलता का विरोध डा० पूल ने किया और केवल मौखिक विरोध नहीं।

उनके प्रेमालिंगन पर प्रकाश का पुँज पड़ता है। फिर दोनों परिचारकों पर प्रकाश की किरणें दौड़ जाती हैं; घृणित दृष्टि से वे इस दृश्य को देख रहे हैं। जैसे ही वे ज़मीन पर थूकते हैं, एक अन्य परिचारक आता हुआ दिखाई देता है।

"महामना पादरी-प्रमुख की आज्ञा है," वह सींगों का चिह्न प्रदर्शित करते हुए कहता है—"तुम लोगों का कार्य समाप्त हुआ। प्रधान कार्यालय जाओ।"

दृश्य परिवर्तन। कैंटरबरी पर प्रकाश। एक ज़ख्मी नाविक के कंधे में तीर घुसा हुआ है। आहिस्ते-आहिस्ते लोग उसे स्लिङ्ग के सहारे छोटी नाव से जहाज़ के डेक पर उतारते हैं। डेक पर कैलिफोर्नियावासियों के तीरों से क्षत दो घायल और वहाँ पड़े हैं—डा० कडवर्थ जिनके बांयें पाँव में चोट लगी है और मिस हुक जिसके दाहिने हाथ में तीर ने गहरा ज़ख्म कर दिया है। एक डॉक्टर अत्यन्त गम्भीर मुद्रा में उस पर झुका हुआ है।

"मॉरफिन, "वह सहायक परिचारक को सारी बातें समझा देता है—"इसके बाद शीघ्र ही सर्जरी में ले चलना होगा।"

इसी समय दूसरी ओर आदेश दिये जा रहे हैं। लंगर

की जंजीर खड़खड़ाती है। डंकी-इंजिन* का कर्कश स्वर भी सुनाई पड़ता है।

इतने में एथेल हुक आँखें खोलती है। वह अपने चारों ओर भय-कातर दृष्टि से देखती है। उसके अलसाये मुँह पर कष्ट की छाप है।

"तुम लोग उसे छोड़कर तो नहीं चल देना चाहते?" वह पूछती है—"पर ऐसा तुम नहीं कर सकते।" स्ट्रेचर से वह उठने का प्रयत्न करती है, पर इस प्रयत्न से उसे इतनी तकलीफ होती है कि कराहती हुई फिर गिर पड़ती है।

"ज़रा शाँति रखो, हिलो नहीं।" डॉक्टर मृदुल स्वर में धीरज बँधाता है और उसकी बाँह पर अलकोहल रगड़ता है।

"हाथ ठीक रखो।" वह कहता है और अपने सहायक परिचारक से सिरींज ले सूई की नोक माँस में गड़ा देता है।

जंजीर की खड़खड़ाहट दूसरी ओर तेज़ होती है। दृश्य में परिवर्तन होता है। लूला और डा० पूल पर प्रकाश।

"मुझे तो भूख लग रही है।" लूला बैठती हुई कहती है।

अपने बैग से बची हुई रोटी का टुकड़ा वह निकालती है। उसके दो भाग कर बड़ा हिस्सा डा० पूल की ओर बढ़ा देती है। दूसरा उसके दाँतों में धँसने लगता है। मुँह का ग्रास समाप्त कर दूसरा कौर वह लेना ही चाहती थी कि अपना

---

* जहाज पर माल चढ़ाने व उतारने का छोटा इंजिन।

विचार बदल कर डा० पूल का हाथ चूम लेती है।

"यह किसलिए?" डा० पूल ने जिज्ञासा प्रकट की।

लूला केवल सिर हिला देती है।

"मैं नहीं जानती। बस स्वतः ऐसी इच्छा हो आई।" वह एक-आध कौर और तोड़ती है, और फिर कुछ सोचकर डा० पूल की तरफ देखने लगती है, मानों सहसा कोई नवीन विचार उसके मस्तिष्क में घूम गया हो।

"अल्फी!"—वह कहती है "विश्वास है, अब मुझे तुम्हारे अतिरिक्त अन्य किसी पुरुष को 'हाँ' नहीं कहना पड़ेगा।"

लूला का सरल विश्वास डा० पूल के हृदय को छू लेता है। वह उसका हाथ अपने हाथ में ले हृदय से लगा लेता है।

"ऐसा लगता है मानो मुझे अभी ही जीवन के महान् रहस्य का पता चला हो।" वह कहता है।

"मुझे भी।"

वह डा० पूल पर झुक जाती है। जिस प्रकार कृपण अपनी धन-राशि को बार-बार देखता है, गिनता है, उसी तरह डा० पूल की अँगुलियाँ उसकी अलकों से खेलने लगती हैं—लटें एक-दूसरे पर उठती हैं, गिरती हैं, हिलती हैं और अपने स्थान पर आकर रुक जाती हैं।

निर्देशक

भावों के तर्क में उन्होंने रसायनिक तत्त्व और वैयक्तिक इच्छा के उस संश्लिष्ट रूप को प्राप्त कर लिया है जिसे हम एक पत्नी-व्रत[1] या रोमेंटिक प्रेम के नाम से पुकारते हैं। लूला के बारे में यह कहा जा सकता है कि रसायन ने व्यक्ति को विलग रखा था; डा० पूल के बारे में कह सकते हैं कि व्यक्ति का रसायन के साथ मेल नहीं बैठ सका था। पर अब अपेक्षा-कृत एक महान् पूर्णता का सूत्रपात हो गया है।

डा० पूल जेब में हाथ डालकर एक छोटी सी पुस्तक निकालता है जिसकी कल उसने अग्नि-संस्कार से रक्षा की थी। वह उसे खोलता है और कुछ पन्नों को पलट कर पढ़ने लगता है—

उन हल्के वस्त्रों और बिखरे बालों से
फूटती गँध की मधुरिमा।
समीर की गति में अलकों के सम्पुट का खिलना
औ' तृप्ति के मद से वायु की पलकों का मुँदना।
इन्द्रियों से अग्राह्य, हृदय के अन्तर में
मादकता की सिहरती कँपन—
मानो कली के उर में पिघल उठी हो
ओस की सघनता।

---

१. एक पति-व्रत भी।

"वह कौन ?" लूला पूछती है।

"तुम", वह झुक कर उसके बालों को चूम लेता है। 'हृदय के अन्तर में मादकता की सिहरती कँपन'—वह फिर गुनगुनाता है। 'हृदय के अन्तर में' वह एक बार फिर आवृत्ति करता है।

"हृदय का अन्तर क्या ?" लूला पूछती है।

"देखो, हृदय का......", फिर रुक जाता है। शैली ही उत्तर दे, इसलिए वह आगे पढ़ना शुरू कर देता है—

देवत्व की विभा—
रूप-रस-प्रेम की साकार प्रतिमा,
आमरण गति, अमर रूप, शाश्वत विधान,
सुनहले स्वप्न की कल्पना—छाया का जाल,
शून्य में भर अवसाद, अवतरित भूमि पर
व्योम की ज्योत्सना—प्रेम के मयंक की,
स्निग्ध बिंब-राशि।

"पर मेरी समझ में तो एक शब्द भी नहीं आ रहा।" लूला ने कहा।

"और आज से पहले मेरी समझ में भी नहीं आया था।" डा० पूल ने उसकी ओर प्यार से देखते हुए उत्तर दिया।

दो सप्ताह के पश्चात्। पापागार के बाहर का दृश्य। दो-दो

की पंक्तियों में घिनौने स्त्री-पुरुष धर्मवेदी तक जाने की प्रतीक्षा में खड़े हैं। प्रकाश उनके अस्त-व्यस्त, गंदे-घिनौने चेहरों पर पड़ता हुआ लूला और डा० पूल पर आकर स्थिर हो जाता है जो दरवाजे के अन्दर प्रवेश करने ही वाले हैं।

अन्दर घोर अन्धकार है। चारों ओर स्तब्धता है। दो-दो कर ये विलास के जीव जो कुछ दिनों पहले उछल-कूद मचा रहे थे हत-प्रभ हो वेदी के सामने बढ़ रहे हैं। वह विशाल मोमबत्ती जो वेदी पर जल रही थी बुझ चुकी है। पादरी-प्रमुख के आसन के नीचे सातवें कमांडमेंट के प्रतीक-चिह्नों का ढेर लगा हुआ है। जुलूस ज्यों-ज्यों आगे बढ़ता है, 'नैतिकता-नियामक' पुरुष को एक-एक एप्रन और स्त्री को एक-एक एप्रन तथा चार-चार गोल वस्त्र-खंड देता जा रहा है।

"बगल के दरवाजे से जाओ।" प्रत्येक व्यक्ति से वह यही दुहराता जाता है।

अपना नम्बर खत्म होने पर लूला और डा० पूल बगल के दरवाज़े से बाहर निकलते हैं। वहाँ धूप में कोई बीस-बाईस परिचारक सूई-धागा लिए कमरबंद के साथ एप्रन और ट्राउज़र, तथा शर्ट के साथ गोल वस्त्र-खंड सीने में लगे हुए हैं।

प्रकाश लूला पर पड़ता है। ज्यों ही वह अन्दर से खुली

हवा में आती है तीन युवक परिचारक जो कैसक (Cassock)* पहने हुए हैं, उसके साथ हो लेते हैं।

वह एक को अपना एप्रन और शेष दो को एक-एक वस्त्र-खंड देती है। तीनों फुर्ती से अपने काम में जुट जाते हैं। शीघ्र ही निषेध के चिह्न वस्त्रों पर अङ्कित हो जाते हैं।

"कृपा करके घूम जाइए।"

बचे हुए वस्त्र-खंडों को देती हुई लूला घूम जाती है। जब तक कि एक एप्रन-स्पेशलिस्ट डा० पूल की सेवा में उपस्थित हो, दोनो परिचारक सूई-धागे के साथ इतनी शीघ्रता करते हैं कि लूला का पिछला भाग भी 'निषेधात्मक' हो जाता है।

अपना काम समाप्त कर दोनों परिचारक एक ओर हट जाते हैं। निषेध के चिह्नों पर प्रकाश पड़ता है। परिचारक जमीन पर थूकते हैं और मुँह विकृत कर धर्मवेदी के द्वार की ओर बढ़ते हैं।

"दूसरी स्त्री।"

अत्यन्त निराश, क्षुब्ध, गेंहुए वर्ण की वे युगल मूर्तियाँ एक साथ आती हैं।

डा० पूल पर प्रकाश। एप्रन पहने, पन्द्रह दिन की बढ़ी हुई दाढ़ी लिए, वह धीरे-धीरे उस ओर चल रहा है जहाँ लूला उसकी प्रतीक्षा कर रही है।

---

* गाउन के नीचे पहिनने का वस्त्र।

"कृपया इस तरफ से"—एक तीखी आवाज़ आती है।

बिना कुछ कहे-सुने वे दूसरी क्यू के अन्त में खड़े हो जाते हैं। दो-तीन सौ व्यक्ति शॉत-क्लाँत भाव से खड़े हैं। 'सार्वजनिक कार्य-विभाग' के अध्यक्ष का प्रमुख सहायक इन लोगों के हिस्से का काम इन्हें बता रहा है। तीन सींगधारी स्वच्छ श्वेत सूटन× पहने यह महान् व्यक्ति दो सींगधारी पादरियों के साथ एक बड़ी सी टेबुल पर झुका हुआ बैठा है। पुराने ज़माने की बीमा कम्पनियों की फाइलें, जिनका प्रयोग नहीं हुआ था, उसके सामने खुली पड़ी हैं।

लगभग घण्टे भर धीरे-धीरे खिसकने के बाद लूला और डा० पूल का अधिकार के उस स्रोत तक पहुँचने का नम्बर आता है। कुछ क्षण वे प्रकाश में खिसकते हुए नज़र आते हैं। अन्त में वे अपने गंतव्य स्थान तक पहुँचते हैं। डा० पूल को दक्षिणी कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के खंडहरों में स्थित 'भोजन-उत्पादन-विभाग' के डाइरेक्टर से उनके कार्यालय में मिलने के लिए कहा जाता है। डा० पूल को यह भी स्पष्ट कर दिया जाता है कि उनके लिए वहाँ एक प्रयोगशाला, पौधों के उत्पादन के लिए ज़मीन का एक टुकड़ा और काम में हाथ बँटाने के लिये अधिक से अधिक चार मज़दूरों का प्रबन्ध कर दिया गया है।

× बटनदार लम्बा गाउन।

"आपको अधिक से अधिक चार मज़दूर मिलेंगे, यद्यपि साधारण तौर पर..." गिर्जे का एक अधिकारी डा० पूल को बता रहा है।

बिना आगा-पीछा देखे, बिना किसी अधिकार के लूला उसकी बात में दख़ल देती है।

"उन चार मज़दूरों में कृपया मुझे भी शामिल कर दें।" वह गिर्जे के अधिकारी से प्रार्थना करती है।

अध्यक्ष का प्रमुख सहायक कुछ देर तक लूला की ओर अन्यमनस्क भाव से देखता है, फिर परिचारकों से पूछता है—"कौन है यह अपवित्रता की पुतली ?"

एक परिचारक फांइल से लूला का कार्ड खींचता है और आवश्यक बातें सूचित करता है। — अट्ठारह वर्ष की युवती, अब तक वंध्या, एक बार ग़ैर-मौसम में किसी कामातुर के साथ पकड़ी गई जिसे पीछे बंदी बनने में विरोध करने के कारण मौत की सज़ा दी गई थी—इस घृण्यमयी के चरित्र या व्यवहार के विषय में कोई विशेष आपत्तिजनक बात नहीं—गत वर्ष इसे क़ब्रिस्तान में क़ब्र खोदने का काम दिया गया था और वही काम इस वर्ष भी इसके लिए निश्चित हुआ है।

"पर मैं तो अल्फी के साथ काम करना चाहती हूँ।" लूला रिपोर्ट का विरोध करती है।

"मालूम होता है, तुम भूल रही हो--यह प्रजातन्त्रवाद

है।" एक परिचारक उसे चेताना चाहता है।

"वह प्रजातन्त्रवाद जहाँ प्रत्येक प्रोलिटेरिएट पूर्ण स्वतन्त्रता का उपभोग करता है।" उसका दूसरा साथी बात स्पष्ट करता है।

"पूर्ण स्वतन्त्रता ही नहीं, सच्ची स्वतन्त्रता।"

"प्रोलिटेरिएट की इच्छा को पूर्ण करने की स्वतन्त्रता।"

"मज़दूर-वाक्य शैतान-वाक्य है।"

"निस्सन्देह, शैतान-वाक्य धर्म-वाक्य है।"

"और हम धर्म के, गिर्जे के, प्रतिनिधि हैं।"

"क्यों, तुम्हारी समझ में आया?"

"मैं तो क़ब्रिस्तान से ऊब गई हूँ। यही चाहती हूँ कि अब मुर्दों की बजाय और कुछ उखाड़ने का कार्य दिया जाय।"

कुछ देर स्तब्धता। अध्यक्ष का प्रमुख-सहायक झुक कर कुर्सी के नीचे से एक बड़ा-सा चाबुक उठा कर अपने सामने मेज़ पर रखता है। अपने विभाग के कर्मचारियों से वह कहता है—"अगर मैं भूल कर रहा होऊँ तो सुधार देना, पर मेरा ख़याल है कि प्रोलिटेरिएट की स्वतन्त्रता की अवज्ञा करने पर प्रत्येक अपराध के लिए पच्चीस प्रहारों का दण्ड निर्णीत है।"

फिर स्तब्धता। लूला का मुँह उतर जाता है; वह विस्फारित दृष्टि से, डरती हुई, यन्त्रणा के उस क्रूर साधन को देखती है। सहम कर वह आँखें फेर लेती है। बोलने का कुछ प्रयत्न

करती है, पर तालु चिपक जाते हैं। थूक निगल-निगल कर वह चेष्टा करती है—"मुझे कोई विरोध नहीं है। मैं तो वास्तव में स्वतन्त्रता चाहती हूँ।" किसी तरह वह अपनी बात पूरी करती है।

"क़ब्रिस्तान में काम करने की स्वतन्त्रता।"

वह सिर झुका कर स्वीकार करती है।

"यह ठीक है। भली लड़की हो।"

लूला डा० पूल की ओर देखती है। उनकी आँखें मिलती हैं, मुँह से कोई शब्द नहीं निकलता।

"गुड बाइ, अल्फी!" अन्त में कुछ क्षीण स्वर उसके मुँह से निकलते हैं।

"गुड बाइ, लूला।"

दो पल और बीतते हैं। लूला की पलकें झुकती हैं और वह मुड़ जाती है।

सहकारी-प्रमुख डा० पूल से कहता है—"हाँ, अब हम लोग काम की बातें करें। साधारण तौर पर, जैसा कि मैं बता रहा था, तुम दो से अधिक मज़दूरों से काम नहीं लोगे। क्यों, मैं समझता हूँ मेरी बात स्पष्ट है।"

डा० पूल सिर हिला कर उसकी बात मान लेता है।

दक्षिणी कैलिफोर्निया-विश्वविद्यालय की एक प्रयोगशाला पर प्रकाश पड़ता है, जहाँ किसी समय जीव-विज्ञान-शास्त्र का

अध्ययन हुआ करता था। आवश्यकता की सभी वस्तुएँ वहाँ मौजूद हैं लेकिन सभी चीज़ों पर मिट्टी की कई तहें जम गई हैं। कमरे में इस समय भी तरह-तरह की हड्डियाँ पड़ी हुई हैं और चीरने-चारने का सामान भी वर्तमान है।

दरवाज़ा खुलता है और डा० पूल प्रवेश करता है। उसके पीछे 'भोजन-उत्पादन-विभाग' का डाइरेक्टर है—अधेड़ सा व्यक्ति है, सफेद-भूरी दाढ़ी है। मामूली कपड़े का ट्राउज़र, स्टैंडर्ड एप्रन, और बीसवीं सदी के किसी फिल्म-मैनेजर के बटलर का कोट कटा-छँटा कर वह पहने हुए है।

"सब कुछ यहाँ गन्दा पड़ा हुआ है।" उसने नम्रतापूर्वक कहा—"आज दोपहर को हड्डियाँ हटवा दूँगा। कल नौकर टेबुल वगैरह सब साफ़ कर देंगे और फर्श भी पानी से धुल जायगा।"

"ठीक, ठीक।" डा० पूल केवल उसकी बात में सहयोग देता है।

एक सप्ताह बाद उसी कमरे पर प्रकाश। हड्डियों का ढेर हट गया है। नौकरों की कृपा से कमरे में सभी चीज़ें साफ़ और सुन्दर हैं। डा० पूल के पास तीन प्रतिष्ठित व्यक्ति बैठे हुए हैं। चार सींगधारी पादरी-प्रमुख पिशाच-संस्था की भूरी पोशाक पहने हुए हैं। उनके पास नेता बैठा हुआ है; वह

अमेरिकन नेवी के रीयर-एडमिरल की पोशाक पहने हुए है जो कुछ समय पहले फॉरेस्ट-लॉन में मिली थी। इन व्यक्तियों की प्रतिष्ठा का ध्यान रखते हुए कुछ दूर हट कर भोजन-विभाग का डाइरेक्टर बटलर गुप्त वेश में बैठा हुआ है। उनके सामने डा० पूल ऐसी मुद्रा में बैठा हुआ है मानों किसी विशिष्ट सभा में उसे अपनी रिपोर्ट सुनानी हो।

"क्या मैं आरम्भ करूँ ?" वह पूछता है।

चर्च और स्टेट के प्रधान एक दूसरे की ओर देखते हैं। उनकी आँखें मिलती हैं और तब एक साथ वे लोग स्वीकृति-सूचक सिर हिलाते हैं।

"दक्षिणी कैलिफोर्निया की भूमि के विदीर्णीकरण और पौधों के रोगों का विवेचन,—कृषि की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश और प्रस्तावित सुधारों की योजना,—लेखक अल्फ्रेड पूल, डी. एस सी., सहयोगी प्रोफेसर, वनस्पति-विज्ञान-विभाग, ऑकलैंड विश्वविद्यालय।"

डा० पूल के पढ़ने के साथ ही सन् गेब्राइल पर्वत-मालाओं के एक ढालू अँचल पर प्रकाश। बंजर-भूमि, इधर-उधर कैक्टस के कुछ पेड़-पौधे। चट्टानी धरती पर स्यापा छाया हुआ है। सूरज की किरणें उसे तपा रही हैं। मकड़ी के जाल की तरह भूमि कटी-फटी है। कुछ नाले तो अभी कटने ही लगे हैं, पर कुछ पृथ्वी की गहराई तक विदीर्ण हो रहे हैं।

किसी विशाल भवन का ध्वंसावशेष, जिसका अधिकांश भाग पृथ्वी पहले ही ग्रस चुकी है, अपनी नाजुक हालत में एक ऐसे दर्रे के किनारे खड़ा है जिसने ज़मीन पर मानो विचित्र नक्काशी का काम पहले से ही शुरू कर रखा हो। पहाड़ की तलहटी में समतल मैदान अखरोट के निर्जीव पेड़ों से पटा हुआ है। ये पेड़ उन दर्रों से निकले हैं जहाँ बरसात की ऋतुएँ उन्हें दफ़ना चुकी थीं।

दृश्य पर प्रकाश। इसके ऊपर डा० पूल की आवाज़ ऊँची उठती हुई सुनाई देती है—

"अपनी प्रकृत अवस्था में दो वस्तुओं का पारस्परिक सम्बन्ध कल्याणकर होता है। पर अवस्था की विकृति में एक वस्तु दूसरे का शोषण करने लगती है। उसके प्राण-तत्त्वों को चूस कर वह अपना पालन करना आरम्भ कर देती है। इस एकांगिता का परिणाम अन्त में दोनों के लिए घातक सिद्ध होता है; शोषित की हत्या शोषक की मृत्यु का कारण बन जाती है। आधुनिक मनुष्य और पृथ्वी का सम्बन्ध भी एकांगी हो गया था। उसने अपने आपको पृथ्वी का स्वामी मान लिया। पृथ्वी के साथ उसका सम्बन्ध वैसा ही हो गया जैसा केंचुआ और कुत्ते का अथवा कुकुरमुत्ता और आलू की खेती का।

नेता पर प्रकाश। घुँघराली सघन दाढ़ी में छिपे हुए लाल-लाल ओंठ जम्हाई लेने के कारण खुल जाते हैं। डा० पूल

पढ़ने में तत्पर है।

"मनुष्य इस बात को भूल गया कि प्राकृतिक साधनों का विध्वन्स अंत में सभ्यता का नाश कर देगा और परिणाम-स्वरूप मनुष्य जाति ही विलीन हो जायगी। पुश्त-दर-पुश्त वह पृथ्वी का शोषण करता रहा और इतनी निर्ममता के साथ कि.........."

"तुम इसे संक्षेप में नहीं कह सकते?" नेता ने कहा।

डा० पूल को कुछ रोष-सा आने लगता है। पर उसे स्मरण हो आता है कि वह यहाँ बर्बर व्यक्तियों के बीच कैद है। जबर्दस्ती वह मुस्कराने की चेष्टा करता है, "मैं समझता हूँ, हम सीधे पौधों के रोग वाले प्रकरण पर आ जाएं।" उसने कहा।

"मुझे कोई आपत्ति नहीं, यदि तुम अपना लेख छोटा कर सको।" नेता ने कहा।

"अधीरता शैतान के प्रिय अवगुणों में से एक है।" पादरी-प्रमुख ने सूत्र-रूप से कहा।

डा० पूल तीन चार पन्ने उलट कर फिर पढ़ने लगता है।

"धरती की इस अवस्था में तो पैदावार बहुत ही कम होगी, पौधे भले ही स्वस्थ हों। पर पौधे भी स्वस्थ नहीं हो सकते।

खेतों में उन्हें देखने के बाद, अन्न-फल, कंद-मूल आदि की परीक्षा पढ़ने के बाद, पुराने जमाने के अणुवीक्षण यंत्र की सहायता से विभिन्न प्रकार की बनस्पतियों को देखने के बाद, मैं इसी निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि पौधों की बीमारियों का एक ही कारण हो सकता है। जान-बूझ कर विषैली गैस, बैक्टिरिया और बम आदि के प्रयोग से पौधों की नस्ल ही बर्बाद कर दी गई है, अन्यथा इन नाना प्रकार के रोगों और विकृतियों का क्या कारण हो सकता है।

वक्तव्य के बीच में ही पादरी-प्रमुख डा० पूल को टोकता है। वह कहता है—"अब भी तुम यही मानते हो कि इन लोगों के हृदय में शैतान अधिष्ठित नहीं था?" वह सिर हिलाता हुआ फिर कहता है—"कौन विश्वास करेगा कि रुढ़िवाद ऐसे मेधावी और ऐसे शिक्षित व्यक्ति को भी अन्धा कर सकता है?"

"हॉ, हाँ, यह सब तो हमें मालूम है।" नेता अधीरता-पूर्वक कहता है—"इस अनर्गल बकवास को बन्द कर हमें काम की बात पर आना चाहिए। प्रश्न यह है कि आप इन सब के सम्बन्ध में क्या कर सकते हैं?"

डा० पूल अपना गला साफ करने लगता है।

"काफ़ी समय लगेगा। बड़ी दिक्कत का काम है।" डा० पूल ने प्रभावित करने के लिए कहा।

"लेकिन मुझे तो इसी साल अधिक अन्न चाहिए। कैसे भी हो, अन्न तो अधिक पैदा करना ही होगा।"

कुछ डरते-डरते डा० पूल ने बताया कि दस वर्ष तो कम से कम पौधों की नस्ल और उनकी जाँच करने में ही लग जावेंगे। फिर भूमि के विदीर्णीकरण की समस्या है—इस बीमारी को तो हर हालत से रोकना ही पड़ेगा। जमीन को चौरस करने में, उसकी सिंचाई में, उसमें खाद, मिलाने में इन्हीं सब में काफी समय लग जाएगा, और यह तो एक बार की बात नहीं, हर साल की मुसीबत है। पुराने समय में जब कि मजदूर और मशीन दोनों पर्याप्त थे, तब भी आदमी पृथ्वी की उर्वरा शक्ति को नष्ट होने से नहीं बचा सका था और आज तो यह काम और भी कष्टकर हो गया है।"

"वे रक्षा करने में असमर्थ रहे हों, यह बात नहीं है,"—पादरी-प्रमुख ने बाधा दी, "पर वे ऐसा करना चाहते ही नहीं थे। द्वितीय-विश्व युद्ध और तृतीय विश्व-युद्ध के बीच उनके पास पर्याप्त अवकाश और साधन थे, किन्तु उन्हें तो राजनीति के दॉवपेंचों में मजा आता था। आप जानते हैं, इन सब का क्या परिणाम हुआ?" परिणाम एक एक कर वह अंगुलियों पर गिनाने लगता है "असंख्य व्यक्तियों के लिये सड़ा-गला भोजन, अधिक राजनीतिक अशांति जिसके फल स्वरूप राष्ट्रीयता और साम्राज्यवादिता की भावनाओं में उत्तेजना और सब के ऊपर

महा-विनाश का तांडव। लोगों ने आखिर अपने पाँवों पर आप कुल्हाड़ी क्यों चलाई? शैतान की यही इच्छा थी कि वे ऐसा करें—उसने लोगों के हृदयों पर अपना पूरा अधिकार जमा दिया था।"

नेता हाथ के संकेत से पादरी-प्रमुख का भाषण बन्द करता है।

"बस, बस, इस वक्त तो कृपा कीजिये। क्षमा शास्त्र (Apologetics) या स्वाभाविक शैतान-शास्त्र (Natural Diabology) पर आपका प्रवचन नहीं हो रहा है। यहाँ तो यह सोचना है कि हमें क्या करना है?"

"दुर्भाग्यवश इसी कार्य में तो काफी समय लग जायगा।" डा० पूल बोला।

"कितना समय?"

"देखिये न, पाँच वर्ष तो विदीर्णीकरण से लड़ने में ही लग जायेंगे। दस वर्ष में कहीं आशाजनक लक्षण दिखाई पड़ें। बीस वर्ष में कहीं इस ज़मीन का कुछ हिस्सा अपनी प्राचीन उर्वरा-शक्ति का तीन चौथाई अंश प्राप्त कर सके। पचास वर्ष में……"

"पचास वर्ष में तो विकृति की गति आज से दूनी हो जायगी। और सौ वर्ष में शैतान की पूर्ण विजय निश्चित् है।" पादरी-प्रमुख उसकी बात काट बच्चे की तरह हँसने लगता है।

सींगों का चिह्न प्रदर्शित कर कुर्सी से उठता हुआ वह कहता है—"खैर, तब तक मैं तुम्हारे प्रत्येक कार्य और प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ।"

हॉलीउड कब्रिस्तान का दृश्य। समाधियों पर विकीर्ण होती हुई प्रकाश-किरणें। श्मशान के इस भाग का अवलोकन एक बार हो चुका है। हेडाबॉडी की मूर्ति पर मध्यम प्रकाश। किरणें थिरकती हुई मूर्ति की पीठिका पर पड़ती हैं, जहाँ खुदा हुआ है—'जनता के विमुग्ध हृदयों की रानी'।

प्रकाश से दूर, जमीन पर गिरते हुए फावड़े की आवाज़ आती है—कंकड़-पत्थर बाहर फेंके जा रहे हैं। गड्ढा गहरा होता जाता है।

प्रकाश-पुञ्ज में लूला तीन फुट गहरे गड्ढे में खड़ी हुई फावड़ा चला रही है। वह थक गई है।

अपने आस-पास किसी की पद-ध्वनि का संकेत पा वह सिर उठाती है। फ्लॉसी उसी की ओर आती हुई दिखाई पड़ती है।

"क्यों, खैर तो है?", उसने प्रश्न किया।

बिना कुछ कहे लूला केवल सिर हिला देती है। उल्टे हाथ से वह अपने माथे का पसीना पोंछने लगती है।

"शव जब दिखाई पड़े, आकर सूचित कर देना।"—वह अपनी बात जारी रखती है।

"एक घण्टा तो और लग ही जायगा।"—खिन्न होकर लूला बोली।

"लगी रह पगली," उत्साह की तरङ्ग में फ्लॉसी बोली—मानों कोई व्यक्ति आवेश में आकर व्याख्यान दे रहा हो—"अपनी सारी शक्ति से काम कर। उन लोगों को भी मालूम हो जाय कि स्त्री पुरुष जितना काम कर सकती है। तुमने अगर मन लगाकर काम किया तो सुपरिण्टेण्डेण्ट तुम्हें आभूषण रखने की स्वीकृति दे सकता है। देख, आज सुबह ही मुझे ये चीज़ें मिली हैं।"

वह अपनी जेब से पुरस्कार में प्राप्त वस्तुएँ दिखाती है। स्टॉकिङ्ग का जोड़ा केवल अँगूठों के पास कुछ हल्का है, अन्यथा अवस्था अच्छी है।

"ओह!"—लूला प्रलुब्ध दृष्टि से उसे देखती है।

"इस क़ब्र में तो आभूषण के लिये हमें निराश ही होना पड़ा,"—स्टॉकिङ्ग सहेजती हुई वह कहती है—"केवल शादी की अँगूठी और एक गया-बीता कङ्गन, बस ये ही मिले। आशा है तुम्हारी मेहनत से हमें निराश नहीं होना पड़ेगा।"

वह 'जनता के विमुग्ध हृदयों की रानी' का उदर थपथपाने लगती है।

"अच्छा, अब मुझे चलना चाहिए। तुम तो जानती ही होगी हम कहाँ काम कर रही हैं—वहीं, उत्तरी द्वार के पास।"

लूला सिर हिलाती है।

"काम समाप्त होते ही मैं आ जाऊँगी।"

'अचरज भरे इन सींगों को देख'—गीत की कड़ी गुनगुनाती हुई फ्लॉसी दृष्टि से ओझल हो जाती है। लूला अवसाद की गहरी साँस ले अपने काम में जुट जाती है।

अत्यन्त मृदुल ध्वनि में कोई लूला का नाम लेता है।

लूला चौंककर अपने चारों ओर देखती है।

रूडोल्फ वेलेंटिनो की समाधि के पीछे से होता हुआ डा० पूल उसकी ओर आता हुआ दिखाई देता है। वह सम्हल-सम्हल कर पाँव बढ़ा रहा है।

लूला पर प्रकाश।

उसका हृदय धड़कने लगता है। वह तत्क्षण सहम कर पीली पड़ जाती है। हाथ उठकर छाती से लग जाता है।

"अल्फी"—वह धीरे-से पुकारती है।

डा० पूल पर प्रकाश। कूद कर वह लूला के पास क़ब्र में पहुँच जाता है और बिना कुछ कहे-सुने उसे हृदय से चिपका लेता है। आवेश में मुँह चूमता है। लूला उसकी छाती में अपना मुँह गड़ा देती है।

"मैंने तो सोचा था, अब शायद ही तुमसे मुलाकात होगी।" उसकी आवाज़ भर्रा उठती है।

"तुमने भी क्या सोचा!"

वह उसे फिर चूम लेता है, और आलिङ्गन में समेट उसके मुँह पर आँखें गड़ा देता है।

"क्यों, यह चिल्लाना कैसा?"—वह पूछता है।

"मेरे बस की बात नहीं।"

"तुम तो आज बहुत ही मोहक लग रही हो। स्मरण नहीं, पहले भी कभी इतनी सुन्दर दिखी थी क्या?"

बोलने में असमर्थ लूला केवल सिर हिला देती है।

"हँसो," वह उस पर दबाव डालता है।

"कैसे हँसूँ?"

"हँसो, मैं कहता हूँ। मैं उन्हें देखना चाहता हूँ।"

"किन्हें?"

"हँसो तो।"

अनुराग की स्निग्ध मुस्कान लूला के गालों पर दौड़ जाती है। गालों पर गड्ढे उभर पड़ते हैं। मुँह चमकने लगता है।

डा० पूल हर्ष से खिल पड़ता है—"ये रहे, कितने सुन्दर लगते हैं तुम्हारे गालों पर।"

वह अपनी अँगुली लूला के गाल में गड़ा देता है, मानों कोई अन्धा आदमी पढ़ने का प्रयत्न कर रहा हो। लूला अनायास हँसने लगती है। डा० पूल की अँगुली के नीचे उसका कोमल गाल घँस जाता है। वह अत्यन्त प्रसन्न है।

इसी समय 'अचरज भरे इन सींगों को देख' की गुन-गुनाहट गहरी हो जाती है। लूला भय-उद्विग्न दृष्टि से देखती है।

"जल्दी, जल्दी"—वह धीमे स्वर में कहती है।

आश्चर्यजनक फुर्ती दिखा डा० पूल उछल कर क़ब्र से बाहर हो जाता है।

फ्लॉसी जब तक प्रकाश-केन्द्र के निकट आती है, वह 'जनता के विमुग्ध हृदय की रानी' के स्मारक का सहारा लेकर सम्हल कर खड़ा हो जाता है। नीचे गड्ढे में लूला पागल की तरह खोदने लगती है।

"हाँ, मैं तुम्हें कहना भूल गई थी कि आध घण्टे में लब्ब शुरू हो जायगा।" फ्लॉसी ने अपने आने का कारण बताया।

तब डा० पूल पर दृष्टि पड़ते ही वह अचरज में पड़ जाती है।

"गुड मार्निङ्ग"—डा० पूल नम्रता से कहता है।

स्तब्धता। फ्लॉसी डा० पूल के बाद लूला को और लूला के बाद डा० पूल को देखती है।

"आप यहाँ क्या कर रहे हैं?" उसने सन्देह-जनित स्वर में पूछा।

"सेंट अज़ाज़ेल के मन्दिर जा रहा था।" उसने कहा—

"पादरी-प्रमुख ने कहलाया था कि वे विद्यार्थियों को 'इतिहास में शैतान' पर तीन व्याख्यान देने वाले हैं। वे चाहते हैं कि मैं उनके भाषण सुनूँ।"

"सेंट अज़ाज़ेल के मन्दिर के लिए तो आपने अच्छा रास्ता चुना।"

"यहाँ तो मैं नेता को खोज रहा था।" डा० पूल ने बताया।

"अच्छा, तो वे यहाँ नहीं हैं।"

फिर स्तब्धता।

"ऐसी अवस्था में मुझे अकेले ही जाना पड़ेगा। आप दोनों महिलाओं के कार्य में मुझे विघ्न नहीं डालना चाहिए।" हँसने का प्रयत्न कर उसने बात बनाई। पर शायद ही उसका कोई विश्वास करता।

"अच्छा, गुडबाइ, गुडबाइ।"

उनका अभिवादन कर सहज उदासीन भाव से वह चलने की कोशिश करता है।

फ्लॉसी कुछ देर डा० पूल को जाते हुए देखती है, फिर सख्ती से लूला की ओर।

"सुनती हो?", उसने कठोर होकर कहा।

लूला खोदना बन्द कर क़ब्र के अन्दर सिर उठाती है।

"क्या बात है फ्लॉसी?"—उसने ऐसे पूछा जैसे कुछ

हुआ ही न हो।

"क्या बात है?", फ्लॉसी ने उपहास किया—"मुझे चराने चली हो। तुम्हारे एप्रन पर क्या लिखा हुआ है?"

लूला एप्रन पर दृष्टि डालती है, फिर फ्लॉसी पर। उद्विग्नता से उसका मुँह लाल हो जाता है।

"क्या लिखा है?" फ्लॉसी ने अपना प्रश्न दोहराया।

"निषेध।"

"और उन गोल टुकड़ों पर?"

"निषेध।"

"निषेध, निषेध, निषेध.." स्थूलकाय फ्लॉसी शब्दों पर ज़ोर देती हुई कहती है—"और जब क़ानून कहता है—'निषेध', तो इसका अर्थ भी होता है 'निषेध'। तुम इसे अच्छी तरह जानती हो, क्यों?"

निःशब्द लूला केवल सिर हिला देती है।

"कहो कि तुम इसे जानती हो, सिर न हिलाओ।"

"हाँ, मैं जानती हूँ," लूला ने दबी हुई आवाज़ में कहा। शब्द उसके मुँह से निकल-भर गए, बस सुनाई नहीं पड़े।

"ठीक, तब यह न कहना कि मैंने तुम्हें चेतावनी नहीं दी थी। और अगर वह विदेशी 'कामातुर' फिर तुम्हारे पास चक्कर काटे तो मुझे बताना, मैं समझ लूँगी।"

दृश्यान्तर। सेंट अज़ाज़ेल के गिर्जे के अन्दर का दृश्य। किसी समय यह 'लेडी ऑव गाडालूप' का गिर्जा था। आज भी इसमें बहुत कम परिवर्तन हुआ है। सेंट जोज़ेफ़, मेगडालेन, सेंट ॲथनी, सेंट रोज़ आदि की प्लास्टर प्रतिमाओं पर केवल लाल रंग कर दिया गया है और उनके मस्तकों पर सींग सुशोभित कर दिये गए हैं। उच्च वेदी पर क्रॉस के स्थान पर सिदार लकड़ी के विशाल सींगों का एक जोड़ा जड़ दिया गया है। इन सींगों पर अँगूठियाँ, कङ्कन, गलहार, कर्णफूल, हाथ-घड़ी आदि वस्तुएँ लटक रही हैं। ये चीजें क़ब्र खोदते समय पुरानी हड्डियों के ढेर और अन्य मूल्यवान् आभूपणों के साथ मिली थीं।

गिर्जे में कोई पचास विद्यार्थी धर्म-मञ्च के सामने सिर झुकाये वैठे हैं। सामने की पंक्ति के मध्य में डा० पूल वैठा हुआ है—दाढ़ी वेतरह वढ़ रही है। ट्वीड के वस्त्र वह पहने हुए है। धर्म-मञ्च पर पादरी-प्रमुख विराजमान हैं। अपने भाषण का इस समय वे उपसंहार कर रहे हैं।

"जिस प्रकार ईश्वर के विधान में मनुष्य अगर चाहता तो अपनी रक्षा कर सकता था, उसी प्रकार शैतान के विधान में उसे नाश को प्राप्त होना ही पड़ेगा। तथास्तु!"

स्तब्धता। विद्यार्थियों का अगुआ उठता है। दो-दो की पंक्तियों में विद्यार्थी मर्यादा और शिष्टाचार का ध्यान रखते हुए पश्चिमी द्वार की ओर वढ़ते हैं।

डा० पूल उनके पीछे-पीछे चलना ही चाहता है कि उच्च-स्वर में किसी को अपना नाम पुकारते सुन वह ठिठक जाता है।

मुड़कर वह देखता है कि धर्म-मञ्च की सीढ़ियों से पादरी-प्रमुख उसकी ओर संकेत कर रहे हैं।

"क्यों, व्याख्यान के बारे में तुम्हारा क्या मत है?", वह महान् व्यक्ति अपनी ओर आते हुए डा० पूल से पूछता है।

"अत्यन्त सारगर्भित।"

"बिना चापलूसी के?"

"हाँ, यथार्थतः सारगर्भित।"

पादरी-प्रमुख प्रसन्न-वदन मुस्कराता है।

"मुझे यह सुनकर सचमुच बड़ी खुशी हुई।"

"आपके भाषण का वह स्थान तो मुझे बहुत ही अच्छा लगा जहाँ आपने उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के धर्म के सम्बन्ध में चर्चा की थी—'जेरेमिया' से 'बुक ऑव जजेज़' की ओर लोगों का झुकाव, व्यक्ति से राष्ट्रीयता की ओर—दूसरे शब्दों में संसार का नाश की ओर बढ़ने का प्रयत्न—बड़ी मार्मिक विवेचना की आपने।"

पादरी-प्रमुख सिर हिलाता है।

"हाँ, यही तो बर्बादी का कारण था। अगर व्यक्ति और विश्व से उनका लगाव होता तो सृष्टि के विधान में संतुलन नहीं रहता, फिर शैतान का चक्र चल ही कैसे सकता था?

लेकिन भाग्यवश शैतान के भी तो कई सहयोगी हैं—राष्ट्र, गिर्जे, राजनैतिक संस्थाएँ। उसने लोगों की रूढ़ियों को उभारा, उनकी धारणाओं को उत्तेजना दी। लोगों ने जब अणु-बम प्राप्त कर लिया था, उस समय तक तो उनके मानसिक धरातल को उसने ईसा की नवीं सदी पूर्व के लोगों के समान कर दिया था।"

"और फिर", डा० पूल ने कहा—"मुझे वह स्थल अच्छा लगा जहाँ आपने पूर्व और पश्चिम के सम्बन्धों पर प्रकाश डाला—कैसे शैतान ने उन्हें सिर्फ एक दूसरे की बुराई ग्रहण करने की प्रेरणा दी। पूर्व ने पश्चिमी राष्ट्रीयता, पश्चिमी युद्ध-साधन, पश्चिमी मूवी (movie) और पश्चिमी मार्क्सवाद को अपनाया, और इसी तरह पश्चिम ने पूर्व की स्वेच्छाचारिता, पूर्व की मूढ़-विश्वासों के प्रति आस्था, और पूर्व की वैयक्तिक जीवन के प्रति उदासीनता को ग्रहण किया। सारांश यह कि शैतान ने यह प्रयत्न किया कि मनुष्य जाति पूर्व और पश्चिम दोनों दुनियाओं का नाश कर दे।"

"ज़रा सोचो, दुनिया का क्या नक़्शा होता यदि वे एक दूसरे के गुणों को अपनाने लगते तो।" पादरी-प्रमुख ने ज़ोर देकर कहा—"पूर्व का आत्मवाद पश्चिम के विज्ञान का मार्ग निर्देश करता; जीवन-यापन की उनकी कला पश्चिम की शक्ति को संस्कृत करती; और पश्चिम का व्यक्तिवाद पूर्व के सामू-

हिकवाद (Totalitarianism) को संयत करता।" धर्म-भीरु पादरी-प्रमुख का सिर हिलने लगता है—"इससे तो पृथ्वी पर स्वर्ग का राज्य हो जाता। सौभाग्यवश शैतान का अनुग्रह उस 'दूसरे' के अनुग्रह से बलशाली निकला।"

हास्य की स्मित तरल रेखा उनके ओठों पर खेलने लगती है। डा० पूल के कंधे पर हाथ रख वे वेस्ट्री* की ओर चलने लगते हैं।

"तुम जानते हो पूल, मुझे तुम से कितना स्नेह हो गया है?"

डा० पूल व्यग्र हो महामना पादरी-प्रमुख के मुँह की ओर देखने लगता है।

"तुम मेधावी हो, सुशिक्षित हो, बहुत सी ऐसी बातों को जानते हो जिनका हमें तनिक भी ज्ञान नहीं। तुम मेरे अत्यन्त सहायक हो सकते हो, और अपनी ओर से मैं यह कह दूँ कि मैं भी तुम्हारे बहुत काम आ सकता हूँ, यदि तुम हम में से एक बन जाओ।"

"आप में से एक?"—डा० पूल ने संदेह-जनक स्वर में जिज्ञासा की।

"हाँ, हम में से एक।"

डा० पूल की समझ में अब जाकर पादरी-प्रमुख की बात

---

* गिर्जे मे पादरियों के वस्त्र रखने का कमरा।

आई। उसका मुँह एक दम उतर गया। "ओह!"—अत्यन्त व्यथा के साथ उसने कहा।

"तुमसे छिपाने की बात नहीं है;" पादरी-प्रमुख ने कहा—"ऑपरेशन से कुछ कष्ट अवश्य होता है; कुछ इसमें खतरा भी है। किन्तु पादरी बनने के लाभ भी अनेक हैं, और मैं समझता हूँ उनके सामने यह सब कष्ट नगण्य है। हमें तो यह भी नहीं भूलना चाहिये कि·······"

"किन्तु महामना······" डा० पूल ने विरोध किया।

पादरी-प्रमुख ने अपना भारी-भरकम हाथ उठा कर कहा—"एक मिनट पहले सुन लो।"

उनकी मुद्रा इतनी कठोर हो जाती है कि डा० पूल को क्षमा-याचना करने में देर नहीं लगी।

"क्षमा कीजिए।"

"ठीक है, पूल प्रिय, हाँ—।"

एक बार फिर पादरी-प्रमुख प्रेम और सौहार्द की मूर्ति बन जाते हैं।

"हाँ, तो मैं कह रहा था कि अगर तुम्हें यह स्वीकार हो—अर्थात् शारीरिक-रचना में किंचित् संशोधन—तो उन सारे आकर्षणों से तुम मुक्त हो सकते हो जो अन्यथा किसी भी समय तुम पर अपना प्रभाव दिखा सकते हैं।"

"यह तो ठीक है, पर मैं आपको विश्वास दिलाऊँ···।"

"जहाँ शारीरिक आकर्षण का प्रश्न है," पादरी-प्रमुख ने सूत्र-रूप से कहा—"कोई किसी को विश्वास नहीं दिला सकता।"

डा० पूल को उस घटना का स्मरण हो आता है जब क़ब्रिस्तान में वह लूला से मिला था। वह संकुचित होने लगता है।

"यह तो आपने चलता-सा वक्तव्य दे दिया है।"—डा० पूल ने उत्तर तो दिया, पर उसे अपने आप पर स्वयं विश्वास नहीं था।

पादरी-प्रमुख ने सिर हिलाया।

"इस सम्बन्ध में वक्तव्य कभी भी चलता-सा नहीं होता। मैं तुम्हें यह भी बता दूं कि इस सम्बन्ध में नियमों की अवज्ञा करने पर हमारे यहां क्या दंड-विधान है—चाबुकों का प्रहार और ज़मीन में ज़िंदा ही दफ़नाना। मैं तो तुम्हारे ही भले की कहता हूँ—तुम्हारे हित और सुख के लिए ही कह रहा हूँ—तुम से मैं यही अनुरोध करूँगा कि हम में से एक बन जाओ।"

स्तब्धता। डा० पूल का गला रुंध जाता है।

"मेरी प्रार्थना है कि मुझे कुछ सोचने का समय दिया जाय।"

"अवश्य, अवश्य।"—पादरी-प्रमुख ने स्वीकार किया—

"जितना समय चाहिए लो—एक सप्ताह ?"

"एक सप्ताह ? एक सप्ताह में तो……"

"दो सप्ताह लो।"—पादरी-प्रमुख ने कहा और डा० पूल को तब भी चुप देख वे बोले—"क्यों ? चार सप्ताह, छः सप्ताह, जितना समय चाहिए लो। मुझे कोई जल्दी नहीं है; मुझे तो बस तुम्हारी चिंता है, सुहृद पूल।" वह डा० पूल का कंधा थपथपाने लगता है।

दृश्यांतर। डा० पूल अपनी प्रयोगशाला के बाहर बगीचे में काम कर रहा है। टमाटर के नन्हें-नन्हें पौधों की वह फिर से गुड़ाई कर रहा है। छः सप्ताह प्रायः बीत चुके हैं—उसकी हल्की भूरी दाढ़ी झूल आई है। ट्वीड का कोट और फ्लानेल के ट्राउज़र भी काफ़ी गंदे हो गये हैं। घर के कते-बुने कपड़े का कमीज़ और मृग-चर्म के जूते वह पहिने हुए है।

अपने हाथ का आख़िरी पौधा रोप कर वह अपनी कमर सीधी करता है। दुखती हुई पीठ को सहला कर वह आराम की हल्की-सी साँस लेता है और धीरे-धीरे बढ़ता हुआ बगीचे के एक कोने में जाकर खड़ा हो जाता है। सामने के दृश्य उसकी आँखों के सामने फिरने लगते हैं।

वीरान फैक्टरी और उजड़े हुए मकान अपने ध्वंसावशेषों को लिए बिखरे पड़े हैं। उनकी पृष्ठभूमि में पर्वत की उत्तुङ्ग

श्रेणियाँ, सुदूर पीछे, एक के बाद एक पूर्व की ओर फैलती गई हैं। उनकी छाया नील वर्ण है। सुनहले प्रकाश में छोटी-छोटी वस्तुएँ भी स्पष्ट नजर आ रही हैं। प्रकाश की समतल रेखा में सूखी धरती के उमड़े हुए खंड भी विशिष्ट लग रहे हैं।

निर्देशक

ऐसे अवसर आते हैं, और आज ऐसा ही अवसर है, जबकि संसार साभिप्राय सुन्दर दिखाई देने लगता है, और तब ऐसा अनुभव होता है मानों वस्तुजगत् में निहित कोई अदृश्यमान् सत्ता सहसा अपनी अभिव्यक्ति चाहने लगी हो और इसी लिए मानो वस्तु के बहिर्-आवरण में उसकी यथार्थ विशिष्टता सहज प्रकाशित हो उठी हो।

डा० पूल के ओठ हिलते हैं और वह गुनगुनाने लगता है—

सौन्दर्य, प्रेम और उल्लास।

सतत, अक्षुण्ण, अमर—

बुद्धि की क्रिया के पार, फैला अमित घन अन्धकार।

वह मुड़ता है और बगीचे के दरवाज़े की ओर बढ़ने लगता है। दरवाजा खोलने के पहले वह अपने चारों ओर ध्यानपूर्वक देख लेता है। कोई भी सतर्क आँख उसे दिखाई नहीं पड़ती। एक बार फिर ग़ौर से देखकर वह दरवाज़े से बाहर

निकल जाता है और झटपट बालू के टीलों के बीच मुड़ते हुए रास्ते को नापने लगता है। वह फिर गुनगुनाने लगता है—

मैं धरित्री—

जननी, जिसके अंतर से उद्भूत
विशालकाय वृक्ष,—वायु के शीत में कंपित
जिसके पत्र-जाल।
रोम-रोम में फूटती उल्लास की कंपन—
देह में ज्यों रक्त की तरंग—
पृथ्वी के अंक से प्रसूत, वृहद्, विशाल!
तू हर्ष का साकार, कीर्ति का रूप!!

पगडंडी छोड़कर वह सड़क पर आता है। सड़क के दोनों किनारे मकानों की पंक्ति बिछी हुई है। प्रत्येक मकान के साथ एक मोटर गेराज है और एक छोटी वाटिका है जो इस समय उजड़ रही है।

'तू हर्ष का साकार, कीर्ति का रूप'—वह इन शब्दों को दुहराता है और फिर सूनी साँस ले सिर झुका लेता है।

निर्देशक

आनन्द? पर आनन्द की हत्या तो बहुत पहले हो चुकी है। अब रह क्या गया है? तीव्र प्रहार से कराहती हुई स्त्रियों के आर्त्तनाद पर राक्षसों का अट्टहास और निविड़ अन्धकार में

वासना से उन्मत्त पशुओं का शोर। आनन्द तो उनके लिए है जो सृष्टि के क्रम से अपने जीवन को संतुलित करते हैं; किंतु जो अत्यन्त प्रवीण हैं, जो सृष्टि-क्रम को सुधारने की योग्यता रखते हैं, जो क्रूर, विद्रोही और नृशंस हैं—उनके लिए आनंद का विधान कहाँ है ? वह तो उनके लिए अपरिचित होता जा रहा है। उनके वंशज तो उसके अस्तित्व को भी सन्देह-जनक समझेंगे। प्रेम, आनन्द, शाँति—ये तो मनुष्य की आत्मा के फल हैं—वह आत्मा जो मानव का और विश्व का शुभ्र सत्व है; पर पशुता के तो फल ही और हैं, उसके अहं और विद्रोह के फल तो घृणा, अशाँति, त्रास, यंत्रणा और प्रमाद हैं।

डा० पूल सड़क पर चलता हुआ गुनगुना रहा है—

विश्व में सर्वत्र व्याप्त वे वन्य व्यक्ति,
जिनसे भयभीत, त्रस्त
जीवन-तरु के देव, प्रेम के बसंत,
औ' कुंजों में कूकती कोयल का गान।

निर्देशक

जंगलवासियों के हाथ में कुठार, छुरी, चाकू आदि तरह-तरह के हथियार हैं।

डा० पूल सिहर उठता है। उसके पाँव जल्दी-जल्दी बढ़ने लगते हैं—उस व्यक्ति की तरह जिसे यह डर लगा हो कि कोई

दुष्ट शक्ति उसका पीछा कर रही है। सहसा वह रुकता है और अपने चारों ओर देखने लगता है।

निर्देशक

जो शहर किसी समय पचीस लाख व्यक्तियों का निवास स्थान था, वह आज कुछ सहस्र व्यक्तियों की बस्ती है। शहर के जीवन में कहीं कोई स्पंदन नहीं। वैभव और ऐश्वर्य के विशाल कक्ष शून्य हैं। चारों ओर भयानक शाँति है, मानों खंडहरों ने भी षड़यंत्र कर रखा हो।

आशा और निराशा के बीच डा० पूल का हृदय धड़क रहा है। उसकी गति में वेग आ जाता है। प्रधान मार्ग छोड़ कर बगल की सड़क से १६६३ नम्बर की गेराज में वह जल्दी ही पहुँच जाता है। गेराज के विशाल फाटक खुद अपने ही बोझ से जंग लगे हुए कब्जों पर झूल रहे हैं। अंदर धुँधला सा प्रकाश है और सड़ी हुई गंध आ रही है। गेराज की पश्चिमी दीवाल के एक छिद्र से गोधूलि का सूर्य अपनी किरणें शेवरलेट मोटर के अगले बाएँ पहिए पर बिखेर रहा है। चार द्वार की सूपर-डी-लक्स शेवरलेट सेडन है। उसके निकट ही पृथ्वी पर दो कपाल, एक बच्चे का और दूसरा वय-प्राप्त व्यक्ति का, पड़े हैं। मोटर के तीन द्वार बंद हैं, एक भिड़ा हुआ है। डा० पूल उसे खोल अँधेरे में झाँकता है।

"लूला !"

गाड़ी के अंदर आ, पिछली सीट के जर्जर आसन पर डा० पूल उसके पास बैठ जाता है और धीरे से उसका हाथ अपने हाथों में लेकर दबा देता है।

"प्रिये !"

लूला निःशब्द उसकी ओर देखती है। उसकी आँखों में भय का कम्पन तैर रहा है।

"आखिर तुम वहाँ से निकल आने में सफल हुई ?"

"किंतु फ्लासी तो अब भी संदेह करती है।"

"जहन्नुम में जाय फ्लासी !" डा० पूल ने लापरवाही से कहा, मानों वह अपनी वाणी में आश्वासन और निर्भयता उत्पन्न करना चाहता हो।

"उसके प्रश्न ही नहीं खत्म होते थे।" लूला बोली— "मैंने उससे यही कहा कि सूई, काँटे, छुरी आदि खोजने जा रही हूँ।"

"खोजा क्या और मिला क्या ?"

मृदुल मुस्कान के साथ उसने लूला के हाथ अपने होठों तक चुम्बन के लिये बढ़ा लिए। लूला ने आपत्ति की।

"अल्फ्री, कृपा कर.. ।"

उसके शब्दों में अनुनय था। डा० पूल के हाथों से उसका हाथ नीचे खिसक गया।

"और फिर भी तुम कहती हो कि तुम्हें मुझसे प्रेम है ?"

लूला ने उसकी ओर भय-विह्वल दृष्टि से देखा और फिर आँखें झुका लीं।

"मैं विवश हूँ, अल्फ़ी, मैं कुछ नहीं जानती।"

"लेकिन मैं जानता हूँ" डा० पूल ने दृढ़ता-पूर्वक कहा—"मैं जानता हूँ, तुम मुझ से प्यार करती हो। मैं जानता हूँ, मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता। हमें अब केवल मृत्यु ही पृथक् कर सकती है।" उनके स्वर में उस व्यक्ति का उत्साह था जिसकी अंतर्मुखी वासना सहसा एक पत्नीव्रत में उद्गरित हो उठी हो।

पर लूला अब भी चिन्तित है।

"मैं तो यही जानती हूँ कि मुझे यहाँ नहीं ठहरना चाहिए।

"क्या अनर्गल बकती हो?"

"अनर्गल नहीं। सचमुच अब मुझे अधिक देर नहीं करनी चहिए। निर्दिष्ट समय के अतिरिक्त मुझे अपने ऊपर कोई अधिकार नहीं है। यह नियम के विरुद्ध है। वह उसके खिलाफ है।" एक क्षण रुककर वह फिर कहती है—"लेकिन फिर उसने मुझे यह सब सोचने-समझने के लिये विवश ही क्यों किया और...।" वह घृणित शब्द उसकी जीभ पर नहीं आ सका—"उन में से एक को तो मैं जानती थी!" उसने दबी ज़बान से कहा—"वह कितना प्यारा था—तुम्हारी तरह मधुर—और लोगों ने उसे मार डाला।"

"अन्य व्यक्तियों के बारे में सोचने से क्या लाभ है?" डा० पूल ने कहा—"हमें तो हमारे सम्बन्ध में ही सोचना है। हमें तो यही सोचना है कि हम किस प्रकार सुखी हो सकते हैं। दो महीने पहले की बात याद है? वह चाँदनी-रात—और पीछे-पीछे सिमटता हुआ अन्धकार!"

"पर उस समय तो हम लोग नियमों का उल्लंघन नहीं कर रहे थे।"

"इस समय भी हम किसी नियम का उल्लंघन नहीं कर रहे हैं।"

"नहीं, नहीं, इस समय बात ही दूसरी है।"

"कोई दूसरी बात नहीं।" डा० पूल ने बलपूर्वक कहा—"उस समय मैंने जो किया और आज मैं जो कर रहा हूँ उनमें मुझे कोई भेद दिखाई नहीं देता और न तुम कोई भेद देख सकती हो।"

"मुझे दिखाई देता है।" उसने विरोध किया, कुछ जोर से, अपनी बात की गम्भीरता को सिद्ध करने के लिये।

"नहीं, यह असम्भव है।"

"असम्भव नहीं।"

"असम्भव है। अभी-अभी तुमने स्वीकार किया है कि तुम उन लोगों के समान नहीं हो—तुम में और उन में अन्तर है। ईश्वर को धन्यवाद दो—"

"अल्फ़ी !"

किसी अज्ञात आशंका से उसने सींगों का चिह्न प्रदर्शित किया।

"वे तो पशु हो गये हैं।" डा० पूल कहता गया—"पर तुम नहीं। तुम मनुष्य हो—मनुष्य के भाव, मनुष्य के विकार, मनुष्य का हृदय तुम्हारे पास है।

"नहीं, नहीं, मैं मनुष्य नहीं रही।"

"तुम अस्वीकार नहीं कर सकती।"

"नहीं, यह नहीं हो सकता।" वह चिल्ला उठी—यह ग़लत है।"

दोनों हाथों से मुँह ढाँप वह चिल्लाने लगती है।

"वह मुझे मार डालेगा।" वह सिसकती हुई बोली।

"वह कौन ?"

लूला सिर उठाकर डरती-डरती मोटर की पिछली खिड़की से ऊपर की ओर देखती है।

"वही ! वह सब कुछ जानता है—जो कुछ हम करते, कहते या सोचते हैं।"

"जानता होगा।" डा० पूल बोला—"उसके उदार प्रोटेस्टेंट विचार शैतान के बारे में इधर कुछ दिनों में काफ़ी नरम हो गए थे—"लेकिन हम भी तो ठीक ही करते, कहते और सोचते हैं। वह हमें नुक़सान नहीं पहुँचा सकता।"

"पर ठीक चीज़ क्या है ?" लूला ने उससे पूछा।

दो-एक क्षण बिना उत्तर दिए वह मुस्कराया।

"यहाँ इस समय ठीक चीज़ यही है।" वह बोला और दोनों हाथों में लपेट उसे अपनी ओर खींचने लगा।

"नहीं, अल्फी, नहीं।"

भयातुर हो उसने अपने आपको छुड़ाने का प्रयत्न किया, पर डा० पूल भी उसे कस कर बाँधे हुए था।

"यही ठीक है।" उसने अपने शब्दों की आवृत्ति की—"यह भले ही सदा और सभी जगह ठीक न हो, पर इस समय और इस जगह यही ठीक है—एक दम ठीक है।"

अडिग निश्चय और प्रत्यय की शक्ति को उसने अपने शब्दों में उतारने की कोशिश की। अपने जीवन में इतने विश्वास के साथ उसने न तो कभी कुछ सोचा ही था और न किया ही था।

लूला का विरोध सहसा शाँत हो गया।

"अल्फी, तुम्हें पूर्ण विश्वास है कि यही ठीक है ? तुम्हारा यह दृढ़ निश्चय है ?"

"पूर्ण विश्वास।" उसे अपने नए अनुभव की नवजात-शक्ति पर विश्वास था। स्नेहपूर्वक वह लूला की अलकों को सहलाने लगा।

"देवत्व की विभा, रूप-रस-प्रेम की साकार प्रतिमा।"

वह गुनगुनाने लगता है—"सुनहले स्वप्न की कल्पना... ।"

"बोलते चलो ।" अर्द्ध-निमीलित नयनों से वह उसकी ओर देख रही थी ।

उसकी पलकें मुँद जाती हैं । उसके मुख पर वह सौम्य दिव्यता छा जाती है जो केवल मृत-व्यक्तियों के मुँह पर ही झलकती है ।

डा० पूल गाता है—

प्रेयसि, करें हम तब तक परस्पर बात,
हो जाँय प्राण स्वर में लयमान ।
भावों का मृदुगान न पा सके शब्दों में उच्छ्वास,
दृष्टि में सिमटें भाव, अन्तर में जगे झंकार ।
नीरव में बजें प्राण के तार,
हो जायँ प्राण स्वर में लयमान ।
साँस से मिले साँस,
अधर से अधर,
उर से कम्प,
वक्ष से धड़कन,
हृदय में प्रज्वलित प्रेम की वह्नि,
जगे प्राण में ज्योति,
जीवन में गति,
हो जाँय प्राण तुम में लयमान ।

दो तन, एक प्राण,

नष्ट द्वैत के जाल।

गहरी निस्तब्धता। सहसा लूला आँखें खोलती है। दो क्षण अपलक डा० पूल की ओर देखती है और फिर उसके गले में बाँहें डाल आवेशपूर्वक उसके मुख का चुम्बन करने लगती है। पर जैसे ही डा० पूल ने उसे अपने भुज-पाश में लेना चाहा, वह अपनी सीट के कोने में सिमट जाती है।

डा० पूल उसे पकड़ना चाहता है, पर वह दूर-दूर रहना चाहती है।

"यह ठीक नहीं हो सकता।" वह बोली।

"पर ठीक यही है।"

वह सिर हिलाती है।

"यह वास्तविकता से बहुत दूर है। मुझे कितना हर्ष होता यदि यह सचमुच ठीक होता। वह नहीं चाहता कि हमें खुशी हो।" कुछ देर चुप रह वह फिर कहती है—"तुम यह कैसे कहते हो कि वह हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता ?"

"चूंकि उस से भी अधिक कोई शक्तिशाली इस विश्व में है।"

"अधिक शक्तिशाली! पर उसके विरुद्ध ही तो उसने संघर्ष किया और अन्त में विजयी भी हुआ।"

"इसका कारण यही था कि लोगों का उसे सहयोग

मिला। लेकिन हमेशा यह नहीं होने का और याद रखो, उसकी यह विजय शाश्वत नहीं।"

"क्यों नहीं?"

"चूंकि वह पाप को उसके चरम तक पहुँचाने का लोभ संवरण नहीं कर सकता। और पाप का घड़ा भरने पर निश्चय फूटता है। सृष्टि का विधान फिर अपनी अबाध गति से चलने लगता है।"

"लेकिन यह तो तुम सुदूर भविष्य की बातें कर रहे हो।"

"सारे संसार के लिये भले ही भविष्य की बात हो, पर व्यक्तिगत रूप में हमारे और तुम्हारे लिए नहीं। शैतान ने शेष विश्व के साथ चाहे जो भी किया हो और करे, पर हम और तुम सदा सृष्टि के विधान के साथ चल सकते हैं, उसके विरुद्ध नहीं।"

फिर गम्भीर स्तब्धता।

"यह तो मैं नहीं कहती कि तुम्हारी सारी बातें मेरी समझ में आ रही हैं"—वह आखिर बोली—"और मुझे सब कुछ समझने की जरूरत भी नहीं।" वह खिसकती हुई डा० पूल के निकट आ अपना सिर उसके कंधे पर झुका देती है। "मुझे किसी की परवाह नहीं। वह चाहे भी तो मेरा सर्वनाश नहीं कर सकता। इसका मुझे भय नहीं—इस समय यहाँ मुझे कोई भय नहीं।"

उसके ओठ फड़क उठते हैं। वह अपना मुँह डा० पूल की ओर बढ़ाती है। वह झुक कर उसे चूम लेता है। रात्रि का घना अन्धकार चित्रपट पर उतर कर उन्हें अपनी चादर में छिपा लेता है।

निर्देशक

यह वह अन्धकार है जिसकी गरिमा को 'प्रेम का दान दो' के स्वर ने कलुषित नहीं किया है। संगीत का जो स्वर इस रात्रि में घुल गया है वह स्पष्ट है पर अवर्ण्य; निश्चित् और विधिवत् है पर उन वस्तु-स्थितियों के सम्बन्ध में जिनकी कोई संज्ञा नहीं, तरल है, किंतु रक्त या शुक्र की तरह चिपकने वाला नहीं। वह मोजार्ट के संगीत की तरह दुख के विषाद में कोमल मुस्कान की भाँति है अथवा वेबर के संगीत की तरह मृदुल और सम्पन्न, पर आनन्द के मदिर आह्लाद और विश्व की व्यथा को व्यक्त करने की क्षमता लिये हुए है'। जब अंधकार में प्रेमी का स्वर धीरे से गूँज उठता है—

देवत्व की विभा
रूप-रस-प्रेम की साकार प्रतिमा—

तो इस सत्य का प्रकाश अन्तर में फैलने लगता है कि हृदय की पवित्रता का विश्व में अत्यन्त महान् स्थान है।

दृश्यांतर। डा० पूल की प्रयोगशाला पर प्रकाश। सूर्य

की किरणें बड़ी-बड़ी खिड़कियों से कमरे में आ टेबुल पर पड़े हुए अणुवीक्षण यंत्र के उज्ज्वल स्टील-बैरेल पर गिरकर चकाचौंध पैदा कर रही है। कमरा खाली है।

कमरे की स्तब्धता निकट आती हुई पाँवों की आवाज़ से टूटती है। कमरा खुलता है और मृग-चर्म के जूते धारण किए हुए अन्न-उत्पादन विभाग का डाइरेक्टर बटलर के गुप्त वेश में प्रवेश करता है।

"पूल", उसने आवाज़ दी—"महामना पादरी-प्रमुख तुम्हारे पास......"

वह बीच ही में रुक जाता है। आश्चर्य की रेखाएँ उसके मुँह पर खिंच जाती हैं।

"उसका तो यहाँ पता भी नहीं।" उसने पादरी-प्रमुख से कहा जो उसके पीछे-पीछे कमरे में चले आए थे।

महामना पादरी-प्रमुख ने अपने दोनों परिचारकों पर दृष्टि डाली जो उनकी सेवा में उपस्थित थे।

"देखना, डा० पूल बगीचे में तो काम नहीं कर रहा है।" उन्होंने आदेश दिया।

परिचारक झुक कर अभिवादन करते हैं—"जैसी आज्ञा, महामना।"

पादरी-प्रमुख आसन ग्रहण करते हैं और अनुग्रह कर डाइरेक्टर को भी बैठने का संकेत करते हैं।

"शायद मैंने तुम्हें यह नहीं बताया कि मैं डा० पूल को अपने मत में दीक्षित करने का प्रयत्न कर रहा हूँ।" वे बोले।

"मुझे आशा है, महामना, आप उत्पादन के कार्य में उसके बहुमूल्य सहयोग से हमें वंचित नहीं करेंगे।" डाइरेक्टर ने सशंक होकर पूछा।

पादरी-प्रमुख ने उसे विश्वास दिलाया—"मेरी पूरी कोशिश होगी कि उसके परामर्श का लाभ तुम्हें सदा मिलता रहे। मैं तो यही चाहता हूँ कि चर्च उसकी योग्यता से वंचित न रहे और—"

परिचारक कमरे में प्रवेश कर अभिवादन करते हैं।

"महामना, बगीचे में तो वे नहीं हैं।" उन्होंने बताया।

पादरी-प्रमुख रोष के साथ डाइरेक्टर को देखते हैं जो उनकी कुपित दृष्टि से काँप उठता है।

"क्यों, तुमने तो कहा था कि आज के दिन वह प्रयोग-शाला में ही काम किया करता है।"

"जी हाँ, महामना।"

"तो फिर कहाँ गया वह?"

"यही नहीं समझ में आता, महामना। मुझ से कहे बिना तो वह अपना कार्यक्रम नहीं बदला करता था।"

कुछ देर स्तब्धता।

"मुझे यह अच्छा नहीं लगता।" पादरी-प्रमुख बोले—"यह ठीक नहीं।" परिचारकों की ओर दृष्टि कर वे बोले—"प्रधान कार्यालय जाओ और आध-दर्जन अश्वारोही उसकी तलाश में भेज दो।"

परिचारक अभिवादन कर चले जाते हैं।

डाइरेक्टर के पीले, उतरे हुए मुँह की ओर देख कर पादरी-प्रमुख ने कहा—"यह समझ लो, अगर कुछ भी हुआ तो उत्तरदायित्व तुम पर होगा।"

अत्यन्त रोष के साथ वे उठते हैं और द्वार की ओर बढ़ने लगते हैं।

दृश्यान्तर। विभिन्न दृश्यों पर घूमता हुआ प्रकाश-पुञ्ज।

लूला बगल में चमड़े का थैला लटकाए और डा० पूल पुराने ज़माने के एक फौजी के पैक को पीठ पर लादे सन् गेब्राइल पर्वत-माला के पार्श्व में ऊपर उठती हुई सड़क पर बढ़ते हुए नज़र आ रहे हैं।

पर्वतमाला के एक ऊँचे शिखर पर प्रकाश। ऊँची चोटी से ये दोनों प्रणय-पंथी मोज़ाव बंजर के विस्तृत क्षेत्र पर दृष्टि डाल रहे हैं।

पर्वतमाला के उत्तरी ढाल पर पाइन वृक्षों का जंगल। रात्रि का समय। पेड़ों के झुरमुट में छनती हुई चाँदनी में

डा० पूल और लूला घर के बुने कम्बल को ओढ़े सो रहे हैं। प्रकाश।

एक पहाड़ी दर्रा जिसके तले नदी उमड़ रही है। प्रेमी पानी पीने और अपनी बोतलें भरने यहाँ रुक गए हैं। प्रकाश।

मरु के स्तर से कुछ ऊँची उठी हुई पहाड़ी ज़मीन। यूका और जूनीपर की झाड़ियों और पेड़ों के बीच से होता हुआ भी सुगम मार्ग। डा० पूल और लूला पर प्रकाश जो ढलाव से उतर रहे हैं।

"क्यों, छाले पड़ गये?" उसने स्नेह-मिश्रित स्वर में पूछा।

"कोई ख़ास तकलीफ नही।"

वह साहस के साथ मुस्कराई।

"मैं समझता हूँ, अब हमें थोड़ी देर साँस ले खाना-पीना कर लेना चाहिए।"

"तुम जैसा ठीक समझो, अल्फ़ी।"

वह अपनी जेब से एक पुराना नक्शा निकाल चलते-चलते उसे ध्यान से देखता है।

"लँकास्टर अभी भी तीस मील दूर है।" वह बोला—"आठ घंटों का रास्ता समझो। हमें अभी हिम्मत नहीं हारनी है।"

"कल तक हम लोग कितनी दूर निकल जावेंगे?" लूला ने पूछा।

"मोजाव के उस पार कुछ दूर। और मेरा ख्याल है, उसके बाद टेहाकोपिस के पार बेकर्सफील्ड पहुँचने में कम से कम दो दिन तो लग ही जायेंगे।" वह नक्शे को अपनी जेब में रखता है—"इस सम्बन्ध में मैंने डाइरेक्टर से काफी जानकारी हासिल करली थी। उसका कहना है कि उत्तर के लोग दक्षिणी कैलिफोर्निया से भागे हुए व्यक्तियों के साथ बड़ा मैत्री-पूर्ण व्यवहार करते हैं। सरकार के मांगने पर भी वे उन्हें उनके हवाले नहीं करते।"

"धन्यवाद है शैत्...मेरा तात्पर्य है, ईश्वर को धन्यवाद है।" लूला बोली।

फिर निस्तब्धता। सहसा लूला रुकती है।

"देखना, वह क्या है?"

वह एक ओर संकेत करती है। एक विशाल जोशुआ वृक्ष के नीचे किसी प्राचीन क़ब्र के ऊपर कंकरीट की एक चौकोर शिला युग-युग से आँधी-पानी के थपेड़े खाती हुई टेढ़ी पड़ी है, इर्द-गिर्द घास-फूस भी उगा हुआ है।

"कोई व्यक्ति इसके नीचे चिर समाधि लगाये हुए होगा।" पूल ने कहा।

वे उसके पास पहुँचते हैं। प्रकाश की किरणें शिला पर पड़ती हैं। निम्नलिखित पंक्तियाँ स्पष्ट दीख पड़ती हैं। डा० पूल उन्हें पढ़ता है :—

'विलियम टैलिस'

(१८८२-१६४८)

क्यों चंचल, लुब्ध, अस्थिर प्राण ?
बिखर चुकी आशा की राशि,
कर चुकी विश्व से प्रयाण,
अब क्यों अटके, रुके ये प्राण?

प्रेमिकों पर प्रकाश।

"यह आदमी बहुत ही दुःखी रहा होगा।" लूला बोली।

"शायद इतना दुःखी नहीं जितना तुम समझती हो।" डा० पूल ने कहा। पीठ का भार उतार कर वह क़ब्र के पास बैठ जाता है।

लूला अपने थैले से रोटी, फल, अंडे, और सूखे माँस के टुकड़े निकालती है। डा० पूल शैली के पन्ने पलटने लगता है।

"इस शिला पर जो पंक्तियाँ खुदी हुई हैं उनके बाद सुनो, कवि क्या कहता है :—

'वह ज्योति जिससे जागरित विश्व में आलोक,
वह सौन्दर्य जिससे घूर्णित सृष्टि का चक्र,
वह वरदान, जिसे जन्म का अभिशाप
नहीं कर पाया कुंठित, कातर, म्लान।
वह प्रेम की अरुणिमा जिससे विलसित,

पृथ्वी, जल, वायु, मनुष्य, पशु सब में,
अमरता की पुण्य विभा,
व्यग्र जिसके हेतु प्राण ।
चीर कर नश्वरता का घन अँधकार
छूता आज मुझे दिव्य आलोक का तार ।'

स्तब्धता । पश्चात्, लूला उसे एक उबला हुआ अंडा देती है । वह उसे पत्थर पर थपथपा कर तोड़ता है और उसके ऊपर के सफेद छिलके क़ब्र पर बिखेर देता है ।